Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योतिष व तन्त्र मन्त्र संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार

मन्त्र शक्ति रहस्य	आचार्य भैरव	51-00
मन्त्र विज्ञान	,,	18-00
मन्त्र और टोटके	,,	15-00
मन्त्र साधना सिद्धि	,,	15-00
देवी देवताओ के आवाहन मन्त्र	,,	15-00
मोहनी विद्या सिद्धि	,,	15-00
रुद्राक्ष रहस्य	,,	15-00
रहस्यमयी शक्तियों के चमत्कार	आशुतोष प्रसाद शुक्ल	30-00
सम्मोहन शास्त्र (हिप्नोटिज्म)	,,	15-00
हस्तरेखा विज्ञान	,,	20-00
ग्रह और आपका भविष्य	,,	15-00
जन्म पत्री स्वयं बनायें	,,	15-00
अंक रहस्य	,,	20-00
ज्योतिष सीखें	पं० रामस्वरूप	12-00
अपना कद लम्बा करें	राकेश कुमार	10-00
योग द्वारा चिकित्सा	राधा कृष्ण शास्त्री	12-00

हमारे द्वारा प्रकाशित अच्छी व सस्ती पुस्तकें वी.पी. पैकेट द्वारा मंगाने के लिए कृपया पाँच रुपये अग्रिम अवश्य भेजें।

ज्योतिष सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए सूची-पत्र अवश्य मंगायें मूल्य दो रुपये।

वी०पी० द्वारा मांगने के लिए याद रखें।

सहगल पब्लिकेशन्स

3148 दस्सान स्ट्रीट, हौजकाजी दिल्ली-6

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिप्नोटिज्म

सम्मोहन शास्त्र

लेखक :
आशुतोष प्रसाद शुक्ल

प्रकाशक :
सहगल पब्लिकेशंस
3148 दसान स्ट्रीट हौजकाजी दिल्ली-6

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने चरमोत्कर्ष पर थी। आधुनिक सम्मोहन विज्ञान अभी तक अपने प्राचीन स्तर को प्राप्त नहीं कर पाया है या यों कहें कि सम्मोहन विज्ञान ऐसे चरमोत्कर्ष में ले जाने वाला व्यक्ति सामने नहीं आया है।

जिस तरह आधुनिक युग में विद्युत शक्ति को इकाइयों में— विभक्त करने की तकनीक अर्जित कर ली गई है—इसी प्रकार प्राचीन भारत में उपयोग की समस्या एवं स्थिति के अनुरूप वांछित स्तर पर सम्मोहन विद्या का प्रयोग किया जा सकता था।

आधुनिक युग में—सम्मोहन विज्ञान की प्रयोग—धर्मी, शक्ति, क्षेत्र, समस्या, आवश्यकता इत्यादि के विषय में जितनी असीम है प्राचीन सम्मोहन विद्या की शक्ति इससे भी अधिक विराट तथा असीम थी।

सम्मोहन के क्षेत्र में – पूर्व तथा पश्चिम में नित नये प्रयोग हो रहे हैं तथा सम्भावनाओं के नये-नये आयाम स्थापित हो रहे हैं। यह पुस्तक सम्मोहन विद्या के सभी क्षेत्रों को व्याख्यांचित करती हुई सम्पूर्ण रूप से विषय की वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत करती है।

कृति को सटीक और समर्थ बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। यह पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि यह पुस्तक सम्मोहन विद्या का सम्यक् ज्ञान कराने में पूर्ण समर्थ है।

आधुनिक सम्मोहन विज्ञान पूर्व की अपेक्षा पश्चिम में अधिक उन्नत अवस्था में है यह हमारे लिए खेत की बात है—क्योंकि हम भारतीयो की यह प्राचीन एवं पुरातन विद्या है।

अंत में उन लेखकों मनोवैज्ञानिकों का आधार व्यक्त करता हूं जिनके विचारों निर्णयों में पुस्तक को सुगम सफल एवं उपयोगी बनाने में योगदान दिया।

भवदीय :

आशुतोष प्रसाद शुक्ल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषयानुक्रमाणिका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योतिष एवं तांत्रिक पुस्तकें

प्राचीन यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्धियां	101.00	देवो देवताओं के आह्वान मंत्र (2 खण्ड) प्रत्येक	18.00
मंत्र महार्णव	251.00	तांत्रिक सिद्धियां	18.00
मंत्र शक्ति रहस्य	51.00	हस्त रेखा देखना सीखिये	10.00
मंत्र-तंत्र टोटटे	15.00	अंक चमत्कार	10.00
रत्न प्रदीप	50.00	जन्म पत्री बनाना सीखिये	10.00
रत्न रहस्य	81.00	नष्ट जातकम	30.00
रुद्राक्ष रहस्य	20.00	दैवज्ञ वल्लभा	30.00
हस्त रेखायें	50.00	भुवन दीपक	25.00
महामृत्युंग्य साधना सिद्धि	50.00	दशा फल रहस्य	25.00
हनुमान उपासना व सिद्धि	20.00	फलित सूत्र	25.00
दुर्गा उपासना सिद्धि	20.00	वर्ष फल विचार	20.00
शिव उपासना व सिद्धि	20.00	भाव दीपिका	20.00
कुण्डलिनी सिद्धि	20.00	गोचर विचार	20.90
वटुक भैरव उपासना	20.00	मूक प्रश्न विचार	18.00
भृगु प्रश्नावली व मार्ग दर्शक	20.00	प्रश्न मार्ग	18.00
भृगु संहिता	70.00	मनु स्मृति	51.00
वृहत स्रोत रत्नाकर	30.00	मोहनी विद्या	15.00
मान सागरी	50.00	रहस्यमयी शक्तियों के चमत्कार	30.00
तांत्रिक नीलकण्ठी	30.00	ज्योतिष सीखियें	10.00

यह पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में भी उपलब्ध हैं।

यह पुस्तकें घर बैठे वी०पी०पी० द्वारा मंगायें। कृपया आर्डर के साथ 10 रु० पेशगी अवश्य भेजें।

मंगाने का पता :

सहगल पब्लिकेशन्स

3149 दसान स्ट्रीट हौजकाजी दिल्ली-6

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ | सम्मोहन का इतिहास

इस दृश्य अदृष्य ब्रह्मांड के निर्माण सूत्रों एवं तत्वों में सिद्धान्त रूप में, प्रेरणा शक्ति रूप में सम्मोहन की अविस्मरणीय भूमिका को नकारना एक असंभव स्थिति है।

सम्मोहन का अस्तित्व चेतन जगत से भी पूर्व का है। सम्मोहन का सृष्टि में अभ्युदय मनुष्य ही नहीं वलिक अन्य आदिकालीन जीवधारियों से पूर्व का है। सम्मोहन जड़ और चेतन दोनों को ही प्रभावित करने वाली स्थिति हैं। जब इस संसार की निर्माण प्रक्रिया पर ही सम्मोहन का प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा हैं तो यह कथन अतिश्योक्ति नहीं हैं कि सम्मोहन का जन्म विश्व अस्तित्व ग्रहण पूर्व की घटना है। सम्मोहन शक्ति है, सम्मोहन प्रेरणा हैं, सम्मोहन कार्य कारण उत्प्रेरणा है। वास्तव में सम्मोहन ईश्वरीय शक्ति का एक तत्व है, सृष्टि का निर्माण, व्यवस्था, गतिशीलता, उत्थान, पतन कार्य कारण तथा प्रयास और परिणाम निर्णय में व्याप्त रहने वाली शक्ति है। केवल जड़ चेतन ही नहीं दृश्य अदृश्य गुप्त, प्रकट, साकार एवं निराकार तक सम्मोहन की पूर्ण प्रभाव परिधि में है।

पृथ्वी के जड़ स्वरूप में शक्तिरूप में विद्यमान सम्मोहन शक्ति को अन्वेषित कर घोषित करने वाले और वैज्ञानिक मान्यता दिलाने वाले महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइस्टीन ने सम्मोहन शक्ति का साक्षात्कार एक छोटी सी घटना में ही प्राप्त कर लिया था।

आइंस्टीन के इस 'सम्मोहन साक्षात्कार' को गुरुत्वाकर्षण के सिद्धाँत और शक्ति की संज्ञा दी गई हैं। वृक्ष की डाल में पका फल जब अपनी विकर्षण शक्ति खो देता हैं तो वह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से प्रभा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वित होकर नीचे गिर पड़ता है। पृथ्वी की यह तथाकथित गुरुत्वाकर्षण शक्ति वास्तव में सम्मोहन शक्ति का ही एक रूप हैं।

वर्षा ऋतु में काले-काले घनघोर बादलों की चादरें हरियाली से लदे फदे घने जंगलों पर झुककर बरसने लगती हैं, भूगोल कहता हैं "घने जंगलों में वर्षा के बादलों को आकर्षित करने की शक्ति होती है, पानी से मेरे बादल अपनी आसमानी ऊँचाई से नीचे खिसककर जंगलों पर बरसने लगते हैं। जंगलों की वर्षा के बादलों को आकर्षित करने की यह शक्ति 'सम्मोहन शक्ति' का ही एक रूप है।

आकर्षण और समर्पण की भावना एवं मनोवृत्ति सम्मोहन शक्ति के ही तत्व हैं। फुलों से लदे बेले के पौधे के पास कोई बैठकर बाँसुरी की मादक स्वर लहरी पर बेले के फूल का पौधा झूमने लगेगा' यह वाद्य सम्मोहन है। वीन की स्वर लहरी से सम्मोहित होकर भयानक विषधर जंगल से खिचा चला आता है। हिरण का वीणा प्रेम प्रसिद्ध है। वीणा की मादक स्वर लहरी पर हिरण मंत्रमुग्ध हो जाता है।

दूर अँधेरे में खोया पतंगा दीपशिखा पर आकर्षित होकर उससे लिपट जाता है। सागर की उत्ताल-तरंगें ज्वार के रूप में चंद्राकर्षण के प्रभाव से उफनती उमड़ती हुई चंद्रमा की ओर लपकती हैं।

साधारण लोहा अपने ही समान गुणधर्मी लोहे को आकर्षित नहीं करता है पर वही लोहा चुम्बकत्व की शक्ति से सम्पन्न होने पर अन्य लोहे को अपने पास खींचकर चिपका लेता है।

पशु-पक्षी, जलचर, थलचर एवं नभचर रूप, रस, गंध, नाद एवं स्वर आकर्षण से प्रभावित हैं। आकर्षण की गतिशीलता जितनी प्रभावशाली एवं तीव्र होगी सम्मोहन उतना ही प्रभावशाली होगा। कभी-कभी तो सम्मोहन की प्रेरक स्थिति अदृश्य होते हुए भी अपने प्रभाव की तीव्रता के कारण लक्ष्य सिद्धि में सफल ओर सक्षम सिद्ध होती है।

सम्मोहन का भारतीय इतिहास—भारत के धर्म, ग्रन्थों-वेदों,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में हिन्दुओं की अति उन्नत सम्मोहन विद्या के उदाहरण बहुतायत में हैं। आधुनिक सम्मोहन विज्ञान पूर्व की अपेक्षा पश्चिम में अति उन्नत स्वरूप में है लेकिन प्राचीन भारत सम्मोहन की जिन ऊँचाइयों को छू चुका है आधुनिक सम्मोहन विज्ञान अभी अपनी उन पूर्व उपलब्धियों के पुनरावृत्ति स्तर को प्राप्त नहीं कर सका है।

आज सम्मोहन का प्रयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक हो रहा है। इसकी उपलब्धियाँ भी आश्चर्यजनक रूप में प्राप्त हो रही हैं। नई-नई संभावनाओं के द्वार रहस्य की परतों की तरह खुलते जा रहे है।

शक्ति के रूप में सम्मोहन एक विराट, अदृश्य, निराकार शक्ति है। विद्या के रूप में यह एक ज्ञान गंगा है और विज्ञान के रूप में यह एक प्रयोगधर्मी सत्य है।

यहाँ हम सम्मोहन विद्या की प्राचीन भारत में उपलब्धियों सम्बन्धी चर्चा करेंगे। दीर्घकालीन ऐतिहासिक तर्क-वितर्क के बाद अब यह ऐतिहासिक मतैक्य स्थापित हो चुका है कि प्राचीन भारत सभ्यता एवं संस्कृति, विज्ञान एवं धर्म के क्षेत्र में विश्व में शीर्षस्थ स्थिति पर था, तो आइये देखें कि प्राचीन भारत में सम्मोहन विद्या अपनी उपलब्धि की किन ऊँचाइयों पर थी।

प्राचीन भारत में हिपनोटिज्म अर्थात् सम्मोहन की शक्ति को मंत्रों यन्त्रों और अस्त्रों में समेट लिया गया था। ऐसा आधुनिक सम्मोहन विद्या का प्रयोग अभी तक उस रूप में नही हो पाया है। जिस प्रकार वर्तमान काल में विद्युत को शक्ति की इकाइयों में विभाजित कर इच्छानुसार लाभान्वित होने की स्थिति अर्जित कर ली गई हैं। उसी प्रकार प्राचीन भारत में उपयोग की समस्या और स्थिति के अनुरूप सम्मोहन विद्या का प्रयोग किया जाता था। आधुनिक संमोहन विज्ञान की प्रयोगधर्मी शक्ति क्षेत्र, समस्या, आवश्यकता इत्यादि के विषय में जितनी असीम है प्राचीन सम्मोहन विज्ञान की प्रयोगधर्मी शक्ति इससे भी कहीं अधिक थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"सम्मोहन विद्या मंत्रों के रूप में"

वशीकरण—तंत्र शास्त्र सम्सत वशीकरम मंत्र पूर्णतया सम्मोहन विद्या पर आधारित है यह वाक्सिद्धि किसी को मोहित करने, सम्मोहित करने, मन चाहे कार्य कराने के उपयोग में लाया जाता था। वशीकरण मंत्र भी अनेकों रूपों में भेदों में बहुमुखी कार्यसिद्धि की संभावनाओं से सम्पन्न था।

मोहन मंत्र—सम्मोहन विद्या पर आधारित मोहन मंत्र आसक्ति उत्पन्न करने, प्रेमभाव जाग्रत करने उद्दीपित करने के काम आता था। यदि कोई किसी कारणवश किसी से विमुख हो गया हो तो उसे आकर्षित करने के लिए सम्मोहन मंत्र का प्रयोग किया जाता था। अपने शत्रुओं को वश में करने के लिए भी मोहन मंत्र का प्रयोग एक कारगर स्थिति था।

उच्चाटन मंत्र—सम्मोहन की विलोम शक्ति (सम्मोहन के विलोम प्रयोग द्वारा अर्जित)पर आधारित उच्चाटन मंत्र का प्रयोग संमोहन की मोह निद्रा से जगाने के लिए, सम्मोहन के प्रभाव से मुक्त करने के लिए तथा मोहन मंत्र के प्रभाव को नष्ट करने के लिए किया जाता था।। उच्चाटन मंत्र का, सम्मोहन विद्या पर आधारित सर्वाधिक शक्तिशाली मंत्र, के प्रभाव को नष्ट करने के लिए भी किया जाता था।

सम्मोहन विद्या पर आधारित उपरोक्त मंत्रों को प्राचीन काल में यंत्रबद्ध कर लिए जाने का भी विवरण है। जहाँ विधि-विधान एवं अनुष्ठानपूर्वक मंत्र सिद्ध करना संभव नहीं होता था वहीं इन यंत्रों के तत्कालिक प्रभाव मंत्रों के समान ही होते थे।

सम्मोहन का युद्धास्त्र के रूप में प्रयोग—आधुनिक सम्मोहन विद्या अभी तक युद्धास्त्र के रूप में प्रयोग किए जाने की स्थिति में नहीं आ पायी है। प्राचीन काल में युद्धों में सम्मोहन विद्या एक असाधारण शक्तिशाली अजेय युद्धास्त्र के रूप में प्रयोग की जाती थी। राम-रावण युद्ध में अनेकों बार सम्मोहन विद्या सफल युद्धास्त्र के रूप में प्रयोग की गई थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असुरों का वैज्ञानिक ज्ञान तथा मंत्रों का ज्ञान मनुष्यों से काफी बढ़ा चढ़ा था।

रावण और उसका पुत्र (मेघनाद) सम्मोहन विज्ञा को अनेकों रूपों एवं अनेक विधियों में युद्ध के लिए प्रयोग करने में विशेष दक्ष थे। सम्मोहन विद्या से मंत्रसिक्त अस्त्र "सम्मोहनास्त्र" कहा जाता था इसका धनुष पर शर (बाण) की तरह प्रयोग किया जाता था। इसकी गणना महाशस्त्रों जैसे—पशुपातास्त्र, ब्रह्मास्त्र, वरुणास्त्र नारायणास्त्र के स्तर पर की जाती थी। "सम्मोहनास्त्र" सम्मोहन विद्या की चरम शक्ति से अभिमंत्रित, मंडित कभी निष्फल न होने वाला शस्त्र था।

राम-रावण युद्ध में सम्मोहन विद्या की शक्ति से अनेकों राम और लक्ष्मण उत्पन्न कर रावण ने वानर सेना को क़िकर्त्तव्य-विमूढ़ कर दिया था। सोये हुए "राम-लक्ष्मण" को सम्मोहन विद्या की शक्ति से ही अपहृत कर मय दानव पाताल-लोक ले गया था।

"महानिद्रा" (मृत्यु के समान लक्षित होने वाली निद्रा) द्वारा शत्रु पक्ष को युद्ध स्थल में कभी न टूटने वाली नींद सुला देना सम्मोहन का ही चमत्कार है।

रामायण काल के ससान ही महाभारत काल में भी सम्मोहन का युद्धास्त्र के रूप में प्रयोग किया गया था। वैसे तो 'राम-रावण' युद्ध और 'महाभारत' अपने-अपने युग के विश्व युद्ध थे। इन दोनों ही युद्धों में सम्मोहन विद्या ने एक युद्धास्त्र के रूप में बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा निर्णायक भूमिका निभाई है।

महाभारत काल में भीम की असुर पत्नी गुरा से उत्पन्न पुत्र 'बर्बरीक' ने सर्वप्रथम सर्वाधिक शक्ति रूप में (सम्मोहन का) शक्तिशाली प्रदर्शन किया था। उसने महाभारत युद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व ही अत्यन्त अजेय शक्तिशाली "सम्मोहनास्त्र" चलाया था यह "सम्मोहनास्त्र" अब तक प्रयुक्त सम्मोहनास्त्रों की परम्परा में सर्वाधिक शक्तिशाली था। एक ही सम्मोहनास्त्र का प्रयोग कर 'बर्बरीक' ने अठारह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षौहिणी कौरव सेना सहित सातों महारथियों को मोहनिद्रा लीन कर दिया था।

'बर्बरीक' के इस असाधारण शक्ति-प्रदर्शन को देखकर भीम गद्‌गद् हो उठे। सम्पूर्ण पाण्डव दल चकित रह गया। इस 'सम्मोहनास्त्र' को प्रयोग करने के पूर्व बर्बरीक ने कहा था कि—वह अकेले हीं सम्पूर्ण कौरव पक्ष को पराजित कर सकता है और महाभारत युद्ध जीत लेना कुछ मिनटों की समस्या है।

बर्बरीक ने जैसा कहा था वैसा ही करके दिखा दिया। 'सम्मोहनास्त्र' का प्रयोग करने के बाद 'बबेरीक ने कहा—अब कौरव पक्ष सभी योद्धा महा-निद्रा (मृत्यु निद्रा) में लीन हो गए। ये शक्ति, अनुभव और चैतना से रहित माँस पिण्ड मात्र हैं इन्हें अब बन्दी बनाना या मार देना युद्ध के नियमों के विपरीत भी नहीं हैं और ऐसा करने की आवश्यकता भी नहीं है।

प्रकृति प्रेरणावश इनके शरीर काल प्रभावानुसार स्वयं क्षीण एवं जर्जर होते हुए नष्ट हो जायेंगे।

बर्बरीक का यह अद्‌भुत पराक्रम श्रीकृष्ण से सहन नहीं हुआ उन्होंने तत्काल सुदर्शन चक्र द्वारा बर्बरीक का सिर काटकर उसका प्राणान्त कर दिया।

इस प्रकार 'बर्बरीक' के मरते ही कौरव पक्ष पर सम्मोहन विद्या द्वारा अर्जित प्रभाव भी नष्ट हो गया।

श्रीकृष्ण ने ऐसा क्यों किया यह एक अलग प्रश्न और इतिहास है परन्तु यदि श्रीकृष्ण 'बर्बरीक' न मारते यो महाभारत युद्ध का इतिहास कुछ ओर ही होता।

उपरोक्त उदाहरण सम्मोहन विद्या की क्षमता और उपयोगिता के पुख्ता-महत्व की असाधारण मिसाल है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन की लालसा—हमने पूर्ववर्त्ती उदाहरणों में सम्मोहन के जड़ चेतन प्रभाव, पशु-पक्षियों पर प्रभाव तथा इसमें व्याप्त विराट-शक्ति स्त्रोत का उल्लेख किया है।

यहाँ सम्मोहन विद्या के प्रति मनुष्ट की रुचि और लालसा के विषय में चर्चा की जायेगी। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मनुष्य की बौद्धिक क्षमताएं भी असीम हैं। इस सृष्टि की सर्वाधिक आश्चर्यजनक वस्तु 'मानव-मस्तिष्क' है। स्वयं सम्मोहित होना और किसी को सम्मोहित करना मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है। स्वयं सम्मोहित होना और दूसरे सम्मोहित करने की इच्छा रखना मानव मात्र के व्यक्तित्व की अनिवार्य स्थिति है।

मनुष्य सम्मोहन होने से न तो बचना चाहता है और न किसी को सम्मोहित करने की इच्छा त्यागना चाहता है। दोनों ही मनुष्य के लिये अनिवार्य स्थितियाँ हैं इनसे मुक्त रूप में मानव जीवन की कल्पना ही असंभव है पदार्थों, रुचियों एवं व्यक्तियों द्वारा स्वयं सम्मोहित होने और दूसरों को सम्मोहित करने के अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अनिवार्य रूप से कभी न कभी आते ही है।

वाणी, रूप रस-गंध आर्कषण- लालसा कामना इत्यादि मान वीय सम्मोहन को प्रभावित करने वाले प्रभाव शाली सुचालक हैं, किसी भी व्यक्ति, पदार्थ अथवा स्थिति से सम्मोहित होकर उनके अनुकूल और उपयोगी आचरण करना मानव स्वभाव की अनिवार्य स्थिति है।

इसी प्रकार दूसरों को सम्मोहित कर उनसे मनोनुकूल आचरण कराना मनवाँछित मनोरथ सिद्ध करना मनृष्य मात्र की अपरिवर्त्तनीय तथा अपरिहार्य मनोदशा है। एक व्यक्ति की सम्मोहन सीमा क्या और कितनी हो सकती है इस सम्बन्ध में किसी मापदण्ड का निर्धारण करना असम्भव स्थिति है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन शक्ति की प्रभाव सीमा असीम है। दक्षता, अभ्यास, एकाग्रता एवं क्षमता वृद्धि की लालसा सम्मोहक (Hyphotist) की सम्मोहन शक्ति में वृद्धि के नये अध्याय जोड़ती चली जाती है। सम्मोहन योग की ही प्रारंभिक अवस्था है। वैसे हठयोग ओर संमोहन में बड़ी ही साम्यता है। ऐसे समाचार, समाचार पत्रों में सुखियों से प्रकाशित होते रहे हैं कि (अमुक सन्यासी से दिखने वाले व्यक्ति ने प्लेट फार्म पर अपनी दृष्टि से ट्रेन का चलना रोक दिया। दाँत में धागा बांध कर दस मन वजन उठा लिया धरती में गड्ढा खोद कर कुछ दिनों या कुछ घंटों की समाधि लगाई और फिर बाहर निकल आए) साराँश यह कि इस प्रकार का शक्ति प्रदर्शन जिसका वैज्ञानिक विश्लेषण परीक्षण संभव न हो तथा मानवीय शक्ति भी उन्हें कर दिखोने में असमर्थ हो। वास्तव में इस प्रकार के करिश्मे भरे सच्चे समाचार हठयोगियों या असाधारण संमोहन क्षमता से सम्पन्न संमोहकों के प्रदर्शन होते हैं।

सम्मोहन की विराट क्षमता शक्ति और स्वयं को असाधारण रूप में मानव जाति के संमुख प्रस्तुत कर पाने की भावना भी संमोहन विद्या को सीखने के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करती है।

प्रसिद्ध जादूगर स्वर्गीय पी.सी. सरकार का संमोहन विद्या पर असाधारण अधिकार था। देश विदेश में अनेकों दक्ष संमोहकों "हिपनोटिस्टो" द्वारा यह विद्या प्रसारित प्रचारित की जा रही है।

प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर पर एक हठ योगी की जो क्षमता होती है उसमें और एक दक्ष संमोहन कर्त्ता में पर्याप्त साम्यता होती है। लेकिन एक परिपक्व हठयोगी में जो शक्ति का चरम उत्कर्ष होगा वह संमोहन विद्या की शक्तियों से उपर की स्थिति होगी। हठयोग और हिपनोटिज्म शक्ति प्रदर्शन में साम्यता होने के बावजूद बिलकुल अलग-अलग विधाएं हैं तथा हिपनोटिज्म की अपेक्षा हठयोग की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपलब्धियाँ कहीं अधिक हैं। सम्मोहन विद्या में निपुणता अर्जित कर दूसरों को वशीभूत कर स्वैच्छिक कार्य कराने तथा मानव कल्याण के कार्य कर चमत्कारी व्यक्ति बनने की लालसा इस विद्या के ज्ञानार्जन को प्रोत्साहित करती है।

सम्मोहन विद्या क्या है--आधुनिक सम्मोहन विज्ञान अधिक से अधिक दो शताब्दी के लगभग पुराना है। इस विषय पर काफी कुछ लिखा भी गया है लेकिन वास्तविक सम्मोहन के क्षेत्र में अनेकों ऐसी उपलब्धियाँ अर्जित की गयीं जिन्हें प्रचलित होने प्रसारित होने से रोका गया। वास्तव में यह स्थिति विषय के जानकारों द्वारा विषय के प्रति विश्वासघात जैसी है। यही कारण है कि सम्मोहन के क्षेत्र में अर्जित अनेकों रहस्यमय, आश्चर्यजनक जानकारियाँ सम्मोहन विद्या के विकास शैथिल्य की स्थिति खड़ी कर इस विद्या का भारी अहित किया। ऐसा क्यों हुआ इस प्रश्न का सन्दर्भ तो यही है कि संमोहन के क्षेत्र में जो भी उच्चस्तरीय शोध, अन्वेषण तथा प्रयोग किये गये वे सबके सब चिकित्सा विज्ञान तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र के धुरन्धरो द्वारा पूर्ण गोपनीय स्थिति में किये गये और परिणाम प्राप्ति के बाद भी पूर्ण गोपनीय रक्खे गये।

विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में शोधों, प्रयोगों, अन्वेषणों द्वारा अर्जित स्थिति को मुख्य से जुड़ने से कभी नहीं रोका गया एक की साधना द्वारा अर्जित उपलब्धि हमेशा दूसरे की साधना और शोध के लिए सन्दर्भ और मार्ग दर्शन के काम आयी इससे विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान उत्तरोत्तर उन्नति करता गया। पर हिपनोटिज्म के क्षेत्र की स्थिति ऐसी नहीं है इस क्षेत्र के उच्च स्तरीय प्रयोग कर्त्ता इस क्षेत्र के व्यक्ति थे ही नहीं वे--प्रखर वैज्ञानिक; चिकित्सक या मनो-वैज्ञानिक थे। उन्होंने संमोहन विद्या की उपलब्ध ज्ञानधारा से आधार का काम लिया पर आधार से अर्जित स्थिति को रहस्य के अंधेरे में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्खा इस प्रकार संमोहन विज्ञान के उपलब्ध ज्ञान की गतिशीलता अवरुद्ध हुई और यथावत् स्थिति का जड़ संकट उपस्थित हो गया। इतना ही नहीं दीर्घकाल तक अवरुद्ध स्थिति ने संमोहन विद्या के स्वरुप और महत्व को भी भारी आघात पहुंचाया। इसे विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र के समान जनमानस द्वारा रुचि और आदर प्राप्त नहीं हो पाया। लोगों में इस प्रकार की स्थिति के परिणाम स्वरूप जो भ्रम पैदा हुआ उसे दूर करने की कोई चेष्टा नहीं की गयी। सर्वसाधारण में धीरे-धीरे यह धारणा बनती गयी कि संमोहन विद्या अवैज्ञानिक, असम्बद्ध, अस्पष्ट चीज है। लोग सोचने लगे संमोहन विद्या का विज्ञान, तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं है यह ज्ञान का कोई क्षेत्र ही नहीं है। यह मति भ्रम, दिवा स्वप्न, छल, चालाकी तथा नजरबन्दी जैसी भूल-भुल्लैय्या है। इसके जानकार जादूगर, ठग और मदारी हैं वे मनचाहे ढंग से इसे तोड़ मरोड़ लेते हैं। सम्मोहन विद्या के चमत्कार किसी ज्ञान अथवा साधना के चमत्कार नहीं हैं वरन् ये नजरबन्दी और जादूगरी के करिश्मे हैं। ये किसी प्रशिक्षण, प्रयोग अन्वेषण और साधना का परिणाम कदापि नहीं हैं। अशिक्षित, अर्धशिक्षित तथा अंधविश्वासों में आस्था रखने वाले सम्मोहन के चमत्कारों को दैवी करिश्मा, भूत प्रेतों की करामात और काला जादू कहकर अपने मन को संतुष्ट कर लेते हैं। शिक्षित और आधुनिक कहे जाने वाले लोग सम्मोहन विद्या के चमत्कारों को मन का भ्रम, हाथ की सफाई, ढोंग और चालाकी भरी बाजीगरी कहते नहीं अघाते हैं। सम्मोहन विद्या के विषय में इस प्रकार की मिथ्या विचारधारा इसमें किये गये प्रयोगों की अनावश्यक गोपनीयता तथा अप्रचार से उत्पन्न भ्रम का परिणाम है। सम्मोहन विद्या के प्रति अविश्वास का, भ्रम का वातावरण भारत सहित अनेक देशों में है। अभी तक सम्मोहन विद्या अपना उचित महत्व, उपयोग और लोकप्रियता का अध्याय नहीं अपना पायी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनमत की विचारधारा का स्तर तो इतना बिगड़ चुका है कि लोग इसके विषय में कुछ सुनने समझने तक को तैयार नहीं हैं। कुछ लोग बेवाक होकर कह तक देते हैं--अरे बेकार की मगजमारी है।

वास्तव में सम्मोहन पूर्ण वैज्ञानिक प्रयोग धर्मी आस्थाओं पर आधारित खरा और विशुद्ध विज्ञान है। इसमें संदेह, भ्रम, अंधविश्वास अविश्वास, ढोंग जादूगरी जैसी कोई चीज नहीं है। इसका भूत प्रेतों या काले जादू से कोई दूर दराज रिश्ता नहीं है।

सम्मोहन के सम्बन्ध में भ्रम और अविश्वास फैलाने में सहयोग कुछ विकसित और विकासशील देशों के कतिपय धार्मिक सम्प्रदायों और उनके धर्म गुरुओं ने किया। ये धार्मिक सम्प्रदाय और इनके धर्म गुरु अपने धर्मों की चिर-स्थापित अपरिवर्तनीय आस्था विश्वासों के कट्टर अनुयायी होने के कारण सम्मोहन विद्या के चमत्कारों उपलब्धियों को देखकर भ्रम, भय, ईर्ष्या और अविश्वास के शिकार होकर सम्मोहन विद्या को शैतान का जलाल करिश्मा, जिन्नातों और नापाक रूहों की दिल वस्तगी या भूतों की कारगुजारी बताने लगे। सम्मोहन विद्या में रुचि लेकर इसके प्रति आकर्षित होने वालों को पागल हो जाने का डर दिखाकर, भारी संकट में फँसने बर्बाद होने का भय बता कर रोकने लगे। कहीं कहीं तो सम्मोहन विद्या में रुचि लेना धर्म के प्रति अपराध और नास्तिक बनने का कारण बताया जाने लगा।

इस प्रकार के वातावरण ने सम्मोहन शास्त्र को आगे बढ़ने से रोकना और अलोकप्रियता के भँवर में फँसाना प्रारंभ कर दिया। विज्ञान, चिकित्सा एवं शिक्षा इत्यादि मानव के मानस मंथन और बौद्धिक साधना का परिणाम हैं यदि मानव को ही इनसे विमुख कर दिया जाय तो फिर इनका विकास और संवर्धन कैसे होगा।

सम्मोहन शास्त्र भी शुद्ध विज्ञान और मानसिक परिलब्धियों का संसार है यदि इसे भ्रम और अविश्वास से बड़े पैमाने पर जोड़ा गया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो परिणाम भी हानिकर और दुखदायी हुए। इसने इसके लोक कल्याण की क्षमता को दुर्बल बनाया और इसे आगे बढ़ने से रोका। जिस प्रकार की भ्रमपूर्ण तथा बहिष्कार वर्धक परिस्थितियों का सामना सम्मोहन विज्ञान को करना पड़ा उस-प्रकार की स्थिति में इसका अंत निश्चित था यदि यह भ्रम अस,त्य अंधविश्वास और जादूटोने पर आधारित होता पर चूंकि यह शुद्ध सत्य और वैज्ञानिक स्वरूप में था इसलिए यह जीवित रहा। हानि चाहे इसे जितनी हुई पर यह नष्ट नहीं हो सका। शाश्वत सत्य सदा अमर होता है असत्य उसे कुछ समय के लिये धुंधला अवश्य कर सकता है पर नष्ट नहीं कर सकता है। अपने सत्य स्वरूप और वैज्ञानिक आधार के कारण अनेकों आघातों एवं विरोधों को झेलकर सम्मोहन विज्ञान आज भी जीवित है। कुछ शक्तिशाली सम्मोहन कर्त्ताओं ने सम्मोहन में छिपी शक्तियों का सार्वजनिक प्रदर्शन कर इस विषय पर भ्रम निवारक का व्याख्यान देकर जनमानस को संतुष्ट कहना चाहा। उन्होंने अपने माध्यम को सम्मोहित कर कुछ रहस्यमय, अज्ञात तथा अस्पष्ट प्रश्नों के उत्तर दिलवाए कुछ पेचीदा समस्याओं के निराकरण प्रस्तुत किए, तो उनके कट्टर विरोधियो ने इस सम्वन्ध में यह प्रचारित किया कि यह सब मिली भगत का परिणाम है। प्रश्न कर्त्ता ने अपने माध्यम को सब कुछ पहले से संकेतों को आधार बनाकर सिखा पढ़ा रक्खा है उससे वही पूछा जा रहा है जो उसे पहले ही बता रक्खा गया है। रहा सवाल सम्मोहित होने का, तो यह तो कोई स्थिति ही नहीं है न तो कोई सम्मोहित किया गया है और न किया जा सकता है यह सब तो दिखाने का नाटक है। विरोधियों द्वारा ऐसा भ्रम फैलाने पर उन्हें इस विषय को जाँचने के लिए भी ललकारा गया तो वे यह बहाना बनाकर इससे विमुख हो गये कि क्या रक्खा है इस ऊल जलूल में। (सम्मोहन विद्या के प्रति इस प्रकार की विचारधारा आज भी विद्यमान है इसे पूर्णतया समाप्त नहीं किया जा सका है)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वास्तव में कुछ लोग अज्ञानता वश किसी विषय, ज्ञान तथा स्थिति का विरोध करते हैं कुछ किसी विषय पर अपना बड़प्पन लादने के लिये ऐसा करते हैं किसी भी सत्य के स्थापन के लिये वास्तव में दोनों ही प्रकार के लोग दुखदायी होने के साथ-साथ मानवता के भी शत्रु हैं।

सम्मोहन विद्या के अस्तित्व के सम्बन्ध में किसी भी भ्रम या आविश्वास में पड़ने की जरूरत नहीं है। यदि अपनी इस विषय से अरूचि तथा असहमति हो तो अनाधिकार भ्रम फैलाने की अपेक्षा मौन रहना श्रेयस्कर है। यदि रूचि है तो तर्क, अभ्यास तथा वैज्ञानिकता का सहारा लेना चाहिये।

हिपोनोटिज्म एक व्यवस्थित विद्या है विज्ञान है। इसमें भूत-प्रेतों का करिश्मा नहीं है, इसमें काला जादू, हाथ की सफाई नहीं है, इसमें आसुरी माया, इन्द्रजाल, ठगी या सिद्धि का कोई प्रभाव प्रताप नहीं है।

वास्तव में मनुष्य का मस्तिष्क इस संसार की सर्वाधिक आश्चर्य जनक वस्तु है यह करिश्माओं, कल्पनाओं का खजाना है। मस्तिष्क की शक्ति असीम है यह असँभव को संभव बनाने में समर्थ है। इस शक्ति-शाली मानव मस्तिष्क का निदेशक मानव मन है वास्तव में मन और मस्तिष्क अलग-अलग होते हुए भी एक दूसरे के सहयोगी ओर पूरक हैं।

मानव मस्तिष्क भी दो भागों में विभाजित है एक चेतन मस्तिष्क (Concious Brain) दूसरा अचेतन मस्तिष्क (Unconcious Brain) है। मानव मस्तिष्क कद्दू के गुदे के स्वरुप में है इसका बीच का भाग भूरे रंग का है जिसे 'कारटेक्स कहते हैं इस भाग में असंख्य स्मृतियां रहती हैं जो बात चेतनमस्तिष्क अपने पास से निकाल देता है जिसे हम भूलना करते हैं वह अचेतन मस्तिष्क में जाकर ठहर जाती है और वहीं रहने लगती है। स्मृति को सुरक्षित रखने के लिये अचेतन मस्तिष्क का यही 'कारटेक्स' कहा जाने वाला भाग उत्तरदायी है। इसमें ग्रामों फोन के रिकार्ड जैसी चूड़ियां क्यारियों के रूप में बनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहती हैं हमारी विस्मृति और स्मृति इसी में रहती है। मनुष्य कोई भी बात कभी भी भूलता नहीं है होता यह है चेतन मस्तिष्क की जानकारी में आयी बात जब वह निकाल देता है तो वह मनुष्य के अचेतन मस्तिष्क में जाकर ठहर जाती है। चेतन मस्तिष्क जब इस बात को मांगता है तो उसे अचेतन मन लौटा देता हैं, इसे ही विस्मृति का स्मृति में बदलना कहते है।

अचेतन मस्तिष्क असाधारण शक्तिशाली है इसकी शाक्ति असीम है इसकी गति अबोध है यह चेतन मस्तिष्क का सुरक्षा कोष और रिकार्ड रूम है।

"सम्मोहन की प्रक्रिया में एक व्यक्ति का अचेतन मस्तिष्क दूसरे व्यक्ति के अचेतन मस्तिष्क को अपने विश्वास में नियंत्रण में लेकर अपना अनुगामी अनुचर बना लेता है तत्पश्चात् उसे निर्देशित कर मनोवांचित कार्य सम्पन्न करा लेता है यही सूत्र सम्मोहन विद्या का मूल निदेशक सिद्धाँत है। इस प्रक्रिया में निदेशन कर्त्ता अचेतन मस्तिष्क सम्मोहक बन जाता है और निर्देशन प्राप्त कर उसे परिणति स्वरूप प्रदान करने वाला अचेतन मस्तिष्क 'माध्यम' बन जाता है। निर्देशन कर्त्ता अचेतन मस्तिष्क और माध्यम रूप अचेतन मस्तिष्क में पूर्ण ताल नेल एकाग्रता स्थापित होने पर वह सम्मोहन कर्त्ता अचेतन मस्तिष्क की आज्ञाओं का अधिकाधिक पालन करने लगता है। यहीं से सम्मोहन के प्रयास और परिणाम की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।"कुछ अचेतन मस्तिष्क संवेगों निर्देशों को पूर्ण संवेदनशीलता सहित स्वीकार करते हैं कुछ कम करते हैं और कुछ बिलकुल ही पकड़ में नहीं आते हैं जिसका परिणाम भी तीन रूपों में प्रकट होता है—पूर्ण सफल सम्मोहन, अर्ध सफल सम्मोहन तथा पूर्ण विफल सम्मोहन।

ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन्हें सम्मोहित किया जाना संभव नहीं है वे सम्मोहित होते ही नहीं हैं। किसी प्रकार के निर्देश ग्रहण ही नहीं करते हैं उन पर सम्मोहन पूर्ण विफल रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन के स्वरुप को एक अन्य उदाहरण में इस प्रकार भी समझा जा सकता है—"सम्मोहन दो मस्तिष्कों के अचेतन रूप के मिलन और एकाकार होने की वह प्रक्रिया है, जिसमें सम्मोहक अचेतन मस्तिष्क सम्मोहित अचेतन मस्तिष्क को इस स्थिति में अर्धतन्त्रा अर्थात् एक विशेष प्रकार की खुमारी भरी नींद की ऐसी स्थिति में ले आता है जब वह आज्ञाकारी सेवक की तरह कार्य करने लगता है। सम्मोहन की अवस्था में मनुष्य का चेतन मस्तिष्क सुषुप्तावस्था में आ जाता है और सदैव सुषुप्त अचेतन मस्तिष्क जाग्रत होकर चेतन मस्तिष्क के समय क्रिया कलाप करने लगता है। इस स्थिति में मन और मस्तिष्क एकाकार होकर असाधारण रूप से गतिशील हो जाते हैं। समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ पूर्ण जागृत संवेदन शील होकर असाधारण रूप से गतिशील हो जाती हैं। बुद्धि कल्पना और स्मृति अपने चरम जागृत और संवेदित स्तर को प्राप्त कर लेती हैं। इस अवस्था में 'सम्मोहित पात्र' अर्थात् माध्यम के स्वतन्त्र स्वचालित तंत्रिका तंत्र को भी निर्देशों द्वारा निर्देशन गतिशीलता तथा नियन्त्रण की स्थिति अर्जित की जा सकती है। सम्मोहन शुद्ध रूप से एक विज्ञान है और अध्ययन, अभ्यास साधना द्वारा इसकी शक्तियों को अर्जित करने के लिये इसका द्वार प्रत्येक के लिए खुला है। सम्मोहन विद्या को अभ्यास मनन द्वारा भली भाँति आत्म सात कर कोई भी व्यक्ति इस विद्या में निष्णातता अर्जित कर सकता है। इसका कोई भी भाग और स्वरूप ऐसा नहीं है जो अस्पष्ट अवैज्ञानिक तथा अशुद्ध हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२ | सम्मोहन के प्रकार

(1) आत्म सम्मोहन—इसमें संज्ञा शून्यता, स्पर्श शून्यता तथा ऐसे कारनामों को करना सम्मिलित है जो सहज विश्वसनीय नहीं, हमने पिछले पृष्ठ में जिस प्रकार के कारनामें हठयोगियों द्वारा किए जाने का वर्णन किया है वे सभी आत्म सम्मोहन द्वारा सहज संभव हैं। आत्म सम्मोहन की असाधारण क्षमता सहज विश्वसनीय नहीं हैं। आत्म सम्मोहन सम्मोहन की उस अवस्था को कहा जाता है जिसमें एक ही व्यक्ति सम्मोहन कर्त्ता तथा माध्यम दोनों ही रूपों में स्वयं ही सब कुछ करता है। आत्म सम्मोहन सम्मोहन की अत्यन्त उच्च स्तरीय स्थिति है। आत्म सम्मोहन और योग में अन्योन्या श्रय सम्बन्ध हैं। यौगिक क्रियाओं में व्यायाम की महत्वपूर्ण भूमिका है परन्तु आत्म सम्मोहन में व्यायाम की भूमिका अत्यन्त नगण्य है।

भारत में आत्म सम्मोहन की क्रिया अत्यन्त प्राचीन काल से लोकप्रिय रही है। इसमें निष्वदता अर्जित कर अनेकों ने परालौकिक शक्तियाँ प्राप्त कर काल जयी ख्याति पायी है।

आत्म सम्मोहन क्या है ? इसकी उपलब्धियाँ कैसी हो सकती हैं तथा इसे किस प्रकार किया जाए इस विषय पर हम—एक स्वतन्त्र अध्याय में पूर्ण विस्तार से चर्चा करेंगे।

(2) दृष्टि सम्मोहन—सम्मोहन विद्या में आँखों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नेत्रों में किसी प्रकार का दृष्टि दोष नहीं होना चाहिए। वैसे तो सम्मोहन कर्त्ता और माध्यम की सभी ज्ञानेद्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ निरोग और स्वस्थ होनी चाहिए तभी प्रयोगों में शत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिशत सफलता संभव है इससे भी ऊपर आँखों की महत्ता सम्पूर्ण सम्मोहन विद्या में अनिवार्य रूप से सर्वोपरी है। सम्मोहन में पूर्ण रूप से दक्ष व्यक्ति दृष्टि पात, शक्ति पात द्वारा दृष्टि सम्मोहन की क्षमता प्रदर्शित करते देखे गए हैं। आत्म सम्मोहन के समान ही दृष्टि सम्मोहन भी सम्मोहन की पूर्ण निष्णात स्थिति है। इसमें माध्यम को किसी शाब्दिक निर्देश के अभाव में आँखों—द्वारा ही सम्मोहित किया जाता है। इस प्रकार निरन्तर एकाग्र दृष्टि दर्शन द्वारा ही 'पात्र अर्थात् माध्यम' को मोह निद्रा में लाया जा सकता है। दृष्टि सम्मोहन में दक्षता कठोर आत्म नियन्त्रण, एकाग्र दृष्टि दक्षता तथा दीर्घकालीन अभ्यास का परिणाम होती है। दृष्टि सम्मोहन में दक्षता अर्जित करने के लिए कुछ सम्मोहन कर्त्ता 'छाया पुरुष साधन क्रिया 'और 'बिन्दु साधन क्रिया' अपनाते देखे गये हैं इनके द्वारा दृष्टि सम्मोहन में शीघ्र दक्षता प्राप्त होती है। दृष्टि सम्मोहन की दक्षता के चरमोत्कर्ष में दृष्टि सम्मोहन द्वारा जड़ चेतन सभी प्रकार के प्राणियों तथा निर्जीव पदार्थों तक को प्रभावित करने की क्षमता आ जाती है। दृष्टि सम्मोहन भी सम्मोहन विद्या में पूर्ण निष्णातता की सूचक स्थिति है। इस विषय पर भी अलग से अध्याय रूप में विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला जायेगा।

(3) कल्पना सम्मोहन एवं भाव सम्मोहन—कल्पना सम्मोहन और भाव सम्मोहन लगभग आत्म सम्मोहन से मिलती जुलती स्थिति है फिर भी कल्पना सम्मोहन और भाव सम्मोहन की अवस्था के केंन्द्रीय करण का माघ्यम अदृष्य और अस्पष्ट सा ही होता है। इसमें सम्मोहित व्यक्ति अदृश्य माध्यम की कल्पना कर सम्मोहित होता है। ईश्वर के प्रति सम्मोहित होना और पूर्ण सर्मपण की भावना तन-मन की सुध-वुध खोकर अपना लेना कल्पना सम्मोहन एवं भाव सम्मोहन का परिणाम है। परमहँस गति को प्राप्त करने में सर्वप्रथम कल्पना सम्मोहन और भाव सम्मोहन ही माध्यम बनते हैं फिर भी कल्पना-सम्मोंहित भाव सम्मोहित की स्थिति आत्म सम्मोहित से अलग होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(4) भय सम्मोहन—यह भयार्त होकर संज्ञा शून्यता की स्थिति का द्योतक हैं भय सम्मोहन में सम्मोहन कर्त्ता माध्यम को भयभीत कर किसी वस्तु या व्यक्ति से सदैव दूर रहने का स्थायी डर बैठा देता है। जैसे प्राणघाती किसी भंयकर स्थिति को देखकर, जंतु को देखकर, आसन्न मृत्यु के भय से माध्यम संज्ञा शुन्यता तथा ज्ञानन्द्रियों तथा कर्मन्द्रियों की निष्क्रियता की अवस्था में पहुंच कर अपना होशो हवास खो देता है। इसमें वाक्‌शक्ति नष्ट होने मतिभ्रम होने का डर रहता है। भूत प्रेत का साक्षात्कार होने पर मनुष्य भय सम्मोहित हो जाता है। सम्मोहन के उपरोक्त प्रकारों के अतिरिक्त अन्य प्रकार भी हैं। प्रमुख रूप से सम्मोहन के ये प्रकार हैं भेद नहीं। इनके अतिरिक्त भी स्थिति भेद के अनुसार सम्मोहन के अन्य प्रकार भी हो सकते हैं सम्मोहन के जिस प्रकार में जिस प्रकार की मूल प्रवृति निदेशक स्थिति में होगी सम्मोहन का वैसा ही प्रकार हो जायगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ | सम्मोहन शाब्दिक अर्थ व्याख्या में (Hypnotism)

सम्मोहन शब्द का हिन्दी में अर्थ है सम्पूर्ण रूप से सर्वाडगँ मोहित, प्रयासपूर्ण वशीकरण, किसी को किसी शक्ति द्वारा मोहित करना, सम्मोहन की शब्द अर्थानुसार हिन्दी व्याख्या द्वारा वर्तमान 'हिपनोटिज्म' की भावनात्मक रुप रेखा स्पष्ट नहीं होती है लेकिन सम्मोहन शब्द भारत में हिपनोटिज्म के मंत्र विद्या से जुड़ जाने की स्थिति स्पष्ट करता है।

अब हम सम्मोहन के अँग्रेजी रूपाँतर Hypnotism शब्द के प्रार्दुभाव पर विचार करें, भारत के अतिरिक्त सम्मोहन विद्या के प्राचीन कालीन अस्तित्व का उल्लेख यूनान में मिलता है, यूनान द्वारा ही सम्मोहन विद्या का मिश्र और रोम में प्रचार प्रसार हुआ।

अँग्रेजी भाषा के वर्तमान प्रचलित शब्द हिपनोटिज्म का जन्म यूनानी शब्द हिपनोज से हुआ है। हिप्नोज का यूनानी भाषा में अर्थ है निद्रा। सम्मोहन द्वारा उत्पन्न निद्रा, निद्रा का स्वाभाविक स्वरुप नहीं है। साधारण नींद और सम्मोहन द्वारा उत्पन्न निद्रा में लाक्षणिक अंतर है। साधारण नींद में व्यक्ति सुध-बुध खोकर बेखबर होकर सोता है। वह दीन दुनियां भूल जाता है ऐसी बेखबर नींद के वारे में कहा जाता रहा है अरे वह तो मुर्दो से वाजी लगा रहा है, 'घोड़े बेचकर सोया हैं।'

सार श यह कि सब कुछ भुलाकर सुध-बुध खोकर सोना स्वाभाविक नींद का लक्षण है। लेकिन सम्मोहन द्वारा उत्पन्न निद्रा कुछ अलग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार की दीखती है सम्मोहन की नींद में स्वाभाविक नींद की ही तरह पलके भारी होती हैं पर चेहरा कुछ अजीब किस्म का हो जाता है यह एक विचित्र खुमारी जैसी उन्मावस्था लगती है।

सम्मोहन की नींद में सोया व्यक्ति न तो सोया हुआ लगता है और न जगा हुआ ही वास्तव में उसकी स्थिति भी यही होती है। सम्मोहन की नींद में सोये हुए व्यक्ति पर सम्मोहन निद्रा आयातित निद्रा होती है यानी कि वह जबरन सुलाया होता है जबरन सुलाये हुए होने की हालत में भी वह पूरी तरह सोया नहीं होता है वह तो एक प्रकार की अर्ध-बेहोशी या मदहोशी की दशा में होता है। हिपनोटिज्म नींद में सोये व्यक्ति को एक हद तक जगा रहना पड़ता है क्योंकि वह सम्मोहन कर्त्ता यानी कि सम्मोहन के प्रयोग कर्त्ता के निर्देशों आदेशों को पालन करने के लिए तत्परता पूर्वक प्रस्तुत रहता है। सम्मोहन में मनुष्य का चेतन मस्तिष्क प्रयास पूर्वक सुषुप्ता वस्था में पहुंचाया जाता है और सदैव सुषुप्त अचेतन मन को जागृत अवस्था में लाया जाता है। यही कारण है कि अनेक मनोवैज्ञानिक सम्मोहन निद्रा को आरोपित निद्रा, विशिष्ट चेतना, स्वाभाविक चेतना की विलोम स्थिति, परिवर्तित-चेतना या तन्त्रिका तंत्र (Nerous) की निद्रा कहते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सम्मोहन निद्रा स्वाभाविक निद्रा नहीं है और इसमें सोने वाले का अनुभव स्वाभाविक नींद में सोने या जागने जैसा नहीं है। स्वाभाविक निद्रा पूरी नींद सोकर जागने पर एक प्रकार की तरोताजगी और फुर्तीलेपन का एहसास जगाती है लेकिन सम्मोहन निद्रा में सोकर जागने पर ऐसा अहसास होता है जैसे व्यक्ति किसी अजीव किस्म के अहसास या हादसे सें गुजर कर मुक्त हुआ हो। सम्मोहन की मोह निद्रा में सोये व्यक्ति की स्थिति एक कम्प्यूटर जैसी हो जाती है वह यन्त्र चालित सा बन जाता है। उसका अहम् एक विचित्र प्रकार की दैन्यता अर्थात् 'सब मिशन' का शिकार हो जाता है। उसकी तर्क

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्ति, इच्छा शक्ति और स्वाभाविक अवस्था में क्रियाशील प्रत्युप्न मति इत्यादि सब कुछ एक विशिष्ट निदेशक शक्ति के आधीन होकर अपना स्वनिर्णयत्व खोकर कार्य करने लगते हैं ऐसी अवस्था में वह मान निर्देशों का पालन करने वाली मशीन बन जाता है। उससे जो कुछ कहा जाता है वही वह करता है वह इस अवस्था में किसी प्रकार के आत्म निर्णय को लेने की स्थिति में नहीं रहता है।

सम्मोहन की अवस्थाएँ—मनोवैज्ञानिक के अनुसार सम्मोहन की कई अवस्थाएँ होती हैं। लेकिन मुख्य रूप से सम्मोहन के अवस्था स्तर को अधिकाँश मनोवैज्ञानिकों ने तीन श्रेणियों में विभाजित किया है अल्प—गहन—चरम

अल्प सम्मोहन—यह सम्मोहन की प्रारंभिक अवस्था है। इसे हल्का सम्मोहन भी कहा जाता है। सम्मोहन की इस अवस्था को कुछ सम्मोहन कर्त्ता तँन्द्रावस्था के नाम से भी सम्बोधित करते हैं। अल्प सम्मोहन में सम्मोहित व्यक्ति जब सम्मोहन मुक्त होता है तो उसे अपनी सम्मोहित अवस्था में किए गए क्रिया कलाप की जानकारी रहती है अर्थात् उसे इस बात का ज्ञान रहता है कि मोह निद्रा की स्थिति में उसने सम्मोहक से क्या-क्या निर्देश प्राप्त किए तथा उनका पालन किस प्रकार किया। अतएव यह कहा जा सकता है कि अल्प सम्मोहन में पूर्ण विस्मृति की स्थिति नहीं आ पाती है। लेकिन अल्प सम्मोहन अर्थात् हल्का सम्मोहन ही है। अतएव यह नहीं समझना चाहिये कि हल्के सम्मोहन की स्थिति में भी 'पात्र' सम्मोहक के आदेशों की अवहेलना कर सकेगा या स्वेच्छा चारिता अपना सकेगा।

वास्तव में हल्के सम्मोहन में भी 'पात्र' सम्मोहक के आदेशों को यन्त्र चालित की तरह पालन करता है वह अनुशासित आज्ञाकारी अनुचर बन जाता है। उससे तर्क वितर्क करने की भी आशा नहीं की जा सकती है और वास्तव में वह तर्क वितर्क करने की स्थिति में नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है। वह अपने आप अपनी आँखें भी नहीं खोल सकता है जब तक कि सम्मोहन कर्त्ता स्पष्ट रूप से उसे आँखें खोलने का आदेश न दे। अल्प सम्मोहन की दशा में सम्मोहित पात्र सम्मोहक के आदेश पर पूर्ण विश्राम की अवस्था में रहता है कुल मिलाकर अल्प सम्मोहन में भी पात्र पूर्णतया सम्मोहक के आधीन ही रहता है।

अल्प सम्मोहन से अधिकाँश व्यक्ति सम्मोहित हो जाते है परन्तु अपवाद रूप से कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते है जिन पर अल्प सम्मोहन पूर्ण रूप से प्रभाव पूर्ण नहीं होता है।

अल्प सम्मोहन का प्रारम्भ—हल्के सम्मोहन अर्थात् अल्प सम्मोहन में पात्र की शारीरिक और मानसिक स्थिति स्वाभाविक नींद आने जैसी हो जाती है यह अवस्था एक विचित्र प्रकार की खुमारी और मदहोशी जैसी लगती है सम्मोहित किए जाने वाले माध्यम का चेहरा निर्विकार भाव शून्य लगने लगता है। मुखा कृति ध्यान मग्न हल्के मुस्कुराते व्यक्ति जैसी प्रतीत होती है। चेहरे की माँस पेशियाँ भी ढीली पड़ जाती हैं। उससे जो कहा जाता है वह वही करता है।

'पात्र' की साँस लेने और साँस छोड़ने की क्रिया देखकर भी ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वाभाविक निद्रा की स्थिति में है।

अल्प सम्मोहन में सम्मोहित पात्र के आज्ञा पालन की प्रवृत्ति—अल्प सम्मोहन में पात्र को जैसा कहा जाता है वह वैसा ही करने और अनुभव करने लगता है। उदाहरण के लिए—अल्प सम्मोहन में सम्मोहित पात्र को नमक देकर खाने के लिये कहा जाय और सम्मोहक कहे कि तुम चीनी खा रहे हो तो उसे चीनी का स्वाद नमक में आने लगेगा वह अनुभव करेगा कि वह नमक नहीं चीनी खा रहा है। उसके हाथ में यदि कच्चा आम देकर सम्मोहन कर्त्ता कहे कि तुम मीठी नाशपाती खा रहे हो तो वह कच्चे आम को मीठी नाशपाती समझकर खाने लगेगा उसे कच्चे आम में नाशपाती का स्वाद और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिठास अनुभव होगा। वह समझ ही नहीं पायेगा कि वह कच्चा आम खा रहा है। उसकी चेतना नाशपाती के ही रूप, रस, गंध और स्वाद का अनुभव करेगी।

उससे कहा जाए कि तुम अपने हाथ पैर हिला नहीं सकते हो तो वह वास्तव में अपने हाथ पैर नहीं हिला पाएगा उससे कहा जाए कि तुम्हारे दोनो हाथ नहीं हैं तो वह अपने शरीर में हाथ होने का अनुभव नहीं करेगा उसे लगेगा कि उसके दोनों बाजू कन्धे से कटे हुए हैं।

उसकी गोद में प्लास्टिक का एक खिलौना रखकर कहा जाए कि तुम्हारी गोद में तुम्हारा लड़का है इसे पुत्र वत् प्रेम करो तो वह वास्तव में उस खिलौने को अपना लड़का समझकर प्यार करने लगेगा उसके हृदय में वात्सल्य और पुत्र प्रेम उमड़ पड़ेगा उसे अपनी गोद में रक्खा खिलौना हाड़ माँस का बना जीवित बच्चा प्रतीत होने लगेगा उसे बच्चे के माँसल शरीर का अनुभव होगा यानी वजन और शारीरिक गर्मी तक का उसे अहसास होगा। उसे एक प्याला पानी देकर कहा जाए कि तुम मीठा स्वादिष्ट दूध पी रहे हो तो उसे अनुभव होगा कि वास्तव में वह मीठा स्वादिष्ट दूध ही पी रहा है।

उसके हाथ में कड़वे तेल की शीशी देकर कहा जाए कि तुम्हारे हाथ मैं चमेली के तेल की शीशी है इसे सूंघो। वास्तव में कड़वे तेल की शीशी सूंघने पर उसे चमेली के तेल का ही अनुभव होगा। उसे कड़वे तेल में चमेली के तेल की ही गन्ध आएगी। अगर उसके हाथ में पेट्रोल के तेल से भरा एक कप दे दिया जाए और कहा जाए कि यह आँवले का तेल है तो उसे पेट्रोल के तेल से भरा कप आँवले के तेल से भरा प्रतीत होगा उसे उसमें आँवले के तेल की ही गन्ध और रंग का अनुभव होगा।

इस प्रकार के कुछ प्रयोग करके ओर इस प्रकार के कुछ प्रयोगों का मनोवाँछित अनुकूल स्वरूप और स्तर आँकलन करने के बाद सम्मोहन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्त्ता को इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उसके सम्मोहन का 'पात्र' पर कितना प्रभाव है।

सम्मोहित तन्त्रावस्था की इस स्थिति में आ जाने पर 'पात्र' पूर्ण रूप से सम्मोहक के आधीन हो जाता है वह पूर्ण रूपेण मनसा, वाचा कर्मणा सम्मोहक का आदेशानुसार आचरण करने लगता है अनुभव करने लगता है। उसकी स्वतन्त्र चेतना, अनुभूति, आत्मनिर्णयता तथा प्रेरणा शक्ति सब कुछ सम्मोहक के आदेशों के आधीन हो जाती है। बल्कि यह कहा जाए कि इस अवस्था में स्वतः ही सम्मोहित पात्र में सम्मोहक के आदेशों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है तो कोई आश्चर्य या अविश्वसनीयता नहीं है।

इस प्रकार की सम्मोहित स्थिति में आए पात्र से सम्मोहन कर्त्ता कहता है अपने सर को चक्राकार घुमाओ तो पात्र अपने सर को चक्राकार घुमाने लगता है। इस प्रकार का आदेश देने के पूर्व सम्मोहन कर्त्ता को सम्मोहित पात्र से एक बार इतना अवश्य कहना पड़ता है कि – जैसा मैं कहूँगा तुम वैसा ही करोगे, जो मैं करूँगा तुम भी वही करोगे। मैं जितना और जैसा आदेश दूंगा तुम उसका अक्षरशः पालन करोगे। इतना कह कर सम्मोहक अपने एक हाथ को दूसरे हाथ के चारो ओर घुमाने लगता है तो माध्यम (सम्मोहित व्यक्ति) भी उसी प्रकार अपने हाथ को धुमाने लगता है। इस स्थिति में सम्मोहक—सम्मोहित पात्र से कहता है कि अपने हाथ को जरा जल्दी-जल्दी और तेजी से घुमाओ तो सम्मोहित पात्र उसके निर्देशानुसार अपने हाथ को और जल्दी-जल्दी घुमाने लगता है।

इसके बाद सम्मोहन कर्त्ता सम्मोहित पात्र की मनःस्थिति का पुर्नमुल्यांकन करते हुए आदेश देता है—तुम तब तक इसी प्रकार हाथ घुमाते रहो जब तक कि मैं तुम्हें रुकने का आदेश न दूं।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार सम्मोहक द्वारा दिए गए आदेश का पालन सम्मोहित पात्र करता ही रहता है चाहे थकावट के कारण वह बुरी तरह पस्त ही क्यों न हो जाए वह अपना हाथ शरीर की शक्ति के जवाब दे जाने पर भी घुमाता ही रहेगा। इस प्रकार एक पालतू जानवर अथवा यन्त्र चालित रोबोट की तरह सम्मोहक की आज्ञा का अक्षरश: सम्मोहक पालन करता रहेगा।

लेकिन सम्मोहित पात्र को जब सम्मोहक रुकने का आदेश देगा तो वह अपने घूमते हुए हाथ को रोककर रुक जाएगा। इस प्रकार के अन्य प्रयोग कराकर सम्मोहन कर्त्ता सम्मोहित पात्र की सम्मोहित स्थिति अर्थात् सम्मोहन के प्रभाव का स्तर अर्थात् सम्मोहित अवस्था की स्थिति का आंकलन कर सकता है।

सम्मोहन की इस अवस्था में सम्मोहित पात्र की मानसिक शक्तियां पूर्ण रूपेण स्वविवेक त्याग कर निस्तेज हो जाती है अर्थात् सम्मोहित पात्र के मन की शक्तियों का पता ही नहीं चल पाता है।

इस अवस्था में माध्यम पूर्ण रूपेण सम्मोहक के ऊपर निर्भर करता है। वह मात्र यन्त्र चालित आज्ञा पालक बनकर रह जाता है। उसका स्वतन्त्र विवेक, रुचि और इच्छा शक्ति पूर्णतया निस्तेज हो जाते हैं। इस तरह सम्मोहन की इस अवस्था को मनुष्य की अनेकों शारीरिक और मानमिक व्याधियों से मुक्त करने में महत्वपूर्ण रुप से सहायक माना गया है।

माध्यम इस अवस्था में पूरी तरह से सम्मोहक के आधीन रहता है वह उसकी आज्ञाओं को आँख बन्द कर अक्षरज्ञः आदर और श्रद्धा सहित पालन करता है अतएव रोगोपचार की दृष्टि सम्मोहन की यह अवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी गयी है। सम्मोहन की यह अवस्था विशेष रूप से मानसिक रोगों और दुर्व्यसनों को त्यागने में विशेष सहायक सिद्ध हुई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसे उदाहरण द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है—मान लीजिए कि सम्मोहित पात्र में बीड़ी सिगरेट पीने की लत है और वह इस आदत से छुटकारा पाना चाहता है पर आदत से मजबूर है तो जब वह हल्के सम्मोहन की इस दशा में है तो सम्मोहक उससे कहेगा—तुम बहुत बीड़ी सिगरेट पीते हो यह बुरी चीजें हैं ये बेकार की आदते हैं इन्हें छोड़ दो। तो इस प्रकार के आदेशों और उपदेशों का सम्मोहित पात्र पर सम्मोहन की दशा में गहरा प्रभाव पड़ेगा। उसके अचेतन मन (Unconcious Brain) पर सम्मोहक की बातें जम जायेगी इसके बाद सम्मोहन की मोह निद्रा भंग होने पर जब फिर से वह बीड़ी सिगरेट पियेगा तो सम्मोहन के अचेतन मन पर छाते प्रभाव के परिणाम स्वरुप उसे धूम्रपान में पहले जैसी संतुष्टि का अनुभव नहीं होगा साथ ही पहले जैसी रुचि और उत्साह में भी कमी आ जाएगी। इसके बा सम्मोहन के दो तीन पूर्ववर्ती प्रयोग जैसे और प्रयोग सफलता पूर्वक पूरे होने के बाद निश्चय ही पात्र अर्थात् माध्यम धूम्रपान की बुरी आदत छोड़ देगा।

सम्मोहन के इस प्रकार के प्रयोगों द्वारा बुरी आदतें दुर्व्यसन आदि सफलता पूर्वक छुड़ाए जा सकते हैं। मनुष्य को अनेको प्रकार की कुंठाओं मानसिक व्याधियों से छुटकारा दिलाया जा सकता है। मनुष्य का चरित्र सुधारा जा सकता है, उसमें किसी विषय विशेष के प्रति रुचि और लगन जगाई जा सकती है हृदय परिवर्तन तक स्थिति भी सफलता पूर्वक अर्जित की जा सकती है। दितीय विश्व युद्ध में नाजियों को अन्ध आज्ञा पालक बनाने के लिए हिटलर के शक्तिशाली सम्मोहन केन्द्रों द्वारा इस प्रकार के प्रयोग किए गए थे। इस प्रकार के प्रयोगों द्वारा पास किए गए नाजी सिर्फ वही सोंचते और वही करते थे जो कि सम्मोहन की अवस्था में उनके दिमाग में भरा गया था। कठिन से कठिन स्थिति में भय, परिवर्तन, अवहेलना और आत्म निर्णय से पूर्णतया अप्रभावित ये सम्मोहित नाजी मनुष्य न होकर एक खतरनाक युद्धक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हथियार बन गये थे। युद्ध बन्दी बनने पर भी वे यन्त्रणा विचलित नहीं होते थे। साथ ही शत्रु पक्ष के किसी काम नहीं आते थे। सम्मोहन द्वारा उनके हृदय से जीवन मृत्यु का भेद और भय तक निकाल दिया जाता था। जर्मनी के शत्रु देशों को इन नाजियों की मानसिकता पर आश्चर्य होता था। लेकिन वास्तव में यह सब हल्के सम्मोहन का ही कमाल था।

गहरा सम्मोहन—हल्के सम्मोहन से तीव्र और अधिक प्रभावशाली गहरा सम्मोहन होता है। हल्के सम्मोहन में पात्र को सब कुछ याद रहता है उसकी याददाश्त और चेतना शक्ति लुप्त नहीं होती है। लेकिन गहरे सम्मोहन में माध्यम एक प्रकार की सम्मोहन जनित चेतना शून्यता का शिकार हो जाता है। उसका अपने आस-पास के वातावरण एकदम सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। वह अपनी चेतना शक्ति खोकर आत्मनिर्णय, स्वाभाविक क्रियाशीलता सब कुछ खोकर खुदी से बेखुदी में पहुँच जाता है।

गहरे सम्मोहन में सम्मोहित माध्यम का अपने ऊपर कोई नियंत्रण नहीं रह जाता है। वह सब प्रकार से सम्मोहन कर्त्ता के आधीन होकर उसके आदेशों को पालन करने वाली मशीन बन जाता है। गहरे सम्मोहन में सम्मोहित पात्र सम्मोहन कर्त्ता के आदेशों को पालन करने वाला रोबोट सा बन जाता है। गहरे सम्मोहन में पात्र को हल्के सम्मोहन की तरह सब कुछ याद नहीं रहता है। वह तो दीनदुनियाँ से एकदम बेखबर होकर यन्त्र चालित आज्ञापालक पुतला भर रह जाता है उसे सम्मोहक जो-जो आदेश देता है वह उन्हें पूरा करता चलता है।

व्यक्ति अर्थात् माध्यम जब गहरे सम्मोहन से मुक्त होता है तो उसे गहरे सम्मोहन की अवस्था में किए गए अपने किसी कार्य का स्मरण भी नहीं रहता है। गहरा सम्मोहन एक प्रकार की (Stage of Coma) होतीं है। इसमें माध्यम का वह हल्का सा आत्मनियंत्रण जो हल्के सम्मोहन में बना रहता है वह अपने आप हट जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गहरे सम्मोहन में माध्यम प्रयोग कर्त्ता के अधिक आधीन होकर उसकी इच्छानुसार आचरण करने लगता है।

गहरा सम्मोहन इतना तीव्र और प्रभावशाली होता है कि इससे प्रभावित माध्यम के शरीर की माँसपेशियां और नसें अकड़ने लगती हैं। हाथ पैर और शरीर के अन्य अंग अकड़ से जाते हैं। गहरे सम्मोहन से प्रभावित माध्यम के शरीर की दशा, शरीर से प्राण वायु निकले मुर्दे जैसी हो जाती है। उसका शरीर उसी तरह अकड़ जाता है जैसा मृत्यु के बाद निर्जीव मनुष्य का शरीर अकड़ जाता है। उसके हाथ पैर और सारा शरीर पत्थर जैसा अकड़ कर हो जाता है। शरीर की समस्त तन्त्रिकाएँ और माँसपेशियाँ अपनी स्वाभाविक स्थिति त्याग देती हैं।

गहरे सम्मोहन से सम्मोहित पात्र अपने शरीर को हिला डुला तक नहीं पाता है। उसमें आँख खोलकर देखने और पलकें झपकाने तक की ताकत नहीं रह जाती है। हाथ पैरों में एक विचित्र प्रकार का भारीपन आ जाता है अपने ही शरीर के अंगों का अपने शरीर में होना या न होना तक समझने की चेतना शक्ति तक नहीं रह जाती है। हम पहले ही कह चुके हैं कि गहरे सम्मोहन से सम्मोहित व्यक्ति के शरीर में एकदम मृत शरीर जैसे लक्षण प्रकट हो जाते हैं उसकी आँखों की पुतलियों तक मरे हुए व्यक्ति जैसी हो जाती हैं। वे अपने स्वाभाविक स्थान को त्यागकर ऊपर जाकर टँग जाती हैं। साँस लेने की क्रिया, दिल की धड़कन, नाड़ी गति इत्यादि अत्यन्त धीमी और मंद होकर रह जाती हैं। शरीर की स्पर्श अनुभव शक्ति भी लुप्त हो जाती है। माध्यम की दशा ऐसी हो जाती है कि लगता है कि किसी ने क्लोरोफार्म की गहरी मात्रा सुंघाकर बेहोश कर दिया है या सारे शरीर पर 'इथर' छिड़ककर स्पर्श शून्यता और संज्ञा शून्यता की दशा उत्पन्न कर दी है। गहरे सम्मोहन से सम्मोहित पात्र के शरीर में सुई चुभाकर सम्मोहन कर्त्ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उससे कहे कि सुई चुभाने पर तुम्हारे शरीर में दर्द नहीं होता है तुम्हें पीड़ा का बिलकुल ही अनुभव नहीं होता है तो वास्तव में पात्र को पीड़ा का अनुभव नहीं होगा। उसे अपने शरीर को नोचे और काटे जाने का भी कुछ पता नहीं चलेगा। शरीर की हालत बिलकुल क्लोरोफार्म या ईथर की गहरी डोज़ (खुराक) दिए जाने जैसी हो जाती है। गहरे सम्मोहन की इस दशा में यदि पात्र के शरीर के किसी हिस्से को चाकू से काट भी दिया जाए तो उसे दर्द का अनुभव नहीं होगा। वह बिलकुल बेजान कपड़े की गठरी जैसा हो जाएगा। इस अवस्था में उसके शरीर को एक निर्जीव पदार्थ की तरह चाहे इधर से उठाकर उधर रख दिया जाय तो पात्र को बिलकुल पता नहीं चल पाएगा।

इस अवस्था में पात्र के हाथ, पैर अथवा सिर को किसी विशेष स्थिति में करके रख दिया जाय तो उसे वह उसी अवस्था में रक्खे रहेगा। सम्मोहक यदि अब उससे कहेगा कि तुम्हारा शरीर इंच भर भी नहीं हिलाया जा सकता है या जरा भी नहीं हिलडुल सकता है तो वास्तव में सम्मोहित पात्र अपने शरीर को जरा भी नहीं हिलाडुला पाएगा।

इस अवस्था में सम्मोहक, सम्मोहित पात्र को जो भी आदेश देगा वह उसका स्पष्टतया पालन करेगा। यह अवस्था एक प्रकार की संज्ञा शून्यता स्पर्श शून्यता जैसी होती है। इसमें पात्र को यदि डंडे से पीटा जाय, नोंचा जाय तो भी उसे पीड़ा अर्थात् किसी प्रकार की वेदना का अनुभव नहीं होगा गहरे सम्मोहन द्वारा माँसपेशियों में एक प्रकार का विशिष्ट तनाव उत्पन्न हो जाता है जो लगभग लकवे या पक्षाघात जैसे तनाव और स्पर्श शून्यता और संज्ञाहीनता जैसा होता है। सम्मोहन की इस अवस्था अर्थात् गहरे सम्मोहन द्वारा पात्र सहज ही मुक्त नहीं हो सकता है। उसे तब तक स्वाभाविक अवस्था में नहीं लौटाया जा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकता है जब तक कि सम्मोहन कर्त्ता स्पष्ट और प्रभावशाली निर्देशन द्वारा उसे गहरे सम्मोहन से मुक्त न करे। गहरे सम्मोहन में सम्मोहन कर्त्ता को हल्के सम्मोहन की अपेक्षा अधिक जागरूक और सजग रहना पड़ता है। गहरे सम्मोहन से सम्मोहित पात्र को यदि सम्मोहन की महानिद्रा से मुक्त न किया जाए तो एक लम्बा समय बीतने पर सम्मोहित पात्र की मृत्यु भी हो सकती है। गहरे सम्मोहन की अवस्था में सम्मोहक सम्मोहित पात्र से कुछ भी करा सकता है। वह सम्मोहित पात्र से उसकी इच्छा और रुचि के विपरीत कार्य भी कर करा सकता है। कभी तो सम्मोहित पात्र से बड़े विचित्र और विलक्षण कार्य तक करा डालता है। भारत में गुरु परम्परा और उस्ताद पद्धति द्वारा सम्मोहन विद्या को अनपढ़ तक अच्छी तरह सीखकर सफल प्रदर्शन करते देखे गए हैं। सम्मोहन की सैद्धाँतिक व्याख्या और जानकारी से अनभिज्ञ ये लोग सम्मोहन के प्रयोगात्मक रूप और व्यावहारिक ज्ञान में पूर्ण पटु देखे गए हैं। ये अनपढ़ सम्मोहन कर्त्ता अपने माध्यम द्वारा सम्मोहन के ऐसे ही चमत्कारी प्रदर्शन कर लोगों को आश्चर्य में डाल देते हैं। भारत में सम्मोहन विद्या अभी भी संतोषजनक रूप से लोकप्रिय नहीं हो पायी है। भारत का शिक्षित समुदाय भी सम्मोहन के प्रति उल्लेखनीय रूप से आकर्षित नहीं है बल्कि उसमें इसके प्रति अविश्वास, शंका और उदासीनता की भावना ही अधिक है।

बिना पढ़े-लिखे लोग भी सम्मोहन के अस्तित्व को जादूगरी, तन्त्र विद्या और नजर बाँधने जैसी क्रियाएं मात्र समझते हैं। वास्तव में सम्मोहन विद्या की क्रमिक वैज्ञानिक उन्नति और विकास आज पश्चिम में ही हो रहा है।

भारत के छोटे बड़े शहरों में सड़कछाप जादूगर और बाजीगर जो बाजीगरी के करिश्मे दिखाते देखे जाते हैं उनमें कुछ तो हाथ की सफाई होते हैं पर कुछ वास्तव में 'गहरे सम्मोहन' के सफल सुन्दर प्रयोग होते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं। आम दर्शक इसे सम्मोहन न मानकर जादूगरी और नजर बांधना मानता है। लेकिन वास्तव में यह सब सम्मोहन के पूर्व वर्णित दो रूपों (हलके या गहरे सम्मोहन) में से एक होता है। ज्यादातर प्रयोग गहरे सम्मोहन के ही होते हैं। गहरे सम्मोहन के इन प्रयोगों द्वारा बाजीगर दर्शकों को ऐसे करतब दिखाते हैं जिनका तार्किक या वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण सम्भव ही नहीं होता हैं। वे दर्शक की जेब में पड़े नोट का सही और वास्तविक नम्बर अपने माध्यम द्वारा बता देते हैं। वे माध्यम के शरीर का कोई भी अंग चाकू द्वारा चीर देते हैं लेकिन माध्यम गहरे सम्मोहन के प्रभाव से न तो चीखता चिल्लाता है और न कराहता या रोता है।

वे गहरे सम्मोहन से प्रभावित अपने माध्यम को किसी तख्ते पर लिटाकर फिर उसके सीने पर तख्ता रख दो तीन आदमी तक उस पर खड़े कर देते हैं लेकिन माध्यम को दर्द, पीड़ा या घुटन जैसी कोई अनुभूति नहीं होती है।

चालाकी हाथ की सफाई या ट्रिक हिपनोटिज्म—हिपनोटिज्म के अस्तित्व से अपरिचित व्यक्ति इसे हाथ की सफाई, जादूगरी या नजर बाँधना समझने की भूल कर बैठता है। लेकिन हिपनोटिज्म के अध्येता मनोवैज्ञानिक इसे शुद्ध सम्मोहन के सफल प्रयोगात्मक रूप में स्वीकार करते हैं। लेकिन यह सब एक सामान्य किन्तु प्रभावशाली प्राकृतिक नियम के सफल प्रयोग द्वारा घटित होता है। इस प्रकार की स्थिति गहरे सम्मोहन द्वारा शरीर के तनाव उत्पन्न कर की जाती है। इसमें माँसपेशियों को चेतना शून्य कर दिया जाता है। सम्मोहन के विशद ज्ञान और व्यापक व्यावहारिक अभ्यास द्वारा तो और भी चमत्कारी प्रदर्शन किये जा सकते हैं।

सम्मोहन द्वारा चिकित्सा—गहरे सम्मोहन की अवस्था में लाकर अनेकों मानसिक रोगों की चिकित्सा सफलतापूर्वक की जाती रही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुंत सी मानसिक व्याधियाँ ऐसी होती हैं जो आयुर्वेद, ऐलोपेथी या होम्योपैथी की किसी भी दवा से ठीक नहीं हो सकती हैं इस प्रकार की अनेकों बीमारियों की सम्मोहन द्वारा चिकित्सा की जाती रही है। अनेकों मानसिक रोगों का तो एकमात्र इलाज सम्मोहन ही समझा जाता रहा है। रोगी हर प्रकार के इलाज से निराश होकर जब सम्मोहन की शरण में पहुँचा तभी उसके रोग का इलाज और निदान संभव हो सका। सम्मोहन के द्वारा नशे से मनुष्य को मुक्त किया जा सकता है। इतना ही नहीं अनेकों बुरी आदतों नशे की भयानक लतों से छुटकारा पाने के सारे प्रयास असफल होने पर सम्मोहन द्वारा ही मुस्तकिल सफलता मिलने के उदाहरण हैं। हीनता ग्रँथियों (In feriorty complex) कुंठाओं, मानसिक गुत्थियों आदि का तो एकमात्र सफल इलाज सम्मोहन द्वारा ही संभव है।

सम्मोहन द्वाना भविष्य ज्ञान—पश्चिम में प्रायः कुशल मनोचिकित्सक अच्छे हिपनोटिस्ट भी होते हैं। आज के एक दशक पूर्व हिपनोटिस्टों की एक टीम ने इस विषय पर प्रयोग किये कि क्या हिपनोटिज्म द्वारा मनुष्य का भविष्य भी जाना जा सकता है वास्तव में इस क्षेत्र में किए गए प्रयोग शतप्रतिशत सफल रहे। माध्यम को गहरे सम्मोहन में लाकर उससे कहा गया—देखो आज की तारीख यह है और आज से पाँच वर्ष बाद की फलाँ तारीख का दिन तुम्हारा कैसा गुजर रहा है। बस माध्यम को इतना निर्देश मिलना था कि वह चीखने चिल्लाने और रोने लगा जब उससे इस चीख पुकार का कारण पूछा गया तो वह बोला—मैं हत्या के अपराध में जेल में बन्द हूँ। मैं अपने आपको लोहे के दरवाजे लगी बन्द अँधेरी कोठरी में देख रहा हूँ। कोठरी में मोटी-मोटी लोहे की सलाखों वाला एक जँगला है। मैं बेचैनी निराशा और घुटन महसूस कर रहा हूँ। कृपया मुझे इस कोठरी से निकालिये। वास्तव में पाँच वर्ष बाद वही माध्यम हत्या के अपराध में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बन्दी होकर जिस प्रकार की काल कोठरी में रक्खा गया वह ऐसी ही थी जैसी कि पाँच वर्ष पूर्व उसने गहरे सम्मोहन की मोह निद्रायें देखी थी। इसी प्रकार अन्य माध्यम पर भी जब प्रयोग द्वारा भविष्य दर्शन कराया गया तो उसने मोह निद्रा में जो कुछ देखा था वह सब कुछ भविष्य की उस निर्धारित तारीख पर सच साबित हुआ।

सम्मोहन द्वारा लायी गयी मोह निद्रा की अवधि—गहरे सम्मोहन द्वारा लायी गई मोह निद्रा की कम से कम और अधिक से अधिक अवधि क्या हो सकती है इस विषय में अभी तक कोई सर्वमान्य सिद्धाँत स्थापित नहीं किया जा सका है। प्रयोगों का सिलसिला जारी है और इसी के साथ परिणामों की संभावना का विस्तार भी। इस संवन्ध में ये प्रमाणित सत्य उदाहरण विचारणीय हैं?—आस्ट्रेलिया के एक सम्मोहन विद्या विशेषज्ञ श्री रानरिको ने 3 सितम्बर 1979 को म्यूनिख में एक आस्ट्रेलियाई महिला को गहरे सम्मोहन द्वारा आरोपित मोह निद्रा की अवधि 200 घंटे तक खींच ले जाने की सफलता अर्जित की। श्री रानरिको द्वारा स्थापित मोह निद्रा का रिकार्ड नया विश्व रिकार्ड है यानी कि सर्वोच्च कीर्तिमान। श्री रानरिको ने यह नया रिकार्ड पिछले विश्व रिकार्ड से 32 घंटे अधिक निद्रा के वशीभूत करा कर स्थापित किया है। इससे चार सप्ताह पूर्व एक अन्य आस्ट्रेलियाई सम्मोहक मि. कैली ने एक युवक को लगातार सात दिन और सात रातों तक मोह निद्रा में सुलाये रक्खा था। मि. रानरिको का रिकार्ड कैली के रिकार्ड से 32 घंटे अधिक है। जिस तरह कैली का रिकार्ड रानरिको ने तोड़ा है उसी तरह हो सकता है कोई अन्य सम्मोहक रानरिको का रिकार्ड तोड़कर उससे आगे निकल जाए। इस संवन्ध में प्रयोग जारी हैं और इसी के साथ-साथ परिणामों की संभावनाओं में भी विस्तार हो रहा है। यह निश्चित है कि अपने प्रयोगों द्वारा सम्मोहक गण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन विद्या को इसी प्रकार विस्तृत आयाम देते हुए संभावनाओं की नयी से नयी ऊँचाईयों पर पहुंचते रहेंगे।

शल्य चिकित्सा और सम्मोहन—जून 1979 के द्वितीय सप्ताह में आकाशवाणी के हिंन्दी और अंग्रेजी समाचार बुलेटिनों द्वारा यह समाचार प्रमुखता से प्रसारित किया गया था कि इटली के कुछ शल्य चिकित्सकों ने एक अत्यन कठिन आपरेशन बिना क्लोरोफार्म और ईथर के किया। नौ घंटे के लंम्बे समय तक चलने वाले इस आपरेशन में कुशल हिप्नों-टिस्टों ने भी अपना सहयोग दिया था। उन्होंने गहरे संम्मोहन द्वारा मरीज को बेहोशी की स्थिति में पहुंचाना था। यह आपरेशन पेट का आपरेशन था और पूर्णतया सफल भी हुआ था। विदेशों में आज अनेकों चिकित्सक शल्य चिकित्सा में हिपनोटिज्म का सफलतापूर्वक धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं। वे मरीजों को मोहनिद्रा की गहन अवस्था में लाकर सफलतापूर्वक आपरेशन कर रहे हैं। इस प्रकार अब यह प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर चुका है कि शल्य चिकित्सा में हिपनोटिज्म एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। वह आसानी से ईथर और क्लोरोफार्म का सब्सटीच्यूट अर्थात् स्थानापन्न बन सकता है।

गहन संम्मोहन द्वारा मरीज आसानी से स्पर्शशून्यता मुक्त होकर बेहोश हो जाता है फिर उसे अपने शारीरिक अवयवों के काटे, चीरे जाने की पीड़ा जनक अनुभूति नहीं होती है। इस अवस्था में मरीज के सामने कही गयी बहुत कम बातें असंम्बद्ध रूप से उसे (होश में आने पर) याद रहती हैं।

सम्मोहन के कुछ चमत्कारी प्रयोग—यहाँ विषय को व्यापक रूप में समझाने के दृष्टि कोण से संम्मोहन के कुछ चकित करने वाले प्रयोगों की चर्चा की जा रही है। दिल्ली शानदार इलाके कनाटप्लेस में एक संम्मोहन कर्ता ने अपने माध्यम द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रदर्शनों द्वारा उपस्थित जन समुदाय को चकित कर दिया था। उसने अपने गहन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संम्मोहन द्वारा पात्र को एकदम जड़वत् और भारी कर दिया था फिर उपस्थित दर्शकों से कहा कि आप इसे (पात्र) हिंलाये या उठाये पर आप लोगों को ऐसा करने में सफलता नहीं मिल पाएगी वास्तव में हुआ भी यही दस-दस तंदरुस्त और तगड़े आदमी एक साथ मिलकर उठाने पर भी औसत कद काठी के संम्मोहित पात्र को नहीं उठा सके वे लाख कोशिश करके भी उसे हिला पाने में असफल रहे। इसी प्रकार के प्रर्दशन प्रसिद्ध अमरीकी संम्मोहन गोल्डविन ने दिल्ली के अशोका होटल में दिखाकर दर्शको को चकित और विस्मय विमुग्ध कर दिया था।

संम्मोहन विद्या में प्रसिद्ध भारतीय जादूगर श्री.पी.सी सरकार बहुत ही पारंगत थे। उन्होंने अपने जादू के प्रर्दशनों द्वारा अंतराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की थी। वे अपने जादूगरी के खेलों में संम्मोहन विद्या के उच्च तम प्रर्दशन और प्रयोग दिखाकर दर्शकों को विस्मय विमुग्ध कर देते थे। इस संम्बन्ध में कलकत्ते में किया गया उनका एक प्रर्दशन असाधारण है। श्री पी.सी सरकार जादू का खेल दिखाने-वाले थे टिकट सबके सब बिक चुके थे। हाल में दर्शक खचाखच भरे थे। सभी लोग जादूगर सरकार की प्रतिक्षा कर रहे थे उनका आने का समय साढ़े आठ बजे था मगर लोगों की घड़ियों में साढ़े दस बज जाने पर भी श्री सरकार मंच पर नहीं पहुंचे। लोग भुनभुनाने लगे। आपस में कहने लगे-हम भारतीयों को समय पालन की आदत तो बिलकुल ही नहीं है। देखिये ग्यारह बज गये हैं हम बोर हो रहे हैं पर जादूगर मोहदय का अता पता ही नहीं है। हाल में इसी तरह की टीका टिप्पणी चल रही थी कि मंच पर श्री सरकार का मुस्कराता चेहरा प्रकट हुआ। उनके आते ही एक दर्शक ने उठकर कहा—आपको समय की पाबंदी की आदत बिलकुल नहीं है। इस पर श्री सरकार ने तपाक् से मुस्कराकर कहा—देखिये मुझे साढ़े आठ बजे आपके सामने हाजिर होना था पर मैं तो समय से दस मिनट पहले ही आ गया हूं इस समय, समय आठ बजकर चालीस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिनट का है। श्री पी.सी सरकार का इतना कहना था कि बौखलाये सभी दर्शक अपनी अपनी घड़ी देखने लगे। वास्तव में सभी घड़ियों में एक ही समय था। अब दर्शकों के बदहवास होने की बात थी सबके लिये आश्चर्य का पहला धमाका तो यही था कि सबकी घड़ियों में रात के ग्यारह बजने के बाद फिर आठ बजकर चालीस मिनट का समय कैसे हो गया दूसरी अविश्वसनीय बात यह थी कि सभी घड़ियां में एक ही समय था। वास्तव में ऐसा कभी नहीं होता है कि सब घड़ियां एक ही समय सूचित करें मिनटों और सेकिडों का हेरफेर तो होता ही है यहां दोहरी आश्चर्य जनक स्थिति थी श्री पीं.सी सरकार ने तत्काल सबकी उल्झन दूर करते हुए कहा-देखिये मेरा यह पहला प्रर्दशन न तो जादू है और न नजर बांधना है यह शुद्ध सम्मोहन विद्या का कमाल है। संम्मोहन विद्या के चमत्कारी प्रर्दशनों में, प्रयोगों में विविधता उत्पन्न करना स बात पर निर्भर करता है कि सम्मोहन का रियाज (अभ्यास) कितना बड़ा है।

आजकल संम्मोहन के क्षेत्र में प्रयोगों द्वारा जो प्रगति हो रही है वह सफलता और संम्भवना के नये-नये आयाम प्रस्तुत करती जा रही है। संम्मोहन का चिकित्सा विज्ञान में प्रयोग और महत्व कोई नयी स्थिति नहीं है यह तो बहुत पहले से हो रहा है। संम्मोहन विद्या अब मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण जीवनदायी वरदान वन चुकी हैं। आज चिकित्सक अनेकों भयानक रोगों को संम्मोहन द्वारा ठीक कर देते हैं। हिस्टीरिया एक भयानक मानसिक रोग है और इसकी सबसे महत्व पूर्ण और कारगर चिकित्सा केवल हिपनोटिज्म द्वारा संभव है। संम्मोहन विद्या के माध्यम से चिकित्सा करने पर यह रोग जड़ से समाप्त हो जाता है। यही बात मिर्गी पर लागू होती है। मिर्गी और हिस्टीरिया की बीमारी में बड़ा भारी अंतर है एक शरीरिक रोग है (मिर्गी) और दूसरा एकदम से मानसिक रोग है पर दोनों बीमारीयों का संम्मोहन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्या द्वारा पूर्ण सफल और प्रभावी इलाज संभव है। पश्चिम के विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वास्तव में सफल हिपनोटिस्ट भी रहे हैं। जैसे कि फ्रायड (काम मनोविज्ञान का महापंडित) मेग्डूगल, वाटसन, रेनर मेस्मोर, (हिपनोटिज्म के जन्म दाता) जेम्स ब्रेड चारकाट इत्यादि । अनेकों ऐसे महारोग हैं कि जिनका सफल और स्थायी इलाज केवल संम्मोहन विद्या द्वारा संभव है अब तो हिपनोटिज्म द्वारा महिलाओं को प्रसव भी कराये जाने लगे हैं। एकदम निरापद और वेदना रहित सफल प्रसव कराने में हिपनोटिज्म अपना सानी नहीं रखता है । अब तो दंत चिकित्सक तक पीड़ा रहित दांत उखाड़ने लगाने तथा अन्य आवश्यक चिकित्सा स्थितियों के लिये अपनी चिकित्सा विधि में हिपनोटिज्म का प्रयोग करने लगे हैं। सम्मोहन द्वारा स्वभाव परिवर्तन, रुचि परिवर्तन, आदत परिवर्तन के अनेकों सफल प्रयोग अब तक किये जा चुके हैं। सम्मोहन के मनोरंजक प्रर्दशनों द्वारा दर्शकों को विस्मयकारी करतब दिखाने में संमोहनकर्ताओं ने बड़ा ही प्रभावशाली कार्य किया है। इससे सम्मोहन के प्रति सार्वजनिक रुचि और अवस्था में विस्तार हुआ है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में डा. सिगमण्ड फ्रायड का नाम रूप से उल्लेखनीय है। उनके मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धियां भी आसाधरण हैं। फ्रायड ने मनोविज्ञान के अतिरिक्त हिपनोटिज्म के क्षेत्र में भी डा.लीबाल्ट और बर्नहाइम (दोनों हिपनोटिस्ट) के निर्देशन में संम्मोहन विज्ञान क्षेत्र में भी पर्याप्त सिद्ध कार्य किया और महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की। फ्रायड महोदय ने अपने शोध निष्कर्षो के आधार पर विश्व में पहली वार इस बात की प्रमाणिक घोषणा की कि मनुष्य के सभी रोग शारीरिकि नहीं होते हैं इनमें से अधिकांश रोग तो पूर्ण तथा मानसिक या अर्धशारीरिक और अर्धमानसिक होते हैं।

मानसिक रोगों के वर्गीकरण और निदान के लिये उन्होंने मनुष्य के चेतन और अचेतन मन का अध्ययन कर नये-नये सिद्धांतो का प्रति पालन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया उन्होंने अपने समस्त शोधकार्यो में मनोविज्ञान और हिपनोटिज्म को एक साथ मिलाकर कार्य किया। फ्रायड में चिकित्सा विज्ञान और मनोविज्ञान को बताया कि संम्मोहन कर्त्ता रोगी के चेतन मन को सुला कर अचेतन मन को जागृत कर अतृप्ता इच्छाओं, कुठांओं, चिन्ताओं इत्यादि की जानकारी पाकर संम्मोहन के माध्यम से मानसिक उपचार तथा परहेज बता देने का भी रोग मुक्ति के लिये प्रभाव पड़ता है। द्वितीय विश्व युद्व में युद्व के प्रभाव से मानसिक रूप से समस्त सैनिकों को मानसिक स्वस्थता प्रदान करने में हिपनोटिज्म ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। युद्ध के प्रभाव से उत्पन्न उन्माद और विक्षिप्तता तथा नृशसता की मनोवृत्ति से छुटकारा दिलाने में हिपनोटिज्म का कार्य एक मात्र रूप से प्रशंसनीय है। लेकिन यह भी सत्य है कि हिपनोटिज्म का रचनात्मक मानव सेवी स्वरूप अनेकों रोगों को ढूंढ़ निकालने और उनका निदान प्रस्तुत करने में जितना सफल हुआ है उससे अधिक यह एक दुरुपयोग अस्य के रूप में प्रयुक्त हुआ है—मनचाहे व्यक्ति को वशी भूतकर मनमाने कार्य करवाने में हिपनोटिज्म ने अपनी प्रतिष्ठा खोयी है।

सम्मोहन की तृतीय अवस्था—हल्के और गहरे सम्मोहन पर सविस्तार चर्चा करने के बाद सम्मोहन की तृतीय अर्थात् "मूर्च्छितावस्था, पर अब हम विचार और चर्चा करेगें। सम्मोहन की तृतीय सर्वोपरि अवस्था मूर्च्छित अवस्था के नाम से जानी जाती है। सम्मोहन की यह सुपर लेटिव डिग्री है। गहरे सम्मोहन को अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचाये जाने पर मूर्च्छित अवस्था आ जाती है। सम्मोहन की मोहनिद्रा की यह प्रगाढ़ एवं गहनतम अवस्था होती है। इस अवस्था में पात्र को कोई होश नहीं रहता है। एकदम पाषाणवत् स्थिति। पात्र को चाहे जहाँ चाहे जिस स्थिति में डाल दिया जाए वह एकदम निर्जिव पदार्थ की तरह पड़ा रहेगा। चाहे उसे नुकीले पत्थरों पर डाल दिया जाए या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काँटो पर लिटा दिया जाए उसे कुछ भी अनुभव नहीं होगा। सम्मोहन की अवस्था का उपयोग बड़े आपरेशनों में किया जाता है। सम्मोहन को इस अवस्था में चेतना शून्यता और स्पर्श शून्यता गहरे सम्मोहन से अधिक हो जाती है। माध्यम की ज्ञानेंद्रियां और कर्मेन्द्रियां पूर्ण निष्क्रिय हो जाती है। सम्मोहन की सर्वोपरि अवस्था अर्थात् मूच्छितावस्था के चरमोत्कर्ष काल में प्रायः यह संभव नहीं होता है कि पात्र को निर्देश दिये जाय और वह उनका पालन करे। साधारण तथा संम्मोहन की मोहनिद्रा का चरमोत्कर्ष काल अर्थात मोहनिद्रा की मूच्छितावस्था का व्यवहारिक प्रयोगों की दृष्टि से कम उपयोगी है। मगर बीच की एक और अवस्था जिसे गहरे सम्मोहन से अधिक और मूच्छितावस्था से कुछ कम कहा गया है अधिक उपयोगी है।

निंद्रा चारिता और सम्मोहन—हिपनोटिज्म के उपर पुस्तक लिखने वाले कुछ लेखकों ने निंद्राचारिता को हिपनोटिज्म की मोहनिंद्रा से जोड़ दिया है। लेकिन यह गलत है निंद्राचारिता अपने आप में एक स्वंतत्र रोग है। इसे नींद में चलते की बीमारी भी कहा जाता है। यह अपने आप भी व्यक्ति में उत्पन्न हो सकती है। इसको औषधि विज्ञान में एक रोग के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसका औषधियों द्वारा इलाज भी किया जाता है। ऐसी कई दुर्घटनांए घटित हो चूकी है जिनमें व्यक्ति नींद में सोते-सोते चल पड़ा और किसी इमारत की तीसरी चौथी मंजिल से गिरकर प्रांण गंवा बैठा।

सम्मोहन की निद्रा चारिता—स्वाभाविक और स्वतः उत्पन्न निद्राचारिता जहां एक रोग है वहीं सम्मोहन द्वारा उत्पन्न निद्राचारिता इसके बिलकुल विपरित इससे एकदम अलग एक स्वंतत्र स्थिति है। संम्मोहन द्वारा उत्पन्न निंद्राचारिता सम्मोहन मोहनिंद्रा की सबसे गहन प्रगाढ़ स्थिति है। इस स्थिति में पहुंचने पर पात्र में माध्यम में असाधारण अलौकिक एवं पारलौकिक शक्ति का प्रार्दुभाव होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैकड़ों मील की दूरी पर विदेश में घटने वाली किसी घटना को वह इस प्रकार बताने लगता है जैसे वह सब कुछ अपनी ही आंखों से देख रहा है। वह लोगों की मन की बातें बताने लगता है। भूत, भविष्य बताने लगता है। दूर बसने वाले किसी व्यक्ति के विषय में उसकी तत्कालिक स्थिति का वर्णन करने लगता है।

संम्मोहन द्वारा निंद्राचारिता की सैद्धाँतिक व्याख्या के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों हिपनोटिस्टों और दार्शनिकों नें यह मत व्यक्त किया है कि सम्मोहन द्वारा उत्पन्न निंद्राचारिता में पात्र का स्थूल शरीर तो सम्मोहन कर्त्ता के सामने ही निष्क्रिय पड़ा रहता है परन्तु सुक्ष्म शरीर पार्थिव स्थूल शरीर से मुक्त होकर संसार में विचरण करने लगता है यह सुक्ष्म शरीर असाधारण गतिशील और संवेदन शील होता है यह मिनटों और सेकिंडों में संसार के किसी भी कोने में जाकर लौट सकता है। स्थूल शरीर से सुक्ष्म शरीर को इच्छानुसार विलगकर गतिशील करने की क्रिया में पारंगत हो जाने की स्थिति मनुष्य को अतीन्द्रिय बोध और अतीन्द्रिय शक्तियों का स्वामी बना देती है। यह सघन और निरंतर अभ्यास द्वारा अर्जित स्थिति है। सम्मोहन विद्या में पारंगतता की इस स्थिति तक पहुंचने के लिये न तो माध्यम को कोई जल्द बाजी करनी चाहिये और न सम्मोहन कर्त्ता को ही। इस अवस्था में भी सम्मोहन कर्त्ता और माध्यम दोनों का सम्बन्ध (सुक्ष्म तथा पार्थिवरूप) दोनों ही रूपों से बना रहता है। सम्मोहन कर्त्ता का पात्र के सुक्ष्म शरीर से सम्बन्ध बराबर बनां रहता है। इसे आत्मसम्मोहन का चरमोत्कर्ष भी कहा जाता है। सम्मोहन योग की ही प्रारंभिक अवस्था का नाम है।

भारत में यह दक्षता हजारों साल पुरानी है। यहाँ के योगी जब चाहे तब अपने सुक्ष्म शरीर को स्थूल से पृथक कर लेते थे। वे तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने पार्थिव शरीर से अपनी आत्मा अर्थात् सूक्ष्म शरीर को पृथक कर अन्य स्थूल शरीर में प्रवेश कराने में भी सफल हो गए थे। इस संबन्ध में आदि गुरु शंकर आचार्य का उदाहरण उल्लेखनीय है—मंडल मिश्र की पत्नी भारती से शास्त्रार्थ में पराजित होने पर (काम कला ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण) उन्हें अपने स्थूल शरीर को त्याग कर एक अन्य राजा के स्थूल शरीर में अपने सूक्ष्म शरीर को प्रवेश कराना पड़ा था इसे "पर काया प्रवेश" भी कहते हैं। आधुनिक सम्मोहन विज्ञान अभी इस स्तर तक तो उन्नति नहीं कर पाया है लेकिन यदि सम्मोहन विद्या ने कभी उपलब्धि के इस स्तर को प्राप्त करने की सफलता भी पा ली तो निश्चय ही मनुष्य को बहुत बड़ा नियन्त्रण प्राप्त हो जायेगा। सम्मोहन द्वारा निंद्रा चारिता अर्थात् माध्यम के स्थूल शरीर से सूक्ष्म को पृथक करने की दक्षता अभी भी विश्व के बहुत कम ही हिपनोटिस्टों को प्राप्त है। सम्मोहन निंद्रा में निंद्रा चारिता की स्थिति अर्जित करने के लिए निरन्तर क्रमबद्ध अभ्यास की आवश्यकता है। नियमित रूप से दीर्घकाल तक मोह निंद्रित होते रहने के बाद ही माध्यम और सम्मोहन कर्त्ता निद्रा चारिता के लक्ष्य तक पहुंचने में सफल होते देखे गए हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि माध्यम की एकाग्रता धैर्य और संवेदन शीलता ही उसे इस लक्ष्य तक पहुंचाने में सफल होती है। सम्मोहन द्वारा निद्रा चारिता की कड़ी शर्त है कि पात्र को काफी लम्बे अरसे तक मोह निंद्रित होते रहने का अभ्यास करना पड़ता है। सम्मोहन द्वारा निद्रा चारिता आत्म सम्मोहन ही है। सम्मोहन द्वारा निंद्रा चारिता में दक्षता प्राप्त करने के बाद माध्यम स्वयं भी बिना किसी हिपनोटिस्ट की सहायता के स्वयं ही आत्म सम्मोहन की गहरी स्थिति में जाकर स्थूल शरीर से विलग होकर अपने सूक्ष्म शरीर को क़हीं भी ले जा सकता है। इसके बाद बिना किसी बाधा के लौटकर सूक्ष्म और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थूल के पूर्ववर्ती तालमेल को अर्जित कर सकता है। पात्र के भीतर इस अतीन्द्रिय शक्ति साधना की स्थापना के निरन्तर प्रयास में धीरे-धीरे नियमित साधना करनी चाहिए। इसमें एक बारगी ही सफलता प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

आत्म सम्मोहन अर्थात् निद्रा चारिता की साधना कैसे की जाए—प्रारंभ में मोह निद्रा की सघन स्थिति में लाकर पात्र से कहा जाए कि वह किसी सुदूरवर्ती ऐसे स्थान पर जाए जहाँ वह केवल एक दो बार ही गया है। इस प्रकार मोहनिद्रा में ऐसे सुदूरवर्ती स्थान पर पात्र को एक दो बार भेजने के बाद उसे फिर भेजकर पूछा जाए कि वह इस बात का विवरण दे कि अभी उस स्थान पर क्या हो रहा है। प्रयोग की इतने तक की स्थिति के संतोषजनक सिद्ध होने के बाद फिर पात्र को ऐसे सुदूरवर्ती स्थान पर भेजने का प्रयास करना चाहिए जहाँ वह कभी भी नहीं गया है। इस प्रयास में भी संतोषजनक परिणाम प्राप्त करने के बाद पात्र से फिर इसी अनदेखे स्थान की तात्कालिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

जब माध्यम मोहनिद्रा में लीन हो उसकी आँखें बन्द हो तो उसके सामने किसी पुस्तक का एक पन्ना लेकर सम्मोहन कर्त्ता उस पृष्ठ को पढ़वाने का प्रयास करे वह माध्यम को आदेश कि वह उस पृष्ठ को पढ़े। यहाँ माध्यम और प्रयोगकर्त्ता के बीच स्थापित चित्राकर्षण अर्थात मानसिक एकात्मा के कारण माध्यम उस पृष्ठ को पढ़ लेगा जिसे कि प्रयोगकर्त्ता पहले ही पढ़ चुका है। इसी के परिणाम स्वरूप माध्यम प्रयोगकर्त्ता के मन की बात भी बता देगा। जब पुस्तक के प्रस्तुत किये गए पृष्ठ को माध्यम से पढ़ने का आग्रह किया जाता है तो वह पुस्तक के पृष्ठ को नहीं पढ़ता है वह प्रयोग कर्त्ता के मन को पढ़ने का प्रयास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करता है। चूंकि प्रयोगकर्त्ता हाथ में लिए पृष्ठ को मन ही मन पढ़ने का प्रयास कर रहा होता है इसलिए प्रयोगकर्त्ता के मन से स्थापित सवल एकात्मता के कारण माध्यम भी पृष्ठ को पढ़ लेता है।

वह पृष्ठ न पढ़कर प्रयोगकर्त्ता के मन को पढ़ने का प्रयास करता है। सामने उपस्थित व्यक्ति के मन को और विचारों को पढ़ लेने की इस दक्षता को 'टेली रेस्पोंस पावर' या 'टेलीपैथी' कहा जाता है। यह विद्या सम्मोहन विज्ञान की ही एक शाखा है पर यह सम्मोहन विद्या जैसी पुरानी नहीं है। इस क्षेत्र में भी प्रयोग जारी हैं। 'टेलीपैथी' अव एक स्वतन्त्र विषय बन गया है यह सम्मोहन विज्ञान से अलग है इसमें भी प्रयोगों और सम्भावनाओं के नए-नए अध्याय खुलते चले जा रहे हैं। **"टेली पैथा"** की सम्पुर्ण जानकारी के लिये लेखक द्वारा रचित पुस्तक **टेलीरेस्पान्स पावर** अवश्य पढ़े।

प्रयोगकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत किए पृष्ठ को माध्यम द्वारा सफलता पूर्वक पढ़ लेने के वाद उससे प्रयोगकर्त्ता यह पूछता है कि पृष्ठ किस पुस्तक का है, पुस्तक किस विषय की है और इस समय वह पुस्तक कहाँ किस हालत में रक्खी है। इस प्रकार के प्रश्न और इससे मिलते जुलते प्रश्न पूछने के वाद जब प्रयोगकर्त्ता पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाए तो उसे अभ्यास को आगे बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार निरन्तर अभ्यास द्वारा प्रगति करते करते माध्यम को मोह निद्रा की सर्वोच्च स्थिति में लाया जाना संभव है इस सर्वोच्च स्थिति द्वारा ही आलौकिक शास्त्रियों को स्वामित्व प्राप्त होता है।

पाठकों एवं सम्मोहन विद्या सीखने की ओर अग्रसर व्यक्तियों के मनोरन्जनार्थ यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत करना आप्रसाँगिक नहीं है। सम्मोहन विद्या में निष्णात अमरीकी युवक गैलर को आत्म सम्मोहन पर असाधारण अधिकार था। वह आत्म सम्मोहन की गहरी स्थिति में जाकर अपने सूक्ष्म शरीर को मनवाँछित स्थान पर ले जा सकता था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'सम्मोहन विद्या के प्रति शंकालु उनके एक मित्र वैज्ञानिक मित्र आँद्रीजा ने उनसे कहा कि वे अमरीका के जिस नगर में इस समय बैठे हैं इसी में बैठे-बैठे ही वे ब्राजील जाकर दिखायें। मि. गैलर ने अपने वैज्ञानिक मित्र की सम्मोहन विद्या में रुचि जगाने और आस्था बढ़ाने के लिए उनका आग्रह स्वीकार कर लिया। गैलर ने तत्काल आत्म सम्मोहन के निद्रा चारिता प्रभाव का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया और अपने सूक्ष्म शरीर द्वारा ब्राजील पहुंच गया। ब्राजील पहुंचकर अपनी पहुंच प्रमाणित करने के लिए गैलर ने ब्राजील के एक नगर निवासी से पूछा कि यह कौन सी जगह है तो उसने बताया कि यह ब्राजील है और आप इस समय ब्राजील के एक उपनगर में हैं। इतने विवरण से सन्तुष्ट होने के बाद गैलर के सूक्ष्म शरीर ने अपनी अत: प्रेरणा से एक अन्य व्यक्ति को प्रभावित किया गैलर की अत: प्रेरणा से प्रभावित उस व्यक्ति ने गैलर को ब्राजील में प्रचलित करेंसी का एक हजार रुपए का एक नोट दिया। इधर जब गैलर का सूक्ष्म शरीर अपने स्थूल शरीर में लौटकर आया तो वैज्ञानिक आँद्रीजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा उसने स्पष्ट देखा कि गैलर के हाथ में ब्राजील की करेंसी का एक हजार रुपए का नोट था जो यह प्रमाणित कर रहा था कि गैलर वास्तव में ब्राजील होकर आया है। अब तर्क वितर्क और शंका की कोई बात न थी। यह सम्मोहन विद्या द्वारा अर्जित अतीन्द्रिय शक्ति का प्रमाण था।

न सम्मोहन द्वारा न रोग के रूप में फिर भी निद्रा चारिता— हमने रोग के रूप में निद्रा चारिता की चर्चा की है फिर सम्मोहन द्वारा अर्जित निद्रा चारिता के उपर विस्तार से चर्चा की है। अब हम इन दोनों स्थितियों के पीछे स्थापित शास्वत प्राकृतिक सिद्धाँत की चर्चा करेंगे। वास्तव में इन दोनों स्थितियों के पीछे प्रकृति की शक्ति ही काम करती है सम्मोहन विद्या ने जिस निद्रा चारिता को अतीन्द्रिय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्ति और ऊर्जा के रूप में विस्तृत किया है वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त शक्ति का ही परिष्कृत रूप है। मनुष्य नींद में हजारों मील दूर चला जाता है। मान लीजिए कि आजकल आप बम्बई में रह रहे है इसके पहले आप काफी समय से इलाहाबाद में रह रहे थे। पूर्व स्मृतियों और भौतिक सम्बन्ध के आधार पर आप रात में बम्बई में अपने फ्लैट में बिस्तर पर सो रहे हैं पर नींद में (स्वप्न में) आप इलाहाबाद में पहुंच जाते हैं आपका स्थूल शरीर बम्बई में अपने फ्लैट में ही रह जाता है पर सूक्ष्म शरीर इलाहाबाद पहुंच जाता है। आप बम्बई में होते हुए भी अपने आपको इलाहाबाद में अनुभव करते हैं। यह प्रकृति द्वारा प्रदत्त निद्रा चारिता की शक्ति का उदाहरण है। सम्मोहन में जो अर्जित शक्ति है और इच्छानुसार की जाने वाली स्थिति है वही प्रकृति द्वारा अनायास कभी-कभी घटने वाली स्थिति हैं। दोनों में इतनी समानता अवश्य है कि स्थूल से विलग होकर सूक्ष्म शरीर विचरण करता है। इस प्रकार की घटना न्यूनाधिक रूप से सभी के जीवन में घटती रहती है। सम्मोहन द्वारा प्राप्त शक्ति से अतीन्द्रिय ज्ञान से जो भविष्य जाना जाता है वही ज्ञान कभी-कभी अनायास प्रकृति द्वार स्वंत्र में भविष्य संकेत के रूप में प्राप्त हो जाता है। प्रकृति द्वारा प्रदत प्रकृति इसी अतीन्द्रिय ऊर्जा स्त्रोत को सघन सम्मोहनद्वार व्यवस्थित विकास गति प्रदान करने का कार्य संम्मोहन विज्ञान ने किया है।

सम्मोहन विज्ञान मानवीय इच्छा जितनी प्रभावशाली शक्तिशाली गतिशीलता प्रदान करता है वह किसी अन्य वैज्ञानिव प्रयोग द्वारा सम्भव नहीं है। मन और आत्मा के रहस्यों को उजागर करके इन्हें विस्तृत विराट आयाम देने में सम्मोहन विज्ञान का कोई सानी नहीं है। यह निरन्तर क्रमिक अभ्यास और दृढ़ इच्छा शक्ति को मानवीय अंतः प्रेरणा से अनोखे प्रभावशाली रूप में जोड़ता हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल्दबाजी न की जाय:—यहाँ हम नये नये हिपनोटिज्म सीखने वाले या कम सीखे हुए व्यक्तितो के लिए कुछ लिखना चहाते हैं। जो संम्मोहन कर्त्ता सम्मोहन विद्या में पूर्ण दक्षता प्राप्त नहीं कर पाये हैं वे अपने प्रयोगों में किसी तरह जल्दबाजी न करे और न ही एक दम से हाई जम्प करें। जल्दी इस विद्या में में क्षमता प्राप्त कर लेने का प्रयास हानीकर सिद्ध हो सकता है। उन्होंने क्रमबद्ध संतुलित अभ्यास युक्त साधना करनी चाहिये ठीक उसी तरह जिस तरह एक तैराक पहले कम गहरे पानी में तैरने के ।अभ्यास करता है फिर गहरे पानी में तैरने का अभ्यास करता है। ऐसा देखने में आया है कि कम सीखा हुआ संमोहन कर्त्ता किसी माध्यम को संमोहित करता है ओर माध्यम संमोहिन होते ही उसके तीव्र सम्मोहन प्रयास द्वारा एकदम से निद्राचारिता की स्थिती में पहुंच जाता है उस समय अपरिपक्व संम्मोहन कर्त्ता घबरा जाता है नर्वस हो जाता है वह इस बात का फैसला ही नहीं कर पाता है कि स्थिति से निपटने के लिए नियंमण करने के लिए क्या किया जाय ऐसे समय में धैर्य से ओर बुद्धि मानी से काम लेना चाहिये बन पड़े तो अपने से परिपक्व व्यक्ति (संमोहनकर्त्ता) का सहयोग ओर निर्देश लेना चाहिये। इस समय घबरा कर हिम्मत हार बैठने से पात्र अथति माध्यम को हानी ही होने की संभावना है

इसी प्रकार असावधानियों और हानियों को ध्यान में रखते हुए सम्मोहन के समग्र स्वरूप पर 'विवेचना करने के बाद भी—अभी तक माध्यम को सम्मोहित करने की टेक्नीक अर्थात विधि को नहीं बताया गयाहै। हमने पहले सम्मोंहन के स्वरूप और प्रभाव की चर्चा करते हुए माध्यम और सम्मोहन कर्त्ता के दायित्वों का स्पष्टीकरण कर दिया है। इसका तात्पर्य यह है कि संम्मोहनकर्त्ता अपनी जुम्मेदारी अच्छी तरह समझ लें

हिपनोटिज्म की अपराध निवारण सहायता:—हमने सम्मोहन द्वारा शारीरिक मानसिक चिकित्सा पर प्रकाश डाला है। सम्मोहन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा शल्दचिकित्सा को किये जानेवाले सहयोग का भी स्पष्टीकरण किया है अब हम सम्मोहन विज्ञान की अपराध निवारण सहायता का स्पष्टीकरण करेंगे। वास्तव में सम्मोहन विद्या मानव की बहुमुखी सहायता करती है। सम्मोहन विद्या के कार्य क्षेत्र में बहुत सी ऐसी स्थितियाँ हैं जिनसे अन्य कोई विद्या या पद्धति इसकी स्थानापन्न या पर्यायवाची नहीं हो सकती है। हिपनोटिज्म का प्रय ोग अब पेंचीदा अपराध गुत्थियों को सुलझाने में किया जाने लगा है इसकी सहायता से ऐसे माहिर चालाक अपराधी पकड़े जाने लगे हैं जिनकी पुलिस इन्वेस्टीगेशन द्वारा पकड़ संभव ही नहीं थी विदेशो में कई रहस्यमय हत्याओं के मामले में दाखिल दफ्तर कर दिये लेकिन उपरी दवाब पड़ने पर उनकी फाइलें फिर खोली जाने पर पुलिस ने किंकर्तव्य विमूड होकर हिपनोंटिज्म की सहायता ली और वास्तविक अपराधी को कानून की जद में ले लिया। इस बात का विवरण तो उपलब्ध नहीं है कि पहले पहल कब किसने और कहाँ हिपनोटिज्म की सहायता से किसी पेंचीदा अपराध की गुत्थी सुलझायी लेकिन अब इस बात के अनेकों बिवरण उपलब्ध हैं कि हिपनोटिज्म की सहायता से पेंचीदा अपराध गुत्थियाँ सुलझायी जाने लगी हैं और छिपे रुस्तम अपराधी सफलता पूर्वक पकड़े जाने लगे हैं।

हिपनोटिज्म की सहायता से अपराधियों को पकड़ने में स्काटलैंड यार्ड (ग्रेटब्रिटेन) और अमरोका बहुत आगे हैं। अपराध अन्वेषण में सहायक होकर हिपनोटिज्म पुलिस की सिरदर्दी तो कम करता ही हैं साथ ही वह जल्द ही वास्तविक अपराधी को कानून के घेरे में समेट देता है। वास्तव में हिपोंटिज्म इस माललों में ला जवाब और बे मिसाल है।

आयरलैंड का एक पेशेवर हत्यारा बड़ी चतुरता से और सफाई से भारी-भारी रकमें लेकर हत्याएँ किया करता था। वह हत्या कहरने के बाद कोई प्रमाण या सूत्र ऐसा नहीं छोड़ता था जिससे कि पुलिस उसे पकड़ सके। पुलिस परेशान हो गई इसके द्वारा की कई हत्याओं की गुत्थी लाख हाथ पैर मारने पर भी पुलिस नहीं सुलझा सकी। एक दिन उसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संदिग्ध गति विधियाँ एक जासूस की निगाह में आ गयी। जासूस के आग्रह पर पुलिस ने उस हत्यारे युवक जिम रुबर्ट को गिरफ्तार कर लिया थाने लाकर उससे पूछताछ की गई पुलिस ने कार्ययातएं दी अपने सब हत्याकंडे अपनायें पर पुलिस को सफलता नहीं मिली। अंत में एक कुशल हिपनोटिस्ट को सहायता से राबर्ट को गहरे संम्मौहन में लाया गया और फिर प्रश्न किये गये अब राबर्ट का रहस्य छिपा न रहा और उनके अचेतन मन में उससे सब कुछ सही-सही उगलवा ही दिया। उसने सब कुछ बक डाला कि-किस तरह उसने कहां-कहाँ किस की हत्या की। हत्याएँ क्यों की कैसे की। जिस रावर्ट के संम्मोहन अवस्था में दिये गये बयानों को पुलिस टेप करती चली गई बाद में जब जिम राबर्ट का मामला न्यायालय में पेश हुआ तो पुलिस ने सारी कहानी न्यायाधीश को बताते हुए संम्मोहित अवस्था में जिम द्वारा दिये गये बयानों का टेप प्रस्तुत कर दिया जिम रावर्ट द्वारा संम्मोहित अवस्था में दिये मये बयानों के आधार पुलिस को उसे के विरुद्ध प्रमाण एकत्रीकरण में भी काफी सहायता मिली जिम का बचाव करने वाले वकील ने पुलिस द्वारा प्रस्तुत संम्मोहित अवस्था के टेंप को न्यायाधीश से अमान घोषित करने की अपील की पर न्यायाधीश ने बचाव पक्ष के उस आग्रह को स्वीकार नहीं किया जिमको फाँसी की सजा सुना ही दी गई। वास्तव में हिपनोटिज्म की सहायता से एक भयानक अपराधी के जीवन का अंत हुआ।

इसी तरह स्पेन के दो बलात्कारियों ने एक स्कूली छात्रा को पीछे दबोच कर उसका अपहरण कर लिया अपहरण करने के वाद छात्रा के साथ बलात्कार किया फिर उसे एकाँत निर्जन स्थान में ले जाकर छोड़ दिया। छात्रा के साथ वलात्कार करते समय एक अपराधी उसकी आँखे बंद किये रहा दूसरा उसी के सामने बलात्कार करता रहा ऐसा दोनों ने वारी-बारी से किया छात्रा दोनों की ही अस्पष्ट सुरत देख पाई उसे अपने बलात्कार करने वाले अपराधियों का पूरा-पूरा हुलिया साफ-साफ याद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं रहा वह अपराधियों का स्पष्ट विवरण पुलिस को नहीं दे पायी इस इस मामले में यह बात महत्व की सावित हुई कि दोनों बलात्कारी पेशेवर पाकेट मार और हत्यारे थे पुलिस ने एक मैंने हुए हिपनोटिस्ट की सहायत से छात्रा को सम्मोहित करवाया फिर उसके सम्मोहित अवस्वा में अनेकों अपराधियों के चित्र उसके सामने पहचानने के लिये रक्खे छात्रा ने वास्त विक अपराधियों को अपने अचेतन मन की प्रेरणा पर पहचान लिया बस फिर क्या था पुलिस ने बलात्कारियों की गर्दन पकड़ ही ली। अब वो यूरोप के अनेक देशों की पुलिस धड़ल्ले से सम्मोहन का अपराध अन्वेषण में सहयोग लेने लगी है विवेशों में संम्मोहन के अपराध के अपराध अवेषण सहयोग को भीं न्यायालय मान्यता और प्रमाणिकता देने लगे हैं। भारत में अभी ऐसा नहीं होता है वास्तव में भारत के अपराधी यूरोह के अपराधियों के स्तर तक पेंचीदे भी तो नहीं है। इसी तरह के अनेकों उदाहरण इस बात के सशक्त प्रमाण स्वरूप मिल जाँयेगे कि हिपनोटिज्म ने अनेकों पेंचीदा अपराधों की गुत्थियों सुलझने में पुलिस की सहायता कर कानून और समाज की सेवा की है। सम्मोहन विद्या अपने लगनशील अध्येताओं और प्रयोग कर्त्ताओं के निरंतर अवाध प्रयोग द्वारा उन्नति की ओर अग्रसर है। अचेतन मन में छिपे ऐस रहस्यों को जिन पर मनुष्य का चेतन मन कठोर नियंयण कर उजागर कोने से रोकता है संम्मोहन की मोहनिद्रा खोल कर रख देती है। अपने देश के लिये विदेशों में गुप्तचारी करने वाले गुप्तचर जब उस देश की पुलिस द्वारा पकड़ में आ जाते हैं और पुलिस उन घाघ गुप्तचारों से रहस्य उगल वाने में हर तरह से असफल हो जाती है तो हिपनोटिज्म की सहायता ही एक मात्र रूप से सहायक होती है। हिपनोटिज्म की सहायता से मन में छिपे रहस्यों की उजागर करने की प्रक्रिया की प्रतिक्रिया सभी पर एक समान नहीं होती है। इसका कारण यह है कि विभिन्न व्यक्तियो की इच्छा-शक्ति आलब्ल, स्वभाव और रुचि अलग होती है। सम्मोहन का सभी पर प्रभाव भी एक जैसा नहीं हाता है। दुर्बल इच्छा शक्ति अस्थिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वभाव वाले व्यक्ति पर, मानसिक रूप से रुग्ण व्यक्तियों पर तथा औसत दर्जे के लोगों पर संम्मोहन का प्रभाव प्रायः थोड़े बहुत अंतर से एक जैसा ही होता है। लेकिन असाधारण रूप से कठोर हृदय, संवेदन हीन अथवा किसी प्रकार की मानसिक विक्षिप्तता से ग्रसत व्यक्ति हल्के संम्मोहन से अप्रभावित ही रहता है गहरे संम्मोहन और मूच्छित अवस्था का प्रभाव भी स्तरानुरुप नहीं होती है।

किन्तु यह तथ्यय है और प्रमाणित अनुभव है कि मनुष्य के अचेतन मन को जाग्रत करने में हिपनोटिज्म का महत्त्व असाधारण रूप से तथा एक मात्र रुप से महत्त्व पूर्ण है। मानव के छिपे रहस्यों को उगलवाने में हिपनोटिज्म अपना सानी नहीं रखता है जो बात या रहस्य मनुष्य की स्वाभाविक मानसिक स्थिति में मनुष्य से पूछ कर जानी नहीं जा सकता है वह गहरे सम्मोहन द्वारा उससे उगलवायी जा सकती है। मानव मन और बुद्धि पर अर्थात् मन पर स्वाभाविक अवस्था में चेतन मन का अचेतन मन पर जो नियंत्रण बना रहता है वह गहरे सम्मोहन में सम्मोहन के प्रभाव से हट जाता है मनुष्य का अचेतन मन म्समोहन के प्रभाव से चेतन मन के नियंत्रण से मुक्त हो जाता है। यही वात किसी भूली बात को याद दिलाते पर लागू होती है द्वितीय विश्वयुद्ध में नाजिमों और किन र ष्टों ने सम्मोहन का युद्ध के लिए बड़ा ही उपमोगी ढंग से प्रयोग किया था। जो बातें अपराधियों, शत्रुजासूसों और महत्वपूर्ण युद्ध बंदियों से यातनाओं या अन्य तरीक़ों से नहीं उगलवायी जा सकी वही बातें सम्मोहन द्वारा सफलता पूर्वक पूछ ली गई। संम्मोहन द्वारा बार-बार सम्मोहित करके व्यक्ति के अचेतन मन को रथारी प्रभाव में लेकर परीक्ष रूप से चेतन मन मन को प्रभावित किया जा सकता है।

सम्मोहन द्वारा अपराधियों की प्रक्रिया का प्रारम्भ लासएजेल्स और स्काटलैंलयार्ड द्वारा आज से पौन दशक पूर्व प्रारम्भ किया गया था। इस संम्बन्ध में किये गये प्रारभिक प्रयोगों के सफलता वर्धक परिणामों ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोगों के क्रम वृद्धि प्रदान की । आज अमेरिका सहित यूरोप के अनेकों देशों में अपराध अन्वेषण में सम्मोहन का प्रयोग सफलता पूर्वक किया जा रहा है ।

पुलिस द्वारा सम्मोहन के अपनाये जाने की प्रक्रिया का प्रारंभ संयोग वंश ही हुआ है अब तो विदेशों में फोरेंसिक विभाग की तरस सम्मोहन का भी पुलिस क्षेत्रों में स्वंतत्र सेल स्थापित होने लगा है । बलात्कार और हत्या प्रयास के अपराध की किकार एक महिला को बेहोश की हालत में उत्तरी आयरलैंड के एक क्षेत्र में पुलिस ने बरामद किया पुलिस ने महिला को डाक्टरी चिकित्सा द्वारा होश में लाने के बाद अपराधी के विषय में काफी पूछताछ की किन्तु मानसिक असंतुल के करण महिला अपने साथ किये गये अपराध का भी पूर्ण रुपेण विवरण नहीं दे पायी तब पुलिक को लगा कि मामला पेंचीदा है शायद पूर्ण स्वस्थ होने पर महिला सही विवरण देने की वजाय विस्मृति का शिकार हो जाय अतएव महिला के एक मित्र द्वारा पुलिस को हिपनोटिस्ट की सहातता लेने के लिये उत्साहित किया गया पुलिस ने ऐसा ही किया फिर तो सम्मोहित अवस्था में महिला ने अपराधी का हुलिया और अपराध स्थल का सही-सही विवरण भी दे दिया फिर पुलिस को अपराधी पकड़ने में अधिक विलम्व नहीं हुआ ।

अब तो इस प्रकार के प्रसंगों की अनेकों घटनाएँ मिल जायगीं । अनेकों रहस्य मय हत्यारे सम्मोहन द्वारा पुलिस की गिरफ्त में पहले जाये और बाद में पुलिस ने उनके विरुद्ध प्रमाण जुटा कर उन्हें अपराध के स्तर अनुसार सजा दिलवायी । संदिग्ध और अस्पष्ट जासूसी के मामले के अपराधियों की विवाद स्पद स्थिति स्पष्टकरने में भी हिपटिनोज्म ने महत्व पूर्ण सहयोगात्मक भूमि का अदा की है । समूह-सम्मोहन-सिद्धांत-प्रतिक्षण-सहयोग जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने हमेशा अपने सहयोगियों को एक सिद्धन्त गुरुमंत्र के रुप में निर्देशित किया । हिटलर कहा करता था

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि अनेकों बार अबाध क्रम से और प्रभावशाली ढंग से यदि बड़े से बड़ा झूठ बार-बार दोहराया जाय तो बार-बार सुनने वाला उसे सच मानने लगता है। उसके यह कहने का अभिप्राय था—कि अभ्यास का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। हिटलर के नाजी विचारधारा प्रशिक्षण शिवरों में नाजी सिद्धातों का अनुनायियों पर अमिट और अपरिवर्तनीय प्रभाव डालने के सदस्यों को सामूहिक रूप से सम्मोहित कर बार-बार विचार-धारा सुना-सुना कर पिलायी जाती थीं बाद में होश लाकर फिर वही बातें पालिश के रूप में दोहरा दी जाती थी। परिणाम स्वरूप कट्टर नाजियों की सेना तैयार हुई जिसका हृदय परिवर्तन और चिंतन परि-वर्तन असंभव था।

हिटलर के प्रयोगों से उत्साहित होकर जापान में भी उसकी नकल की, अपने सैनिकों के दिमाग में सैनिक निर्देश कीलों की तरह ठोंक दिये। हार जाने पर सामूहिक आत्महत्या का सिद्धांत जापानी सैनिकों के दिमाग में ऐसा जड़ दिया था कि वे उसके अनुचित रूप पर सोचने की जगह अधाधुंध पालन पर दृढ़ प्रतिज्ञ हो गये।

यह तो सभी जानते हैं कि युद्ध में पराजित सेना पर दुश्मन की सेना का अधिकार हो जाता है और पराजित सैनिक युद्ध वंदी हो जाते हैं ऐसी दशा में कोई भी देश अपने सैनिकों को न तो आदेश देने की स्थिति में रह जाता है और न सैनिक वाध्य होकर मानने की स्थिति में होता है। वह दुश्मन की जीती हुई सम्पत्ति बन जाता है। पराजित सैनिकों की हत्या उनके भागने के प्रयास या विद्रोह करने पर ही की जाती है प्राय: उनके पक्ष में रहस्य उगलवाने के लिये साम दाम दंड भेद चारों ही नीति-याँ अपनायी जाती हैं।

यह भी सर्व विदित सिद्धाँत है कि जल्दी और अकारण कोई भी मरना नहीं चहता है। वर्मा में पराजित जापानी रेजिनेन्टों के हजारों सैनिक अफसरों, जापानी सैनिकों को यह विश्वास तो बताया ही था कि मित्र राष्टों की सेना उनकी हत्या नहीं करेगी फिर भी हजारो की तादाद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में उन्होंने सामूहिक आत्मा हत्याएँ की इसके पीछे देश प्रेमकी दलील भी सर्व सम्मत विश्वसनीय नहीं हैं। क्या सौ में से एक में भी प्राणरक्षा का मोह जाग्रत न हुआ होगा अवश्य हुआ होगा पर उस पर जवरदस्त रोक लगायी होगी— सामूहिक आत्म सम्मोहन द्वारा पिलाये गये इस सिद्धांत "कि शत्रु के हाथ न पड़कर आत्महत्या करना अनिवार्य कर्त्तव्य है।" वास्तव में विश्व के युद्धों के इतिहास में द्वितीय विश्वयुद्ध में जापानी सैनिकों द्वारा की गयी आत्महत्याएँ बेमिसाल हैं। इसके समानांतर सनिकों द्वारा आत्महत्याओं का उदाहरण उपलब्ध नहीं है। यह सम्मोहन द्वारा सैद्धाँतिक प्रतिक्षण का बेमिसाल नमूना है और हिपनोटिज्स के मस्तिक को असाधारण रूप से प्रभावित करने का एक अनोखा उदाहरण है। नाजियों द्वारा फासिस्ट विचारधारा की अंधभक्ति भी गहन सम्मोहन प्रशिक्षण द्वारा की गई थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४ | हिपनोटिज्म के विषय में महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

विकास की दीर्घ कालीन प्रक्रिया से गुजरने और परिपक्वता प्राप्त करने के बाद भी सम्मोहन के प्रति अविश्वास और शंका का वातावरण बना ही हुका है। इसकी प्रगति और उपलब्धियों को देखने सतझने के बाद लोग इसकी गहराई तक जाने बजाय की इसकी बेबुनियाद बुराइयाँ करते देखे जाते हैं। यह अपरिपक्व मस्तिक केहीन मनोवृत्तियों के परि-चालक है। यहाँ हिपनोटिज्म के प्रति उठने वाली कुछ आम शंकाओं के स्पटीकरण दिये जा रहे हैं।

प्रश्न—क्या सम्मोहन व्यवस्थित और सिद्धाँतवद्ध विषय है ? क्या इसे जो चाहे सीख सकता है ?

उत्तर—वास्तव में सम्मोहन एक विद्या, एक विषय और विज्ञान है। यह मनोविज्ञान से जुड़ा हुआ है। इसका इतिहास शताब्दियों पुराना है। इसने क्रम वद्ध रूप से विकास किया है। इसमें मानव कल्याण की वहु-मुखी क्षमताएँ हैं। कोई भी स्वर मन मस्तिष्क का व्यक्ति इसे सीख सकता है। इसके प्रति भ्राँन्त धाराणएँ बनाने और प्रचारित करने वाले वे ही लोग हैं जो इसे समझने सीखने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं या परिश्रम कर सीखते नहीं। वे इसे छूमन्तर जैसी चीज न पाकर इससे चिढ़कर इसके विरोधी बन जाते है। इसके बाद इसे कोरा प्रचार या प्रपोगेंडा कहकर मन को तसल्ली देते हैं।

प्रश्न—क्या हिपनोटिज्म द्वारा यह संभव है कि व्यवित को हिपनो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टाइज (सम्मोहित) करके उससे उसकी इच्छा विपरीत कार्य या अपराध करवाये जा सकते हैं ।

उत्तर -- इस प्रश्न का उत्तर पूर्ण नकारात्मक नहीं है। इस प्रकार के प्रश्न पर विचार करने के पहले एक छोटा सा सर्व विदित उदाहरण विचारणीय है—यह तो सभी जानते हैं कि शराब पीने के बाद आदमी अपने होश हवास खो बैठता है वह अपनी स्वाभाविक स्थिति में नहीं रहता है लेकिन न सभी अदमी शराब पीकर उछल कूद, झगड़ा या गाली गलौच नहीं करते हैं। नशे में भी आदमी अपने स्वभाव के अनुसार ही आचरण करता है। इसी प्रकार सम्मोहन द्वारा सम्मोहित होने के बाद व्यक्ति को इच्छा शक्ति, स्वभाव और आत्म शक्ति तथा सम्मोहित अवस्था के बीच संघर्ष होता है (केवल उसी स्थिति में जब व्यक्ति के स्वभाव के विपरीत उससे वरणहार या कार्य कराने की चेष्टा की जाती है।

इस आँतरिक अंतरद्वद में यदि व्यक्ति की इच्छा शक्ति आत्मशक्ति पर सम्मोहित अवस्था हावी हो गई तो हो सकता है कि उनके हिपनोटिस्ट को अपने मन माने लक्ष्य को साधने में सफलता मिल जाय अन्यथा व्यक्ति पर किया गया सम्मोहन टूट जायगा और हिपनोटिस्ट अपने गलत उद्देश्य को पूरा करने में असफल हो जायगा साधारण सम्मोहित अव-में माध्यम को उसकी रुचि स्वभाव और आदत के अनुरूप दिया गया निर्देश वह मानता चला जायगा और हिपनोटिस्ट के आदेश का पालन करता रहेगा। लेकिन जैसे ही सम्मोहन कर्त्ता उसे कोई खतरनाक या गलत आदेश जिसे कि वह बुरा समझता है दिया जायगा वह एक दम इनकार देगा और संभव तथा सम्मोहित अवस्था से मुक्त हो जायगा।

एक बार एक हिपनोटिस्ट ने अपने महिला माध्यम को सम्मोहित अवस्था में आदेश दिया कि अपने दोनों हाथ हिलाओ महिला ने वैसा ही किया फिर उसने कहा ब्लाउज के बटन खोल दो महिला ने आदेश का पालन किया फिर सम्मोहन कर्त्ता ने कहा अपने सब कपड़े उतार दो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिला का विवेक इतनी तेजी से जागा कि उसका सम्मोहन टूट गया और वह गुस्से से लाल पीली होने लगी ।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञनिक और सम्मोहन कर्त्ता प्रो० रास ने युवती के हाथ में एक रुल देकर यह देखो एक साँप आ रहा है। वास्तव में सामने रस्सी का टुकड़ा साँप के ढंग से बना कर डालदिया गया था। बस फिर क्या था युवती ने उछल कर रस्सी पर इतनी जोर से बार किया कि तड़ाकू से टूट गयी। लेकिन रूल् के टूटने के साथ ही युवती का सम्मोहन भी टूट गया प्राय: यह देखा गया है कि सम्मोहित पात्र से उसकी इच्छा के विनरीत कार्य कराते ही सम्मोहन भंग हो जाता है। कुछ अपवाह मामलों में अत्यन्त कमजोर अत्मबल वाले व्यक्तियों से हिपनोटिस्ट उसकी इच्छा के विपरीत कार्य कराने में भी सफल होते देखे गये हैं । भारत में और विदेशों में भेंजे हुए हिपनोटिस्टों ने अदम्य असंतुष्ट कसना पीड़ित महिलाओं से यौन संम्बन्ध तक स्थापित कर लिये इस प्रकार के कार्यों में महिलाओं की असंतुष्ट वासना पीड़ित मनोवृत्ति ने ही कुछ सम्मोहन के प्रभाव से और कुछ अपनी कमजोरी के कारण आत्मसर्मपण कर दिया। वास्तव में इन मामलों में माध्यमों की अपनी कमजीरी हिपनोटिस्ट की भावना पूर्ति में सहायका हो गई। लेकिन तीव्र आत्म संयम और आत्म बल वाले व्यक्ति को हिपनोटिस्ट डिगाने में एक दम असफल हो जाते हैं।

इस प्रकार के कायों के कारण हिपनोटिज्म को बदनाम करना उसके साथ अन्यथा करना है। अगर इस प्रकार की घटनाएं घटती भी हैं तो इनमें माध्यम और और प्रयोग कर्त्ता की मनोवृति एकाकार होकर कारण बनते है। हिपोनोटिज्म आदमी को भेड़ बकरी बनाने वाली जादूगरी नहीं है यह तो शुद्ध रुप के मानव कल्याण कारी विज्ञान है यों तों दवा भी गलत प्रयोग से जहर बन जाती है। इसी प्रकार की घटनाओं के लिए सम्मोहन को दोष देना गलत है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रश्न—क्या माध्यम में असहयोग कर उसे असफल भी बना सकता है ?

उत्तर—हिपनोटिज्म पर लिखने वालों ने अनेकों प्रसंगों में इस वात का उल्लेख किया है कि प्रवल अत्मशक्ति और सोचने समझने में तीव्र (व्यक्ति) बुद्धि व्यक्ति जल्दी तथा आसानी से सम्मोहित किये जा सकते हैं लेकिन इसके लिये यह भी आवश्यक है कि माध्यम प्रयोग कर्त्ता के आदेशों पर एकाग्रमन से ध्यान दे। उसे सहयोग 'दे। माध्यम असहयोग करें अपने आपको इस शर्त्त पूर्ण परीक्षण पर लगा दे कि वह अपने आप को सम्मोहित होने नहीं होने देगा मन को प्रस्तुत दायित्व से दूर भगा ले जाय स्वयं को इस अनुभव और चितंन के आधीन कर दे कि न तो यह माध्यम है और न वह किसी सम्मोहित के सामने है। सम्मोहक कुछ आदेश दे वह किसी अन्य क्षेत्र की कल्पनाओं में खो जाय किसी दूसरी दुनियाँ में विचरने लगे।

इस प्रकार असहयोग कर अच्छे से अच्छा सम्मोहन का प्रभाव शाली कार्यक्रम बेकार किया जा सकता है। वास्तव में सम्मोहन की सफ ताकठिन है जो कि बिना माध्यम और प्रयोग कर्त्ता आपसी ताल मेल के आ ही नहीं सकती है। माध्यम के लिये न सम्मोहित हो ना कोई मुश्किल बात नहीं है। बस वह प्रयोग कर्त्ता के प्रयोगों के प्रति यदि स्वयं को अस्थिर बना दे। लेकिन यदि पूर्व वर्णित खामियाँ स्वतः ही माध्यम में प्रयोगों में सहयोग नहीं दे सकता है।

प्रश्न—सम्मोहन द्वारा वंभा जड़ मूर्ख, अल्प बुद्धि, टूटी फूटी समझ वाले या उससे कम भी सम्मोहित किये जा सकते हैं ? क्या उपरोक्त कमियों वाले व्यक्तियों। ठीक होने में सम्मोहन कुछ सहायता कर सकता है।

उत्तर—सम्मोहन को उथले स्तर पर जानने वाले या उड़ती हुई रुचि रखने वाले अधिसंख्यक लोगों का आम विश्वास है कि सम्मोहन द्वारा ऐसे व्यक्ति जिनमें बुद्धिमात्ता व समझदारी का अभाव है छोटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिमाग के हैं या कुछ जहन हैं सम्मोहन द्वारा आसानी से सम्मोहित किये जा सकते है। उनके विचार में इसी तरह के लोग सम्मोहन द्वारा सम्मोहित किये जा सकते हैं। सम्मोहन ज्यादा समझदार ऊंचे स्तर के रूप बूझ वाले प्रगति शील व्यक्तियों के रुचि लेने की चीज नहीं है। सम्मोहन को थोड़ा बहुत उपयोग समझने वाले यहाँ तक कि इनकी संतोष जनक औसत दर्जे की जानकारी रखने वाले लोग तक इसी भ्राँत धारणा के शिकार हैं। सम्मोहन के प्रति उपरोक्त उपर वर्णित विचार धारा भ्राँत और निर्मूल तथा एकदम गलत स्तर की है। पिछले अध्यायों में हमने सम्मोहन के चिकित्सा संम्बन्धी एवं अन्य बहुमुखी उपयोगी रूपों पर विचार कर लिया है। इसलिये इससे लाभा ण्वित होने वाले इसमें रुचि रखने वाले व्यक्ति को कम से कम औसत बौद्धिक स्तर का तो होना ही चाहिये।

जड़ मूर्ख, अल्पबुद्धि तथा कमजोर दिल दिमाग के आदमी में इतनी समझदारी भी नहीं होगी कि वह प्रयोग कर्त्ता के निर्देशों को समझ कर उनका पालन कर सके वह प्रयोग में सहयोग नहीं दे सकता है। वास्तव में माध्यम बनने वाला व्यक्ति जितना समझदार और बुद्धिमान होगा उतना ही वह प्रयोग कर्त्ता के लिये उपयोगी होगा। क्योंकि समझदार व्यक्ति ही प्रयोग कर्त्ता के निर्देशों पर अपने एकाग्र चिन्तता उत्पन्न कर सकता है। आदेशों पर स्वयं को केन्द्रित कर सकता है। पागल तथा जड़ मूर्ख व्यक्ति ऐसा नही कर पाये गें। वे बुद्धि के अभाव में एक ही मनः स्थिति रखते हैं उनसे किसी सम्मोहन कर्त्ता को उचित और आवश्यक सहयोग प्राप्त होने की आशा करना व्यर्थ है।

इस प्रकार की भांत धारणा भी आधार हीन है कि सम्मोहन के प्रयोग द्वारा बुद्धिहीनों में बोद्धिकता उत्पन्न की जा सकती है उनकी बुद्धि का विकास किया जा सकता है। सम्मोहन द्वारा मानसिक गुत्थियाँ सुलझायी जा सकती हैं कुछ मानसिक रोग ठीक किये जा सकते हैं। लेकिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गहरे पागलों को ठीक करना, जड़ मूर्ख में बुद्धि उत्पन्न करना असंभव है। सम्मोहन मानसिक चिकित्सा पद्धतियों में नहीं है। सम्मोहन के द्वारा मानसिक कमियाँ छोटी मोटी तो दूर हो सकती हैं।

प्रश्न—क्या अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि और बेहद समझदार व्यक्ति ही किसी को सम्मोहन कर सकते हैं। साधारण बुद्धिवाले नहीं?

उत्तर—यह सवाल भी बहुत से लोगों के दिमाग में घूमता रहता है वे सोचते हैं कि हिपनोटिस्ट तो तभी बना जा सकता है जब असाधारण समझदारी हो। वास्तव में हिपनोटिज्म सीखने के लिये यह जरूरी नहीं है कि व्यक्ति में असाधारण बुद्धिमानी हो माध्यम श्रेणी का व्यक्ति जैसे कि साधारण सामाजिक प्राणी हम सभी हैं, हम सम्मोहन के प्रयोग कर सकते हैं इस विद्या को सीख सकते हैं। इसके अलावा हम अपने जैसे किसी अन्य व्यक्ति को सम्मोहन विद्या सिखा सकते हैं।

सम्मोहन विद्या को सीखने में साधारण पढ़ा लिखा समझदार व्यक्ति पर्याप्त है। किसी सम्मोहन कर्त्ता को अपने माध्यम पर सम्मोहन का प्रयोग करते हुए देख कर ही साधारण व्यक्ति सम्मोहन की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त कर सकता है। क्योंकि इसके प्रयोग में न तो तंत्रमंत्र का प्रयोग किया जाता है और न किसी प्रकार की पेंचीदा तकनीक अपनायी जाती है जो ऊपर से देखने पर समझ में न आ सके। यह विचार धारा और मान्यता भ्रम पूर्ण है कि असाधारण क्षमता या दैवी-शक्ति सम्पन्नता सम्मोहन के लिये आवश्यक है। किसी भी हिपनोटिस्ट में सम्मोहन बनने के पूर्व सिद्धि, चमत्कार या दैवी शक्ति सम्मोहन की बात न तो पहले से मौजूद रहती है और न बाद में आती है।

सम्मोहन विद्या में क्षमता उर्जित करने के लिये इस प्रकार की कोई शर्त नहीं है। सम्मोहन विद्या सीखने के लिये केवल विषय का अध्ययन प्रयोगों का अभ्यास और अपने विषय की साधिकार जानकारी मात्र पर्याप्त है। इस प्रकार की स्थिति अर्जित करना कोई मुश्किल या असंभव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थिति नहीं है संम्मोहन की पुस्तक पढ़कर सम्मोहन की विधियाँ सीख-कर इस प्रकार की स्थिति बनाई जा सकती है। लेकिन यह बता देना आवश्यक है कि सम्मोहन विद्या को सीखने लिये लगन, अभ्यास, समझ-दारी, प्रयोगों में तन्मयता, प्रबल इच्छा शक्ति और दृढ़ आत्म विश्वास का होना पूरी तरह जरूरी है।

प्रश्न—क्या ऐसी दुर्घटना भी हो सकती है कि कोई व्यक्ति सम्मो-हित होने के बाद जगे ही नहीं। क्या सम्मोहन निद्रा स्वयं: भी भंग हो सकती है।

उत्तर—हिपनोटिज्म के प्रयोग कर्त्ता द्वारा माध्यम को सफलता पूर्वक सम्मोहित किया जाना ही मुख्य समस्या और दायित्व होता है। पात्र के मोहनिद्रा मुक्त होने की कोई समस्या नहीं है। कोई हिपनोटिस्ट यदि अपने माध्यम को सम्मोहहित अवस्था में ही छोड़कर चला जय तो भी घबड़ाने या भयभीत होने की बात नहीं है, सम्मोहित माध्यम को सम्मोहित अवस्था में ही प्रयोग कर्त्ता द्वारा छोड़कर चले जाने से माध्यम के साथ स्थापित उसका स्वाभाविक आत्म संम्बन्ध भंग हो जाता है। स्वाभाविक अर्कषण टूट जाता है। इस दशा में अधिक से अधिक इतना होता है कि संमोहन की मोहनिद्रा समाप्त होकर स्वाभाविकनिद्रा में परिवर्तन हो जाती है।

सम्मोहन प्रयोग क्रम से आर्कषित पात्र की मोहनिद्रा विकसित होकर मात्र दो ढ़ाई घंटे की स्वाभाविक निद्रा में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार कीं नींद पूरी हो जाने के बाद पात्र स्वयं ही जाग जाता है तथा जागने पर आप में एक विशेष स्पूर्ति और उत्साह सहित तरो ताजगी महसूस करता है

यह बात संमोहन की तीनों प्रकार की अस्वथाओं पर लागू होती है। समोहन की मोहनिद्रा स्वाभाविक निद्रा तो होती है वह एक प्रकार की आरोपित तंत्रावस्था होती है और प्रयोग कर्त्ता और माध्यम का संम्पर्क

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भंग होते ही यह तंत्रावस्था स्वाभाविक निद्रा में परिवर्तित हो जाती है। बस माध्यम और प्रयोग कर्त्ता के बीच किसी भी कारण से सम्पर्क भंग होने पर मात्र यही परिवर्त्त न होता है। यदि ऐसी स्थिति आ जाय तो घबराने की या आशंकित होने की कोई जरूरत नहीं है लेकिन इतना अवश्य है कि माध्यम और प्रयोग कर्त्ता के बीच संम्पर्क चाहे किसी कारण से टूटा हो पर सम्मोहन की मोहनिद्रा में निद्रित पात्र को बिलकुल न छोड़ा जाय खास कर ऐसी स्थिति में जबकि सम्मोहन की मोहनिद्रा स्वाभाविक निद्रा में परिवर्तित हो रही हो अथवा परिवर्तित हो चुकी हो उसे आराम से सोने दिया जाना चहिये उसकी सम्मोहन की मोहनिद्रा समाप्त होने में जितनी नींद की खपत होगी वह खपत पूरी होने के बाद वह स्वयं ही जाग जायगा।

हल्के सम्मोहन में परिवर्तन निद्रा के अनुपात से गहरे सम्मोहन की निद्रा का अनुपात कुछ आवश्य ही अधिक है लेकिन ज्यादा नींद भी इस विषय में कोई चिन्ता की बात नहीं है सबकुछ अपने आप ठीक हो जाता है घबराने की कोई जरूरत नहीं है और न किसी इलाज या डाक्टर की ही जरूरत है। मोहनिद्रित व्यक्ति के स्वतः जागने में कोई कठि-नाई नहीं है। ऐसी दशा में प्रयोग कर्त्ता द्वारा मोहनिद्रा भंजक संकेत की उसके अभाव में कोई अन्य व्यक्ति भी अपना कर पात्र की मोहनिद्रा को निरापद रूप से बंग कर सकता है प्रायः ऐसा भी संभव है कि प्रयोग कर्त्ता मोहनिद्रा भंग करने कराने की जिम्मेदारी माध्यम पर डाल कर भी अपने दायित्व से मुक्त हो सकता है। वह कह कर जा सकता है कि तुम जब तीन वार ताली बजाओगो पाँच तक की गिनती गिनोगे तो तुम्हारी मोहनिद्रा समाप्त हो जायगी।

इस प्रकार इस आशंका का भी निरा करण हो गया है कि सम्मोहित होने के बाद जागना कोई समस्या है या सम्मोहित व्यक्ति जागेगा ही नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रश्न—क्या मोहनिद्रा में घटित घटनाओ और बातों की जानकारी पात्र को रहती है। क्या वह मोहनिद्रा के अपने कामों को होश में किये गये कामों को सम्मोहन मुक्त होने पर पूरा-पूरा याद रखना है।

उत्तर—इस प्रश्न का उत्तर भी तीन स्तरों पर विचारणीय है क्योंकि इसने सम्मोहन की तीन अवस्थाएं बतायी हैं—हल्का-गहरा और मूर्छित यानी निद्राचारी। इस प्रश्न का उत्तर भी सम्मोहन के तीनों स्तरों पर भिन्न-भिन्न है

हल्के सम्मोहन में जिसमें कि माँस पेशियाँ कठोर हो जाती हैं स्नायु तनाव उत्पन्न हो जाता है सम्मोहन काल में घटी सभी घटनाएँ और पूछी गई बातें साधारण तथा याद रहती हैं। यहाँ स्मृति को विमृति रंच मात्र भी प्रभावित नहीं करती है। कभी-कभी कुछ बातें नहीं भी याद रहती है आमतौर पर इसमें ऐसा नहीं होता है कि वह सभी बातें भूल जाय कुछ भूल भी जाता है कुछ याद भी रहता है।

इसके विपरीत गहरे सम्मोहन में (eatalaptie stage) तथा निद्राचारिता की अवस्था में घटने वाली सभी घटनाओं को माध्यम भूल जाता है। उसे अपने से कही गई बातें एक दम ही याद नहीं रहती हैं अर्थात् सम्मोहन की स्मृति और अनुभव होश में आने पर पूर्ण विस्मृति में परिवर्तन हो जाता है। लेकिन यहीं यह तत्पर्य भी विचारणीय है कि सम्मोहन की अवश्था में प्रयोग कर्त्ता माध्यम में इस प्रकार का आदेश या निर्देश गहराई से दे दे कि सम्मोहन अवस्था में किये गये अपने हर काम को अपने से कही गईराई को तुम्हे होश में आने पर याद भी रखना है तो वास्तव में माध्यम को सबकुछ याद बना रहेगा। यह वास्तव में बड़ी ही बिचित्र बात है तथा नियम और क्रम बद्ध संभावना के विपरीत सी लगती है पूर्णतया सत्य।

लेकिन सम्मोहन की चाहे कोई अवस्था हो पात्र को प्रयोग कर्त्ता स्पष्ट रुप से यह आदेश दे दे कि सम्मोहन की अवस्था में किये गये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने प्रत्येक क्रिया कलाप को होश में आने पर तुम्हें भूल ही जाना है। सम्मोहित अवस्था की कोई भी बात यामें रकखो— कि तुम्हें होश में याद नहीं रखनी है। तो वास्तव में माध्यम सारी बातें भूल ही जायगा। उस पर विस्मृति इस कदर हावी हो जायगी कि उसे कुछ भी बिलकुल याद नहीं रहता बह सब कुछ पूर्णतया भूल जायगा। कि उस एक विस्मृति इस कदर हावी हो जायगी कि वह भी भूल जायगा कि उसे एक माध्यम के रूप में सम्मोहित भी किया गया था। वह अपने सम्मोहित किये जाने की बात एकदम ही भूल जायगा। उसे बहुतेरा विश्वास दिलाया जाय चाहे जितने प्रयास पूर्वक समझाया जाय कि उसे सम्मोहित किया गया था सम्मोहित अवस्था में उससे ये ये बातें कहीं गई थी उसने ये कार्य किये तथा इस आदेशों का पालन किया था तो वह कहेगे मुझे कुछ भी याद नहीं है मुझे यह भी एक दम याद नहीं है कि कभी मुझे सम्मोहित भी किया गया था। वह सारी बातों को अस्वीकार करते हुए एकदम नकार देगा।

इस प्रकार इस प्रश्न के उपर विचार करके यह बात स्पष्ट हो गई कि मोहनिद्रा में स्मृति को स्थायित्व भी प्रदान किया जा सकता है और प्रयत्न पूर्वक विस्मृति को भी आरोपित किया जा सकता है। वास्तव में सम्मोहन की अनेक बातों पर एकदम निर्णय की स्थिति संभव ही नहीं है क्योंकि वे नकारात्मक और स्वीकारात्मक दोनों ही स्थितियों आप्रने Rcsponse प्रभाशाली रूप में प्रस्तुत करती हैं।

प्रश्न—क्या सम्मोहन की कोई ऐसी पद्धति भी है जिसमें प्रयोगकर्त्ता और माध्यम की जरुरत या झंझट न हो, बिना किसी सम्मोहक की सहायता के क्या स्वयं ही अपने अपको सम्मोहित किया जा सकता है।

उत्तर—सम्मोहन के विषय जिज्ञासुओं द्वारा प्रायः यह प्रश्न भी पूछ जाता है कि ऐसा भी हो सकता है अकेले ही माध्यम और प्रयोग कर्त्ता के दयित्य का निर्वाह हो जाय। वास्तव में यह भी महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रश्न का एक मात्र उत्तर आत्म सम्मोहन है। इसमें न तो किया प्रयोग कर्त्ता और माध्यम एक साथ बना जा सकता है। इस प्रकार दोनों जरुरतों को अलग-अलग दो व्यक्तियों के रुप में पूरा करने की जरुरत से छुटकारा मिल जाता है।

इसके अलावा व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जब स्वयं को सम्मोहित कर सकता है। इस प्रकार का प्रश्न का कठिनाई से बचने के लिये पूछा जाता है कि माध्यम और प्रयोग कर्त्ता के चुनाव और मिलन की झंझटबाजी से बचा जा सके।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि सम्मोहन योग की अत्यन प्रारभिक अवस्था है। सम्मोहन विद्या में आत्म सम्मोहन का भी सशक्त और स्पष्ट विधान है। आत्म सम्मोहन में कोई भी अपने पुस्तक में दिये निर्वेशों को समझ कर आत्म सम्मोहित हो सकता है। योग विद्या में आत्म सम्मोंहन को समाधि कहा जाता है। समधि अर्थात् स्वत: स्थापित ध्यान आत्म सम्मोहन ही है। भारत के ऋषि मुनि अत्यन्त प्राचीन काल में कई-कई दिनों की समधि लगा लेते थे इस प्रकार की दीर्घ कालीन समाधियाँ आत्म सम्मोहन के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। स्वयं सम्मोहन विद्या भी स्पष्ट रूप से तथा सार रुप से एक प्रकार का आत्म सम्मोहन ही है आत्म सम्मोहन विद्या सार रुप से अलग-अलग नामों के आधीन एक ही स्थिति है।

आत्म सम्मोहन ही सम्मोहन विद्या का सार रूप और मूल आधार तत्व है। कोई भी व्यक्ति विना किसी अन्य व्यक्ति की सहायता के स्वयं ही अपने मन को निर्देश देकर स्पष्ट तथा प्रभावशाली रूप में आत्म सम्मोहित हो सकता है। आत्म सम्मोहन घर बैठे किसी भी साफ-सुथरे हवादार शांति पूर्ण स्थान पर बैठकर किया जा सकता है इसमें कहीं भी आने-जाने या किसी उपकरण को ले जाने ले आने का झंझट नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन के प्रयोग में सम्मोहक माध्यम को मोह निद्रित करते समय उसे मोह निद्रा में सो जाने का आदेश देता है सम्मोहक द्वारा प्राप्त आदेश को पात्र अपने अचेतन मन को आत्म निर्देशित करता है यह क्रिया मौन निशब्द पूरी कर ली जाती है और माध्यम मोह निद्रित हो जाता है। आत्म सम्मोहन में भी मौन आत्म निर्देश की प्रक्रिया पूरी कर पात्र स्वयं को आत्म सम्मोहित करता है ।

आत्म सम्मोहन को न कर पाने की स्थिति में ही माध्यम बनना पड़ता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बिना किसी दूसरे व्यक्ति की सलाह मशविरे के अपनी समस्या हल नहीं कर पाते हैं। वे दूसरे के प्रति आकर्षित बने रहते है परमुखापेक्षी होते हैं तथा स्वतः आत्म केन्द्रित नहीं हो पाते इस प्रकार के व्यक्तियों को सम्मोहन का प्रयोग करते समय अवश्य ही किसी सम्मोहक की आवश्यकता पड़ेगी ।

इसके विपरीत ऐसे लोग जो गंभीर, एकाग्र चिन्ह वाले, शांति प्रिय तथा व्यवस्थित मन, स्थिति वाले होते हैं बड़े आराम से आत्म सम्मोहित हो सकते हैं। उन्हें किसी व्यक्ति का माध्यम बनकर सम्मोहित होने की जरूरत नहीं है। अस्थिर चित्त चंचल मन वाले व्यक्ति के लिए आत्म सम्मोहन कठिन और असफल प्रयोग होगा। ऐसा व्यक्ति आत्म सम्मोहन की जो बुनियादी शर्तें हैं उन्हें जब तक पूरा नहीं करेगा तब तक आत्म सम्मोहित नहीं हो सकता है। आत्म सम्मोहन के प्रयोग द्वारा व्यक्ति आत्म भाषी और गंभीर स्वभाव का भी बन जाता है। ध्यान और समाधि आत्म सम्मोहन ही हैं और यह एकाग्रता और गंभीरता तथा स्थिर चित्तता की अनिवार्य लगाते हैं।

आत्म संयम कहिये या आत्म निर्देशन कहिये पर यह सब हैं तो एक प्रकार से पूर्ण तथा ऐच्छिक क्रियाएँ इन पर बाहरी प्रभाव या दवाव की स्थिति कहीं भी नहीं है। स्वयं ही स्वयं को आदेश देना है और स्वयं ही उस आदेश का पालन करना है। आत्म संमोहन-आत्मबल-दृढ़ इच्छा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्ति-प्रबल नैतिकता-आदर्श तथा सत्य प्रियता की भावना को सबल बनाते हुए हमारी आध्यात्मिक शक्तियों को हमारे जीवनोपयोगी कार्यों की गतिशीलता और त्तियान्वयन पद्धति से जोड़ देता है। प्रसिद्ध मना-विज्ञानिकों तथा—मेग्डूगल, फ्रायड रास् इत्यादि ने आत्मसम्मोहन और आत्म निर्देशन को पूर्ण तथा ऐच्छिक क्रिया माना है।

अस्थिर चित्तता, चिन्ताओं तनावों से अनिवार्य रूप में छुटकारा पाने के लिए आत्म सम्मोहन का प्रयोग पूर्ण अचूक और निरापद स्थिति है। आत्म सम्मोहन के निरंतर और गहन अभ्यास द्वारा स्थूल से सूक्ष्म को पृथक् कर ध्यान द्वारा दूरस्थ स्थानों पर भी आया जाया जा सकता है। किसी दूरस्थ स्थान पर जाकर स्थिति निरीक्षण भी किया जा सकता है।

आत्म सम्मोहन के दीर्घ अभ्यास की साधना द्वारा ही भारतीय योगी तया ऋषि मुनि एक ही स्थान पर बैठे-बैठे ब्राह्माण्ड के हालचाल जान लिया करते थे वे समाधि द्वारा रहस्य मयता को उजागर कर लेते थे। किसी के मन की बात उसके भूत भविष्य का ज्ञान भी इसी आत्म सम्मोहन द्वारा सरलता से प्राप्त कर लेते थे। आत्म सम्मोहन मनुष्य की आत्मा को शक्तिशाली बना कर उसे दैवी शक्तियों का स्वामी बना देता है। सांसारिक वासनाओं मोह माया पर नियंत्रण प्रदान कर संत और महा-पुरुष बना देता है। आत्म सम्मोहन में अगाध शक्तियों का भंडार छिपा हुआ है केवल साधना और अभ्यास की आवश्यकता है।

शंकाओं का निवारण :

पूर्व उल्लिखित प्रश्नों और उनके उत्तरों द्वारा सम्मोहन के स्वरूप और बाधाओं तथा भ्रांतियों सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो गया है। अब इस पर शंका करने अविश्वास करने की कोई स्थिति नहीं है। इसके साथ ही इसका कोई पहलू अब ऐसा नहीं बचा है जिसे अस्पष्ट माना जा सके। इतना सब लिखने के बाद भी हो सकता हैं किसी प्रकार की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई शंका किसी के मन में शेष रह गई हो क्योंकि शंका करना मनुष्य की स्वाभाविक आदत है इसलिए हम पाठकों की शंकाओं को और भी निर्मूल करने उन्हें आश्वस्तता तथा विश्वास प्रदान करने के लिए कुछ पशु-पक्षियों पर सम्मोहन के प्रभाव तथा पद्धति की चर्चा कर रहे हैं ।

पशु-पक्षियों पर सम्मोहन का प्रभाव—

मनुष्य जीवन और मानव समाज से हिले-मिले कुछ ऐसे पशु-पक्षियों की चर्चा हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो आसानी से सम्मोहित किये जा सकते हैं। ऐसे पशु-पक्षी जो कि मनुष्य से हिले-मिले हैं, जिनमें मनुष्य के प्रति आदर, श्रद्धा तथा प्रम होने के साथ ही आज्ञा पालन की भी प्रवृत्ति है। जो मनुष्य के आदेशों का बड़ी तत्परता से पालन करते हैं अथवा बहुत कम विरोध करते हैं सरलता से सम्मोहित हो जाते हैं। इनमें मनुष्य के प्रति किसी प्रकार की हिंसक भावना नहीं होती है मनुष्य से विपरीत योनि का होते हुए भी मानवीय साहचर्य की उधम लालसा होती हैं। वे मनुष्य की रुचि, इच्छा तथा आदेश के अनुसार कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए —गाय, बैल, कुत्ते इत्यादि यद्यपि मनुष्य की भाषा से अनभिज्ञ होते है मनुष्य की बोली नहीं बोल पाते हैं फिर भी मनुष्य द्वारा दिये गये किसी भी आदेश का पालन करते हैं इनमें थोड़ी बहुत समझदारी भी होती है। इन्हें आवाज देकर बुलाया जा सकता है आदेश देकर रोका जा सकता है या कहकर कोई भी छोटा-मोटा काम करवाया जा सकता है। कुछ जंगली पशु भी ऐसे हैं जो मनुष्य के आदेशों का पालन करते हैं। फालतू जानवरों में घोड़े, ऊँट, बन्दर इत्यादि मनुष्य के आदेश पर काम करते हैं। इसी प्रकार जंगली जानवरों में हाथी, भालू, रीछ इत्यादि भी पालतू बनाकर आदेशानुसार कार्य करते हैं। वास्तव में इस प्रकार के सभी जानवर पालतू बनाकर सरलता से सम्मोहित किये जा सकते हैं। भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों न पशु सम्मोहन में भी बड़ी दक्षता प्राप्त कर ली थी। उनके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहन के प्रभाव में आकर हिंसक पशु अपनी प्राकृतिक हिंसा प्रवृत्ति को त्याग कर अहिंसक और शांति प्रिय तक बन जाते थे ।

सम्मोहन का मुर्गे पर प्रभाव—

सन् 1646 में लिखी गई। आर्स मैग्नालूसी। नामक पुस्तक के लेखक ऐनेसियन किर्चर ने अपनी इस पुस्तक में लिखा है कि एक मुर्गे की टाँगें बांधकर उसे जमीन पर लिटा दिया जाये और आगे सफेद चाक से रेखा खींच दी जाये तो कुछ ही क्षणों में मुर्गा गहरे सम्मोहन के प्रभाव में आकर पूर्णतया सम्मोहित होकर निस्पंद हो जायेगा। इसके वाद यदि उसकी दोनों टाँगें खोल दी जायें और खोलकर उसे चलने के लिए प्रेरित किया जाये तो भी वह सम्मोहन के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पायेगा जिससे कि वह चलता-फिरना तो दूर रहा हिल-डुल पाने में भी असमर्थ होगा । ध्यान रहे कि मुर्गे-मुर्गी जल्दी सम्मोहित होते हैं और शीघ्र ही गहरे सम्मोहन में पहुँच जाते हैं। सम्मोहन की यह पद्धति आज से ढाई तीन सौ वर्ष पहले ही प्रचलित होकर लोक प्रिय बन गये थे इसे मनोरंजक खेल के रूप में अपनाकर मेलों इत्यादि में बड़े प्रदर्शन किये जाते थे । लोग इन्हें चाव से देखते और चकित होते थे ।

मुर्गे के सम्मोहित होने में सैद्धांतिक वैज्ञानिकता—

सम्मोहन विद्या सीखने की ओर आकर्षित व्यक्ति इस बात के प्रति जिज्ञासु होंगे कि चाक् द्वारा मुर्गे को कैसे सम्मोहित किया गया चाक की रेखा तथा मुर्गे के सम्मोहित होने के पीछे क्या वैज्ञानिक आधार है। इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण यह है कि जब मुर्गे के आगे चाक् द्वारा रेखा खींची जाती है तो उसकी आँखें चाक् की रेखा पर केन्द्रित हो जाती हैं और वह हिलडुल नहीं पाता हैं मुर्गे के मस्तिष्क में आँखों की स्थिति पर नियंत्रण करने वाला केन्द्र तथा निद्रा पर नियंत्रण रखने वाला केन्द्र एक दूसरे के अत्यन्त समीप होता है। मस्तिष्क के अन्दर आँखों पर नियंत्रण करने निर्देश देने वाला केन्द्र जो कि शरीर के अन्य अवयवों को गतिशीलता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदान करता है, उसके क्रियाकलाप और गतिशीलता में बाधा उत्पन्न हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप मुर्गे पर लकवे जैसे लक्षण छा जाते हैं और निष्क्रिय होकर पड़ा रहता है।

मुर्गे, मुर्गी को हिपनोटाइज करने की पद्धति का ज्ञान पोलट्री फार्म चलाने वाले अनेकों मुर्गी पालन कर्ताओं की जानकारी में है। मुर्गी अपनी पसंद के किसी भी मनचाहे स्थान पर अंडे देती है इसके बाद कुछ दिन तक अंडे 'सेती' रहती हैं। यानि कि अंडें को अपनी गर्मी द्वारा उसमें बच्चा बनने की क्रिया में प्रकृति की सहायता करती रहती है। इसी समय यदि मुर्गी पालक की किसी अन्य मुर्गी के अंडों को सेने के लिए इसी मुर्गी की आवश्यकता पड़ जाती है तो मुर्गी पालक मुर्गी को उसके अंडों के ऊपर से उठाकर उसका सर उसके पंखों के बीच में दबाकर कुछ देर तक चारो तरफ हिलाता-झुलाता रहता है इस क्रिया को कुछ देर तक दोहराते रहने के बाद मुर्गी सम्मोहित होकर मोहनिद्रा में लीन हो जाती है।

इसके बाद मोह निद्रा में लीन होने के कारण स्मृति विभ्रम का शिकार हुई इस मुर्गी को मुर्गी पालक अपनी अभीष्ट मुर्गी के अंडों पर इसे सेने के लिए बिठा देता है। अब जब मुर्गी सम्मोहन निद्रा से जागती हैं तो उसे अपने पहले वाले अंडों और उसके रक्खे होने की जगह की कोई याद नहीं रहती है वह इन्ही अंडों को अपने अंडे समझ कर प्रेम पूर्वक सेती रहती है।

खरगोश को सम्मोहित करने की विधि—

खरगोश बिल्ली के आकार का कोमल तथा रोएँ दार चुलबुला होता है यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर फुदकता हुआ हरी-हरी घास चरता रहता है। खरगोश के पीछे से जाकर इसकी चारों टाँगें पकड़कर उठा लीजिये। ध्यान रहे कि आप उसके सामने से न जाये और वह आपको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देख भी न पाये फिर उसकी अँगली दोनों टाँगों के बीच की खाली जगह में सर को कर दीजिये खरगोश की दोनों आँखें बंदकर उसकी चारों टांगों सहित उसे हवा में कुछ देर तक चक्राकार घुमाते रहें फिर किसी जगह पर लिटा दें खरगोश सम्मोहन के प्रभाव में आकर काफी देर तक निष्क्रिय पड़ा रहेगा। खरगोश को सम्मोहित करने में मुर्गी की अपेक्षा कुछ समय लगता है। इसके बाद खरगोश को सम्मोहन मुक्त करने के लिए खड़ा करके हवा में दो-तीन बार उछाले जाने के बाद वह सम्मोहन मुक्त हो जायेगा।

प्राचीन ऋषि मुनि दृष्टि सम्मोहन से वनराज शेर तक को आसानी से सम्मोहित कर देते थे। शेर उनसे आंखें चार होते ही दुम हिलाता हुआ अपने अगले पंजे फैलाकर उनके सामने बैठ जाया करता था। यह दृष्टि सम्मोहन का ही उदाहरण है। दृष्टि सम्मोहन की दक्षता भी आत्म सम्मोहन में प्रवीणता का एक अंग है। सर्प, हिरण इत्यादि संगीत की स्वर लहरी से सम्मोहित होकर अपनी सुध-बुध भूल जाते हैं। हिरण को वीणा की स्वर लहरी और बाँसुरी अत्यन्त प्रिय है। यह नाद संगीत से खिंचा चला आता है और पकड़ लिया जाता है। भयानक विषधरों को सँपेरे बीन की धुन पर आकर्षित कर सम्मोहित कर लेते हैं तथा पकड़ लेते हैं। यह सब सम्मोहन के ही रूप हैं किसी भी चीज अथवा स्थिति के प्रति आकर्षित होकर उसमें तन्मय होकर अपनी सुध-बुध भूल जाना एक प्रकार का सम्मोहन और मोहनिद्रा है। संगीत द्वारा तथा वाद्ययंत्रों के द्वारा अनेकों पशुओं को साधारण से लेकर गहरे सम्मोहन तक की स्थिति में लाया जा सकता है। आप इसे सम्मोहन ही मानें जो वाद्य यंत्रों के ध्वनि माध्यम द्वारा उत्पन्न किया जाता है।

सर्प को सम्मोहित करने की विधि—

सर्प एक विषैला जन्तु है किन्तु इसे भी आसानी से सम्मोहित किया जा सकता है केवल अन्तर यह है कि सर्प को सम्मोहित करते समय यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात चेतावनी के रूप में हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि सर्प को याद सम्मोहित करना पड़े तो उसे कभी भी हल्के सम्मोहन में न लाकर गहरे सम्मोहन में लाना चाहिये सर्प के लिए 'गहरा सम्मोहन ही उपयुक्त है।

सर्प को अचानक लकड़ी से उसकी गर्दन के पास छूकर सम्मोहित किया जा सकता है। इसके अलावा सर्प को उँगलियों से छूकर भी सम्मोहित किया जा सकता है। ध्यान रहे कि इस प्रकार सम्मोहित किया जाने वाला सर्प पालतू होगा। जंगल से विचरते भयानक विषधर की गर्दन के पास लकड़ी या उँगलियों से छूकर सम्मोंहित होने की कल्पना करना खतरनाक है। वास्तव में सर्प को आत्म सम्मोहन का मँजा हुआ व्यक्ति दृष्टि सम्मोहन द्वारा सरलता से गहरे सम्मोहन या मूर्छित सम्मोहन की स्थिति में ला सकता है। सर्प को उसकी गर्दन के पास लकड़ी या उँगलियों से छूकर सम्मोहित करने के लिए अचानक छूना चाहिये। इसी प्रकार सर्प को सम्मोहन से मुक्त करने के लिए उसकी गर्दन से पास लकड़ी से अचानक जोर से आघात करना चाहिए।

हिंसक जन्तुओं में सर्प सर्वाधिक संवेदनशील और समझदार हैं। यह मनुष्य द्वारा कही गई बातों को समझता है। सँपेरे साँप की आंखों में आँखें डालकर जब पूर्ण तन्मयता से मधुर स्वर लहरी में बीन बजाते हैं तो साँप सहज ही हल्के सम्मोहन की अवस्था में पहुँच जाता है। तन्मयता की चरमावस्था एक प्रकार का सम्मोहन ही है। स्कैंडनेविया में पाया जाने वाला विष रहित लम्बा सर्प जिसे वहाँ के लोग फौलादी साँप या स्टील स्नेक (steelsnake) कहते हैं अक्सर तन कर सीधा खड़ा होता है और काफी लम्बा ऊँचा खड़ा हो जाता है। इसे यदि सम्मोहित किया जाये तो सम्मोहित सर्प सीधा तनकर खड़ा हुआ ऐसा प्रतीत होगा कि किसी ने उसे बनाकर वहाँ खड़ा कर दिया है। इसे तनकर सीधे खड़े हुए हालत में (जब वह सम्मोहित स्थिति में हो) इसके शरीर के किसी भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिस्से पर यदि जोर से आघात पहुँचा दिया जायेगा तो वह कांच के टुकड़ों की तरह टूटकर खंड-खंड होकर बिखर जायेगा।

हिपनोटिज्म पर अब तक की गई विस्तारपूर्ण चर्चा के आधार पर अब इस विषय के प्रति आकर्षित होकर रुचि लेने वालों को इसकी वास्तविकता पर विश्वास कर लेना चाहिये। इस विषय पर अब तक की गई सविस्तार चर्चा से इसके प्रति शंकाओं और अविश्वासों का सभी स्तरों पर पर समापन हो जाना चाहिये। हिपनोटिज्म वास्तव मे प्रकृति के आधारभूत सिद्धांतों से प्रेरित क्रमिक विकासगति से विकसित हुई एक प्रमाणित विद्या है। यह हाथ की सफाई धोखाधड़ी जादूगरी या ठगी नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ 'हिपनोटिज्म की सैद्धान्तिक व्याख्या'

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में हमने हिपनोटिज्म के प्रति फैली भ्रामक धाराओं की चर्चा की है। लेकिन अब विषय के प्रति सर्वसाधारण की बढ़ती हुई रुचि, जानकारी और आर्कषण से स्थिति काफी सुधरी है और दिन ब दिन सुधरती जा रही है। अब वह समय ज्यादा दूर नहीं है जब कि हिपनोटिज्म को जानने वाले और न जाने वाले दोनों ही इसे विश्वसनीय लोक हितकारी विद्या के रूप में मानने लगेंगे। अविश्वास और संदेह का वातावरण बहुंत कुछ तो समाप्त हो चुका है रहा बचा भी समाप्त हो जायेगा। अब वह पहले जैसी स्थिति नहीं है जबकि लोग सम्मोहन विद्या को हाथ की सफाई और बाजीगरो का तमाशा समझते थे। इतना ही नहीं बल्कि सभ्य शिक्षित लोग इसे उपेक्षा और अनादर की दृष्टि से देखते थे।

जब से चिकित्सा के क्षेत्र में सम्मोहन विद्या के लाभकारी और उपयोगी परिणाम लोगों के सामने आने शुरू हुए तभी से इसकी लोकप्रियता और विश्वास में वृद्धि हुई। अब यह निर्विवाद प्रमाणित बात है कि अपनी बहुमुखी उपलब्धियों से सम्मोहन विद्या ने अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए महत्व और सम्मान अर्जित करने में सफलता प्राप्त की है।

आज के उच्च शिक्षित और अल्पशिक्षित (दोनों ही स्तरों के) व्यक्ति समान रूप से इस विद्या के प्रति अपनी आस्था और विश्वास प्रकट करने लगे हैं। वे मानने लगे हैं कि सम्मोहन विद्या आम आदमी से लेकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशिष्ट व्यक्ति तक उपयोग और महत्व का स्तर रखता है। यह लोगों को ठगने या सड़कों पर मजमा लगाकर तमाशा दिखाने तक सीमित रहने वाली विद्या नहीं है। यह विज्ञान और कला की तरह व्यवस्थित विद्या है और निरन्तर शोधों और प्रयोगों की माँग करती है मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से छुटकारा दिलाती है। इसका मनुष्य के दैनिक और व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण स्थान तथा उपयोगिता है।

सम्मोहन के प्रति पूर्व स्थापित मिथ्या धारणा—

सम्मोहन के प्रति पूर्व स्थापित मिथ्या धारणा कई कारणों से प्रेरित रही है इनसे एक दुर्भाग्यपूर्ण कारण यह भी रहा है कि लोगों तक इस बात की जानकारी सर्व सुलभ रूप में पहुँच ही नहीं पाई कि सम्मोहन विद्या वास्तव में क्या है यह कैसी विद्या है इसकी सैद्धांतिक व्याख्या क्या है तथा इसके आधारभूत सिद्धांत क्या है। इसकी स्थिति के विषय में जानकारी का श्री गणेश ही गलत ढंग से हुआ। लोगों की छिछली असम्बद्ध जानकारी मिली इसका रूप तो सामने आया पर वह अपने प्रमाणिक और शुद्ध चरित्र का सम्बल लेकर नहीं आ पाया। फिल्मो और औपन्यासिक कथाओं ने इस पर कल्पना का रंग चढ़ाया। लोगों को हिपनोटिज्म के नाम से जोड़कर असंभव कल्पनाओं से जुड़ी कहानियाँ दिखाई पढ़ाई गयीं। इस क्षेत्र में बाजीगर मजमेबाज, तमाशेबाज भी पीछे नही रहे उन्होंने सम्मोहन के प्रयोगों को मनोरंजक खेलों में ढालकर उन पर जादूगरी का झूठा मुलम्मा चढ़ाया इस प्रकार इस विषय के साथ ऐसा अन्याय किया गया। इस प्रकार सम्मोहन विद्या के प्रचार का प्रारम्भ ही इस गलत ढंग से हुआ कि रुचि विस्तार का स्थान अलगाव और अविश्वास ने लिया। भारत में भी इसका कोई दक्ष जानकर किसी विश्वसनीय प्रचार के लिए आगे नहीं आया। इस प्रकार इसके प्रचार प्रसार को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनजाने ही भारी क्षति पहुँची। बस यही सब बातें इसके प्रति भ्रांति-पूर्ण धारणाओं के निर्माण में सहायक हुईं।

लोगों के मन में देखे या अनदेखे ही एक तस्वीर सी उभरने लगी कि हिपनोटिज्म का प्रयोग कर्त्ता लगड़ा तन्दुरस्त आँखों में सुरमा लगाये विचित्र पोशाक पहने तरह-तरह के तमगों से लदा-फदा अजीबोगरीब खलीफा टाइप आदमी होगा। उसमें फौलादी ताकत होगी, असाधारण मजबूत आत्मबल होगा चुम्बकीय शक्ति होगी आँखों से अन्तर भेदी चमक निकल रही होगी। निर्माण कम विदव्स की अधिक शक्ति रखता होगा। लोगों के सारे गलत काम कराने की ताकत रखता होगा। उसके भीतर ऐसी दैवी एवं अलौकिक शक्तियाँ होंगी जो कमजोर मन मस्तिष्क के दबे, डरे तथा सताये हुए व्यक्ति को अपने प्रभाव में जकड़ कर मोह निद्रा में सुला देती होंगी।

इस स्थिति को सम्मोहन की प्रयोग धर्मी विवशता से भी भारी सहायता मिली। यह तो सभी जानते हैं कि सम्मोहन के प्रयोगों में माध्यम को प्रयोगकर्त्ता के आदेशों का पालन करना पड़ता है। दोनों की एक-दूसरे में तन्मयता ही इसकी सफलता बनती है।

इस स्थिति का भी अर्थ इस अनर्थकारी रूप में लगाया गया कि सम्मोहन का प्रयोग कर्त्ता माध्यम के दिल दिमाग को अपने प्रभाव में जकड़ कर कठपुतली या पालतू कुत्ता बना देता है। माध्यम उसकी गलत-सही हर प्रकार की इच्छा को मान कर चाबी भरे खिलौने की तरह उसके ईशारों पर नाचने लगता है। सम्मोहन की मोह निद्रा को जादूगरी का नशा समझा गया और यह धारणा बना ली गई कि मोह निद्रा में आये व्यक्ति से चाहे कुछ करा लिया जाये या चाहे कुछ कर लिया जाये न तो वह विरोध करेगा और न उसे कुछ पता ही चलेगा। सम्मोहन की मोह निद्रा में उससे गलत सही कुछ भी करा लिया जाये उचित अनुचित पर विचार करने वाला उसका विवेक इस समय उसका साथ नहीं देगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उससे जो चाहो कराओ न तो विरोध कर सकेगा और न कुछ समझेगा ही।

सम्मोहन के प्रति महिलाओं का अविश्वास विशेष रूप से जागृत हुआ वे सोचने लगी इस खतरनाक गोरख धंधे से दस हाथ दूर रहने में ही भलाई है। पता नहीं कोई प्रयोगकर्त्ता अपने सम्मोहन के प्रभाव में लेकर उनका शील भंग कर वैठे या जीवन के किसी छिपे रहस्य को जानकर ब्लेकमेल करने की कोशिश करने लगे।

शुरू में ही गलत नींव के रूप में पनपी ऐसी विकृत प्रचारित स्थिति और भ्रामक विचारधारा के कारण लोग हिपनोटिज्म से डरने लगे और इसे अपराधी का पृष्ठ पोषक समझने लगे। मनुष्य में अदम्य स्वतन्त्रता प्रेंम है। कोई भी आदमी इस बात के लिए तैयार नही है और न इस स्थिति में पड़ना चाहता है कि कोई दूसरा आदमी मोह निद्रा में उसे सुलाकर बेसुध कर दे और उसका मनमाना इस्तेमाल करे। उसके शरीर और मन का नियंत्रण किसी दूसरे व्यक्ति के आधीन होकर उसे गुलाम बना दे। चाहे कोई व्यक्ति स्वमानी हो अथवा न हो पर वह इस स्थिति को कदापि स्वीकार नहीं करेगा किसी भी रूप में किसी भी कारण से कोई दूसरा अपने प्रभाव में जकड़कर उसे कठपुतली की तरह नाच नचाये और उससे मनमाना काम ले।

सम्मोहन निद्रा स्वाभाविक निद्रा नही है।

इस बात पर दो राय नहीं हो सकती हैं कि हिपनोटाइज (संमोहित) किये गये व्यक्ति में निद्रा और तंद्रा का प्रभाव कम हो जाता है। संमोहित किये गये माध्यम रूपी व्यक्ति को निद्रा आती है। निद्रा संमोहन के प्रयोग से अनिवार्य रूप में जुड़ी हुई है। संमोहित व्यक्ति निद्रित होगा ही। उसे संमोहन की मोह निद्रा आयेगी ही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकिन यह भी प्रमाणित सत्य है कि संमोहन की मोह निद्रा स्वाभाविक निद्रा नही है। यह स्वाभाविक निद्रा और प्राकृतिक निद्रा से एकदम अलग भिन्न स्थिति है। संमोहन की मोह निद्रा प्राकृतिक निद्रा नहीं होती। वास्तविकता तो यह है कि संमोहन की मोह निद्रा में बाह्य रूप से निद्रा के लक्षण दृष्टिगोचर होते हुए भी यह निद्रा नही होती है। इसमें शरीर सभी प्रकार के तनावों कसावों से मुक्त होकर शिथिल पड़ जाता है मोह निद्रा में निद्रित पात्र निद्रित दृष्टिगोचर होते हुए भी पूरी तरह मानसिक जागरण में रहते हुए चुस्त दुरुस्त रहता है। इसकी पुष्टि इस प्रमाण से स्पष्ट है कि निद्रित रहते हुए वह जाग्रत व्यक्ति ऐसा आचरण करता है वह निद्रित होते हुए भी प्रयोगकर्त्ता के प्रत्येक आदेश को ध्यान से स्पष्ट रूप में सुनता है ओर दिये गये आदेश के अनुसार काम करता है। यदि वास्तव में ऐसी स्थिति न होती तो वह प्रयोगकर्त्ता निर्देशों को सुन समझकर उनके अनुसार आचरण नहीं कर पाता। मोह निद्रा में स्वाभाविक नीद जैसी वेखबरी नहीं होती है। केवल गहरे संमोहन में ही पात्र मूर्छा या तंत्रा में पहुँचता है फिर भी वह प्राकृतिक निद्रा जैसी स्थिति से नहीं जुड़ पाता है। संमोहन की मोह निद्रा स्वाभाविक निद्रा है ही नही।

प्रयोगकर्त्ता माध्यम को कैसे सम्मोहित करता है?

उपर्युक्त शीर्षक से यह जिज्ञासा उठती है कि संमोहन कर्त्ता अपने माध्यम को किस प्रकार से संमोहित करता है। पिछले अध्याय में सर्प, मुर्गी और खरगोश को संमोहित करने की विधि दी गई है मनुष्य को संमोहित करने में भी यही विधि सैद्धांतिक रूप से काम करती है। संमोहित करने के लिए प्रस्तुत संमोहन कर्त्ता अपने माध्यम से अपने मन को एकाग्र कर किसी चमकदार वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह अपने हाथ में पेन लाइट, क्रिस्टलवाल या अन्य कोई चीज लेकर उस पर माध्यम का ध्यान केन्द्रित करवाता है। निर्दिष्ट वस्तु पर ध्यान एकाग्र हो जाने पर यह स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण और खुद से बेखबर होकर ध्यान के लिए प्रस्तुत एवं निर्दिष्ट पदार्थ पर स्वयं को एकाग्र कर एकदम लीन होकर स्वयं को भी भूल जाय। इस प्रकार ध्यान की एकाग्रता से ही संमोहन निद्रा प्रकट होती है इसे और स्पष्ट समझने के लिए इस प्रकार समझें कि रात को सोते समय बिस्तर पर लेटते ही स्वाभाविक नींद आ जाती है। बिस्तर पर सोने की आदत नीद से जुड़ी है यही पर हम अगर किसी समस्या के प्रति चिन्ता ग्रस्त होकर उस पर सोचना शुरू कर दें तो समस्या से अनेकों समस्यायें तर्क-वितर्क शंका औक निवारण की अनेकों स्थितियाँ मन में उथल-पुथल मचाकर हमारी नींद भगा देती है। किन्तु किसी बात के विषय में यथा स्थिति रूप में एक रस स्थायी चिंतन द्वारा हमें नीद जल्दी आ जाती है।

बच्चे भी बिस्तर पर लेटकर जब अपने साथियों के बारे में, स्कूल के बारे में और दिनभर की बातों के बारे में भागता हुआ चिंतन प्रारंभ कर देते हैं तो उन्हें नीद नहीं आती है। गतिशील चिंतन मानसिक एकाग्रता और स्थिरता के कारण जल्दी नीद में सुला देता है। कुछ लोगों को नींद लाने की आदत उनकी किसी भौतिक आदत से जुड़ी होती है। कोई बिस्तर पर लेट कर सिगरेट पीकर सो जाता है कोई किताब पढ़ते-पढ़ते। यदि नींद लाने की स्थिति से जुड़ी आदत या अभ्यास तात्कालिक रूप में किसी कारणवश पूरा नहीं हो पाता है तो फिर व्यक्ति को नींद नहीं आती है। सोने से पहले सिगरेट पीने की आदत रखने वाले व्यक्ति को यदि सोते समय सिगरेट नही मिलती हैं तो वह नियमित ढंग से नियत समय पर सो नही पाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ लोग बिस्तर पर लेटते ही भगवान का नाम लेते हैं और इसी के सहारे उनकी नीद आने की आदत जुड़ जाती है यदि वे अपनी आदत का सामयिक पालन न करें तो उन्हें नीद नहीं आयेगी यदि आयेगी भी तो बहुत देर से।

कोई किसी को कथा या कहानी सुनाये स्रोता यदि दत्त-चित्त होकर सुनेगा तो वह प्रसंग लीन होकर नीद से विमुख हो जायेगा यहीं पर यदि वह प्रसंग विमुख होकर केवल तल्लीनता दर्शाये तो वह जल्दी ही सो जायेगा। इसका कारण यह है मन मस्तिष्क से तो रुचि हो ही नहीं पर बाह्य रूप में वह दर्शायी जाय तो बाहरी वातावरण के प्रति तो लगाव उत्पन्न हो जायगा (देखने में तो ऐसा लगेगा ही पर वास्तव में ऐसा हो नहीं पायेगा) और रुचि हीत दिशाहीन अधिक अटकाव अपने सामने पाकर सहज सरल विकल्प के रूप में नींद को मौजूद पाकर उसी की शरण में चला जायेगा।

सम्मोहन निद्रा के विषय में भी यह सिद्धान्त कार्य करता है। माध्यम का मन अपने आस-पास के वातावरण से एकदम बेखबर एवं निर्लिप्त होकर प्रयोगकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत वस्तु पर एकाग्र हो जायगा और एकाग्रता की स्थिरता से ही सम्मोहन निद्रा प्रकट हो जायगी। यदि यहाँ एकाग्र तन्यमता न उत्पन्न की गई या न उत्पन्न हो सकी तो फिर मोह-निद्रा भी प्रकट होगी। अधिक देर तक एक ही वस्तु पर दृष्टि केंद्रित करने के परिणाम स्वरूप आँखो की पुतलियो को गति शीलता प्रदान करने वाली माँसपेशियाँ भी थक जाती हैं अन्य ज्ञानेंद्रियाँ कर्मेन्द्रियाँ भी शिथिल हो जाती हैं।निष्क्रियता और शिथिलता की यही स्थायी स्थिति निद्रा और तंत्रा उत्पन्न कर देती है। आंखें स्थिर रूप में किसी चीज पर गड़ाये रहने के कारण अपने आप ही इच्छा होने लगती है कि आँखें बंद कर सो जाया जाये। इसको सम्मोहन कर्त्ता के इस निर्देश से कि आँखें बंद कर लो दोहरा बल मिलता है। सम्मोहन कर्त्ता के निर्देश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और स्थिति को माँग के समन्वित रूप में एकाकार होते ही पात्र को नींद आने लगती है।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि इस प्रकार लायी गई नींद परिस्थिति का समर्थन और प्रयोग कर्त्ता के आदेश की सहयोगी स्थिति का परिणाम होती है। दोनों के एक होते ही मोह निद्रा आ जाती है। यह प्रयोग कर्त्ता के आदेश द्वारा आमंत्रित निद्रा होती यह स्वाभाविक निद्रा यों नहीं होती है कि इसमें शरीर और मन एक रूप से एक स्तर में स्वाभाविक दशा में थके हुए नहीं होते हैं। स्वाभाविक निद्रा तो तब आती है जब शरीर और मस्तिक दोनों ही स्वाभाविक रूप थके हुए हो। कभी-कभी शरीर मास्तिक स्वाभाविक रूप से थके हुए होने पर भी नींद नहीं आती इसमें कोई बात, समस्या या रोग अथवा चोट बाधा रूप में आ जाती है जब तक इस बाधा को दूर न कर दिया जाय काबू न पालिया जाय या पूरी तरह दबा न दिया जाय नींद आयेगी ही नहीं।

जो व्यक्ति मानसिक रूप से अस्थिर स्थिति में है ध्यान केंद्रित करने में किसी कारण से असमर्थ है वह सम्मोहन का सफल माध्यम नहीं बन सकता है। मनुष्य के मष्तिक में एक निद्रा नियंत्रण केन्द्र है जिसके संचालन पर शरीर के रक्त संचालन का प्रभाव पड़ता है। यह थकावट से भी (शारीरिक एवं मानसिक) प्रभावित होता है। दिन भर शारीरिक मानसिक श्रमों में व्यस्त रहने का भी इस पर प्रभाव पड़ता है।

वैसे थकावट, नींद लाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। नींद जब जोश में आती है तो वह आदमी की भूख तक को दबा देती है। ऐसी नींद में भी आदमी गहरे सम्मोहन या मूर्च्छा सम्मोहन जैसी वेसुध हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निद्रा का वर्गीकरण—मानसिक निद्रा - शारीरिक निद्रा।

मनुष्य की निद्रा भी दो प्रकार की होती है एक तो शारीरिक निद्रा होती है दूसरी मानसिक निद्रा होती है, मानव मस्तिष्क के सर्वोच्च स्थान सेरेब्रल कारटेक्स को मस्तिष्क का निद्रा नियंत्रण केन्द्र उद्दीपित करना रोक देता है तो शनै शनै: आदमी की चेतना लुप्त होने लगती है। सेरेब्रल कारटेक्स को निद्रा नियन्त्रक धीरे-धीरे उद्दीपित करना रोकता है प्राय: यकायक वह ऐसा नहीं करता है यदि कोई अपवाद कारण उससे न जुड़ जाय। एक ओर तो मस्तिष्क का निद्रा नियन्त्रक केन्द्र सेरेब्रल कार-टेक्स को उत्तेजना पहुँचाना रोक देता हैं अर्थात् अपने नियमित गतिशील उद्दीपद को रोक देता है दूसरी तरफ यह मस्तिष्क के उससे निचले भाग मस्तिष्क वृन्त को अवरुद्ध करना शुरू कर देता है कभी तो यह ये दोहरी क्रियाएँ एक साथ करता है और कभी एक के बाद दूसरी करते हुए एक क्रम उत्पन्न करता है इसके परिणामस्वरूप शरीर के वाह्य एवं आंतरिक अंगों को नींद प्रभावित करना शुरू कर देती है और आदमी को नींद आ जाती है।

मस्तिष्क की इस दोहरी क्रिया की ही प्रतिक्रिया नींद होती है। इस प्रकार आने वाली निद्रा में मांसपेशियों स्वाभाविक क्रियाशीलया अर्थात् स्फूर्ति समाप्त हो जाती है। इस प्रकार आने वाली निद्रा ही शरीर या शारीरिक निद्रा के नाम से जाती है। शरीर निद्रा की इसी स्थिति से सम्मोहन जुड़ा है।

शरीर की यही निद्रा संमोहन की निद्रा अथवा हिप्नोटिज्म निद्रा कहलाती है। शरीर निद्रा का यही स्वरूप मोह निद्रा है। इसमें शरीर के अंग प्रत्यंग शिथिल होकर ढीले पड़ जाते हैं सुषुप्तावस्था में पहुँच जाते हैं। लेकिन शरीर निद्रा की इस आरोपित अवस्था में मस्तिष्क निद्रा शामिल नही होती है माध्यम के मस्तिष्क को निद्रा नहीं आती है वह पूर्णतया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सचेत, तत्पर तथा जाग्रत रहता है। उसकी निरंतर कार्यशीलता भी गतिशील बनी रहती है। माध्यम का मस्तिष्क संमोहन कर्त्ता की उन सभी बातों को सुनता समझता तथा ग्रहण करता है जो उसे केन्द्र बनाकर कही जाती हैं उसे सम्बोधित कर कही जाती हैं। वह प्रयोग कर्त्ता के सभी प्रश्नों का जाग्रत और चैतन्य अवस्था की तरह से उत्तर देता है अपने शरीर को सावधान और तत्पर रखते हुए प्रयोग कर्त्ता के आदेशानुसार कार्य करने के लिए प्ररित करता है। चूँकि माध्यम शरीर को अपने नियंत्रण में बनाये रखता है अतएव प्रयोग कर्त्ता का अभीष्ट भी उसके निर्देश पालन के रूप में पूरा होता है तथा प्रयोग की सफलता में कोई बाधा नहीं आती है।

दैनिक जीवन में प्राय: ऐसे अवसर आते ही रहते हैं जबकि मस्तिष्क तो निद्रित हो जाता है परन्तु शरीर जागृत बना रहता है। बेहद थके हुए लोग आफिस में अपनी कुर्सी पर वैठे उँघते हुए या आधे सोते हुए अपने स्टेनों को डिक्टेशन दिये चले जाते हैं या किसी व्यापारिक बातों में अपनी भूमिका निभाते हुए सो भी लेते हैं। कुछ लोग तो चलते भी सो लेते हैं इसका कारण यह है कि शरीर अपनी गतिशीलता जारी बनाये रखता है दूसरी ओर मस्तिष्क अकेले-अकेले सो लेता है। इस प्रकार इकहरी नींद की यह स्थिति मस्तिष्क आसानी से पा जाता है और अकेले ही निभा भी ले जाता है।

सोते-सोते नींद में चलने की क्रिया जिसे सोमनाम्बोलिज्म (Somnambulism) यानि निद्राचारिता कहा जाता है इसी स्थिति का एक रूप है। निद्रा चारिता में जहाँ एक ओर मस्तिष्क सोया रहता है वहीं दूसरी ओर शरीर कार्यशील एवं गतिशील बना रहता है। लेकिन इस प्रकार दोहरी विरोधी क्रियाएँ सभी व्यक्ति नहीं अपना पाते हैं। शरीर को नींद पर जितना नियंत्रण प्राप्त है मस्तिष्क को वह स्थिति खुद मालिक होने की हालत में सहन नहीं है जब मस्तिष्क से रहा नहीं जाता है तो वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकेले ही सो जाता है वह शरीर के द्वारा सहयोग प्राप्ति की प्रतीक्षा नहीं करता है। लेकिन यहाँ यह स्पष्ट है कि इस प्रकार की स्थिति का निर्वाह सभी व्यक्तियों के लिए संभव नहीं हैं। साधारणतया मस्तिष्क शरीर को भी अपने साथ-साथ सोने के लिए बाध्य कर देता है। बहुत कम लोगों में यह बात देखी गई है कि उनके शरीर के असहयोग को मस्तिष्क सहन कर ले। यही कारण हैं कि निद्रा चारिता के उदाहरण अपवाद रूप में सामने आते हैं। साधारणतया शरीर और मस्तिष्क एक साथ ही सोते और जागते हैं। इसका कारण प्रबल रूप से यह भी है कि शरीर मस्तिष्क के आधीन होकर कार्य करता है वह उस पर निर्भर रहता है।

मस्तिष्क निद्रा और शरीर निन्द्रा का पृथक्करण—

हिप्नोटिज्म अर्थात् संमोहन विद्या की अनेकों विशेषताओं में से यह भी एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि इसमें मस्तिष्क निद्रा और शरीर निद्रा को एक-दूसरे से अलग-अलग भी किया जा सकता है। हिपनोटिस्ट अपने संमोहित माध्यम में अलग-अलग रूप से बिलकुल यंत्रचालित की तरह निर्देशनों द्वारा जब चाहे मस्तिष्क निद्रा उत्पन्न कर दे और जब चाहे शरीर निद्रा उत्पन्न कर दे। इस प्रकार निद्रा पृथक् करण की शक्ति अर्जित करके वह अपने संमोहित पात्र द्वारा तरह-तरह के चमत्कारी आश्चर्य जनक प्रायोगिक चमत्कार कर दिखाता है। निद्रा पृथक् (करण). की दक्षता संमोहन कर्त्ता की प्रारंभिक दक्षता का प्रतीक भी मानी जाती है।

मनुष्य का तंत्रिका तंत्र (Nervous system) —

संमोहित किये जाने की क्रिया को अच्छी तरह से समझने के लिए हमारा तंत्रिका का तंत्र सम्बन्धी ज्ञान पूर्ण होना आवश्यक है इसी में हमारा शरीर **रचना** सम्बन्धी ज्ञान भी पूर्ण होना चाहिये मनुष्य शरीर की संरचना, उस अंग विशेष, क्षेत्र विशेष का ज्ञान कदापि अपूर्ण नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होना चाहिये जिसके साथ हमारे शरीर का तंत्रिका तंत्र जुड़ा हुआ है। तंत्रिका तंत्र अर्थात् (Nervous system) का ज्ञान हिपनोटिज्म को सीखने के लिए विशेष रूप से आवश्यक है।

यह बात तो सभी जानते हैं कि शरीर की समस्त क्रियाओं का पालन, नियंत्रण और संचालन तंत्रिकाओं द्वारा होता है। संवेदनाओं आदेशों निर्देशों के नकारात्मक और स्वीकारात्मक रूप को तंत्रिका तंत्र ही एक मात्र रूप से प्रभावित करता है। मनुष्य के शरीर में तंत्रिकाओं का जाल सा फैला है। हर तन्त्रिका का अपना महत्व है और कार्य क्षेत्र है तंत्रिकाओं के जाल पर ही शरीर की मशीनरी निर्भर करती है। हम अपने शरीर के तंत्रिका तंत्र की तुलना टेलीफोन व्यवस्था से कर सकते हैं महानगरों में जिस प्रकार दूरभाष प्रणाली का जाल फैला है उसी प्रकार शरीर रूपी टेलीफोन व्यवस्था में तंत्रिकाओं का जाल फैला है। जैसे दूर-दूर तक फैली टेलीफोन व्यवस्था का एक संचालन केन्द्र होता है यानि कि हेडक्वार्टर होता है वैसे ही शरीर भर में फैली तंत्रिका तंत्र रूपी टेलीफोन व्यवस्था का हेडक्वार्टर यानी कि नियंत्रण केन्द्र मनुष्य का अपना मस्तिष्क है। तंत्रिका तंत्र के फैले हुए जाल का नियंत्रण केन्द्र मनुष्य का मस्तिष्क है। मनुष्य के सर के पीछे मस्तिष्क के नीचे की ओर रीढ़ की हड्डी में भीतर ही भीतर मोटी लम्बी नस डोरी की तरह चली गई इसमेही माला के मनकों की तरहरीढ़ की लम्बी हड्डी के गुरिये पिरोये हुए हैं। देखने में सीधा लगने वाला मेरुदंड कड़ियों में विभाजित है। मेरुदंड के भीतर इस लम्बी नस को जो डोरी नुमा है मेरु रज्जु (Sprinal chord) को स्पाइनल कोड भी कहते हैं। मनुष्य के मस्तिपकसे लेकर मेरुरज्जु तक का केंद्रीय भाग तंत्रिका तंत्र के नाम से जाना जाता है। मनुष्य शरीर कों समस्त तंत्रिकाओं का सँम्बन्ध इसी केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र से है। समस्त प्रकार की शरीर से संम्बधित सूचनाओ को शरीर में फेली तंत्रिकाएँ इसी केन्द्रीय तन्त्रिका तंत्र तक पहुँची हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसे इसउदाहरण द्वारा समझा जा सकता है -- जब शरीर का कोई हिस्सा कट जाता या छिल जाता है पैर में काँटा लग जाता है या हाथ हाथ में सुई चुभ जाती है तो शरीर की त्वचा के नीचे फेली तंत्रिकाएँ फोरन इस कष्ट व दुर्घटना की सूचना मस्तिष्क तक पहुंचा देती हैं। इनके सूचना भेजने का माध्यम बनता है हमारा केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र। इस प्रकार की सूचनाएं पहुँचाने वाली संवेदना संवाहिका, संवेदना ग्राही या सग्राहक तंत्रिका भी कहा जाता है।

तंत्रिका तंत्र द्वारा प्राप्त होने वाली इस प्रकार की सूचनाओं पर मस्तिष्क फोरन एक्शन लेता है सूचना प्राप्त होने पर मनुष्य शरीर का केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र एक अन्य प्रकार अर्थात् दूसरे प्रकार की तंत्रिकाओं माध्यम से हाथ या पैर की माँस पेशियों को तत्काल आदेश देता है कि वे फोरन कष्ट निवारक कार्रवाई करें ओर हाथ या पैर को फोरन ही खतरे की जगह से हटा ले। जो तंत्रिकाएँ इस प्रकार के आदेश लेकर शरीर को माँस तेशियों•तक पहुँचाती हैं उन माँस पेशियों से आदेश पालन कर वाती हैं उन्हें मोटर तंत्रिकाएँ या आदेश संवाहित तंत्रिकाओं के नाम से जाना जाता है। जब कभी किसी प्रकार से हमारा हाथ जल जाता है तो तत्काल हाथ के जलने के खतरे के बचाव स्वरूप हमारा हाथ जलने के कारण की जानकारी लेकर सुरक्षात्मक अपनाते हुए उस जगह से उस वजह से हट जाता हैं जिससे कि वह जला होता है।

ऊपर से साधारण दिखने वाली यह क्रिया भी अपने आप ही नहीं घटती है हाथ जलते ही संवेदना ग्राही तंत्रिकाएँ अनुभूति ग्रहण करती हैं और उसे केन्द्रीय तंत्रिकातंत्र तक पहुंचा देती हैं—हाथ जलने के खतरे की जगह पर था इसलिए ही वह जल गया। इस सूचना को पाते ही केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र आदेश संवाहिका तंत्रिकाओ द्वारा मासपेशियों को आदेश भेज कर हाथ को खतरे का अनुभव उठायीं जगह से हटवा देता है। इस सारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्रवाई के पूरा होने से एक सेकिण्ड से भी कम समय लगता है। इन सभी संग्रहक तंत्रिकाओं का जाल मनुष्य को ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों (हाथ पैर मुंह नाक कान) में फैला हुआ है। ये सम्पूर्ण शरीर में फैली हुई हैं शरीर के अंगूठे से लेकर सर तक। इनकी संदेश संप्रेषण क्षमता आसधारण रूप से त्वरित एवं गति शील है। हमारे शरीर की इंद्रियों पर पड़ने वाले सभो प्रकार के प्रभावों की सूचना ये ही तंत्रिकाएं तत्काल अविलम्ब हमारे केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र तक पहुँचा देती हैं।

इस प्रकार अब तक की चर्चा द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के अधीन सीधे इसी के नियंत्रण में सभी तंत्रिकाएं पूर्ण अनुशासित, क्रम बद्ध एवं त्वरित गति शलिता में अपने दायित्व का निर्वाह करती हैं। सा रांश रूप में स्थिति यह है कि मस्तिष्क ही तंत्रिका रूपीविशाल सेना का नायक है यही तंत्रिकाओं के द्वारा समस्त शरीर का संचालन कर्त्ता है।

पूर्व वर्णित तंत्रिकाओं के अतिरिक्त हमारे शरीर से कुछ अन्य प्रकार की तंत्रिकाएं भी होती है। इस प्रकार की ये तंत्रिकाएं स्वतंत्र तंत्रिकाओं के नाम से जानी जाती हैं। यह स्वतंत्र तंत्रिका समूह मानव हृदय, आमाशय, प्रजनन अंगों, मूत्राशय, वृक्क आँतों आदि पर अपना नियंत्रण कायम रखता है। ये स्वतंत्र तंत्रिकाएं मस्तिक के नियंत्रण से मुक्त होकर कार्य करती हैं। इन पर मस्तिष्क का कोई नियंत्रण नहीं है ये पूर्ण स्वतंत्र होकर कार्य करती हैं। इन तंत्रिकाओं को स्वतंत्र या स्वचालित तंत्रिका तंत्र भी कहा जाता है। स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र भी मानव शरीर के लिए महत्वपूर्ण है ओर यह शरीर धर्म में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

स्वतंत्र तत्रिका तंत्र (कार्य प्रणाली)

ऊपर लिखा जा चुका है कि स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर मस्तिष्क का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई प्रभाव नहीं पड़ता है मस्तिष्क न तो उन्हें आदेश देता है और नियंत्रण में रखता है ऐसी दशा में हमारा स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर कोई नियंत्रण नहीं है क्यों कि हम अपने मस्तिष्क के आधीन हैं तथा ये स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र मस्तिष्क के नियंत्रण से मुक्त है।

ऐसी दशा में जिस तरह हम हाथ पैर आँख इत्यादि को आदेश देते हैं उस तरह से स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र को आदेश नहीं दे सकते हैं। यदि हमसे कोई वस्तु माँगता है तो यह हमारी इच्छा पर निर्भर करता है कि हम हाथ से उस वस्तु को निकालकर देने के लिए कहें या न कहें। यदि हम (मस्तिष्क) आदेश नहीं देगें तो हमारा हाथ दूसरे व्यक्ति द्वारा माँगी गई वस्तु को निकाल कर कभी नहीं देगा चाहे माँगने वाला कितना भी आग्रह क्यों न करे। यह तो हुई मस्तिष्क के आधीन तंत्रिका तंत्र की बात। इसके विपरीत स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र का उदाहरण है कि हम चाहकर भी मुँह से जोर शोर से बोल कर भी अपनी हृदय गति को इच्छनुसार घटा बढ़ा नहीं सकते हैं।

नाड़ी की गति को तेज या कम नहीं कर सकते हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने योंग्य है कि स्वतंत्रतंत्रिका तंत्र मस्तिष्क पर पड़ते वाले प्रभाव से यह स्वयं ही स्वत: प्रभावित हो जाया करता है यह मस्तिष्क के अधीन नहीं फिर भी इसकी मस्तिष्क से बराबर सहानुभूति बनी रहती है। मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव से यह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। इसका उदाहरण है वि भय या उत्तेजना की अवस्था में हमारे हृदय की धड़कन सामान्य से बहुत अधिक बढ़ जाती है। अत्यधिक क्रोधित होने उत्तेजित होने पर भी ऐसा ही होता है। किसी प्रकार की अप्रिय या दुखदायी सूचना मिलती तो मस्तिष्क को है पर मस्तिष्क के प्रति सहानुभूति के कारण प्रभावित होता है हृदय। दुखदायी सूचना मिलने पर हृदय बैठने लगता है इसकी स्वाभाविक धड़कन गति कमजोर हो जाती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। भया क्रांत होने पर भी दिल की धड़कन तेज हो जाती है पसीना आने लगता है। मस्तिष्क के सुख दुख में हृदय भी उसका साथ देता है। हमारी आँखें किसी दुखदायी घटना को देखती हैं,

कोई भयानक चीज देखती हैं तो इसकी सूचना मस्तिष्क को मिलती है लेकिन प्रभावित हृदय भी होता है। इस प्रकार के उदाहरणों द्वारा यह बात प्रभावित होती है कि मस्तिष्क को उद्दीपित करने वाले उधीपनों का प्रभाव हृदय पर भी पड़ता है इस प्रकार इन सब का प्रभाव स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर भी पड़ता है। अतएव यह साबित होता है स्वतत्र तंत्रिकातंत्र यद्यपि मस्तिष्क के अधीन नहीं है फिर भी यह उससे प्रभावित होकर उसके अनुसार ही अनुभव करता है।

"स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र भी मानव नियंत्रण में"

ऊपर दिए गये उदाहरणों के आधार पर हमनें से द्धांतिक रूप से इस बात को स्वीकार कर लिया है कि मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले प्रभावों से स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र भी प्रभावित होता है इसके संचालन में प्रभाव के स्वरूप संचालन में बाधा पड़ती है या तीव्रता आती हैं। इस आधार पर हमें यह बात भी बिना झिझक स्वीकार कर लेनी चाहिए कि यदि मनुष्य निरंतर क्रमबद्ध अभ्यास द्वारा चाहे तो बड़ी आसानी से स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र के कार्यों को क्रिया कलापों को मस्तिष्क के नियंत्रण में अवश्य ही ला सकता है। यह स्थिति स्वाभाविक नहीं है किन्तु अभ्यास द्वारा अर्जित की जा सकती है इस बात की पुष्टि स्वरूप यह प्रमाण है कि अनेकों योगी, योगाभ्यासी संन्यासी महातमा अपने योगाभ्यास के अभ्यासों द्वारा हृदय की गति को इच्छानुसार घटा या बढ़ा सकते है।

वे योगाभ्यास तथा प्राणायाम के अभ्यास द्वारा अपनी श्वाँस प्रक्रिया को अपने नियंत्रण में लेलेते हैं तथा श्वाँस की गति को भी इच्छा नुसार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घटा बढ़ा लेते हैं। वे श्वाँस की गतिपर अपना इतना नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं कि कई कई दिनों की भूमिगत समाधि लगा लेते है और कई कई दिनों तक अपनी इच्छानुसार अभ्यास की शक्ति के आधार पर बिन हम पानी के जीवित बने रहते हैं। यह अभ्यास द्वारा स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर अर्जित प्रभाव का प्रभाव है। मनुष्य चाहे तो यह संभव बात है कि वह अपने अभ्यास द्वारा स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र को भी मस्तिष्क के प्रभाव में ला सकता है और उन क्रियाओं पर भी मस्तिष्क का नितंत्रण स्थापित कर सकता है जो सहज प्राकृतिक स्थिति में मस्तिष्क के नियंत्रण में नहीं हैं। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि इस नियंत्रण की कोई सीमा नहीं है जिस व्यक्ति का अभ्यास जितना ज्यादा होगा उसका नियंत्रण भी उतना अधिक होगा।

दैनिक 'नवभारत' और 'हिन्दुस्तान' में दिल्ली के एक 75 वर्षीय योगी योगाभ्यास द्वारा स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र नियंत्रण की एक घटना अक्टूबर 1977 में प्रकाश में आयी थी। इस घटना को प्रारंभ से लेकर अंत तक वरिष्ट डाक्टरों ने परीक्षण व निरीक्षण को पूरी चोकसी निभाई थी। योगी को एक गट्ठे में बिठा कर उस पर लड़की के तख्ते बिछा दिये गये, फिर उपर से इसे इंटों से पाट दिया। गड्डे गडढ़े को अच्छी तरह बंद कर दिया गया कुछ वैज्ञानिक यंत्रों को बाहर रख कर उनके तारों को योगी के शरीर से उसके समाधिकाल के समय की श्वाँस गति, धड़कन तथा नाड़ी गति मापने के लिए जोड़ दिया गया। उधर गड्ढ़े के अंदर योगी नें समाधि लगा ली।

इस परिक्षण में कुछ वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया था। परीक्षण द्वारा पता चला की योग के हृदय व गड्डों के तापमान में भारी भारी अस-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानता थी। योगी के हृदय की गति इतनी मंद थी कि इतनी मंद हृदय गति में किसी के जीवित रहने की बात सोचता भी व्यर्थ है। श्वास प्रक्रिया भी अवरूद्ध थी नाड़ी गति भी अत्यंत क्षीण थी। डाक्टरों को योगी को स्थिति पर आश्चर्य हो रहा था।

योगी को जब गट्ढे से वहार निकला गया तो थोड़ी ही देर में उसने अपने स्वतत्र तंत्रिका तंत्र को स्वाभाविक रूप से गति शील बना लिया। वह सब प्रकार से स्वस्थ और प्रसन्न चित्त था केवल उसका शारीरिक भार समाधिकाल में कुछ घट गया था।

यह परीक्षण, अभ्यास द्वारा स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर मस्तिष्क नियंत्रण का उदाहरण है। अनेकों साधू संन्यासी तथा योगी अपने स्वतंत्र पर अभ्यास द्वारा अर्जित मस्तिष्क नियंत्रण का करिमा है। स्थापित कर चमत्कारिक शारीरिक कि प्रर्दशन करते हुए यंत्रतंत्र सर्वत्र देखे जाते हैं। इस प्रकार के प्रदर्शन तो हम सब की जानकारी में हैं जब किसी ने इच्छा नुसार माथेपर पसीना लाकर दिखा दिया शरीर को निर्जीव बना कर दिखा दिया साँस की गति तथा धड़कन रोक कर दिखा दी। यह स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र पर अभ्यास द्वारा अर्जित मस्तिष्क नियंत्रण का करिश्मा है।

"योग विद्या की अत्यंत साधारण एवं प्रांरभिक अवस्था हिपनो टिज्म"

हिप्नोटिज्म को योग विद्या की अत्यंत साधारण तथा प्रांरभिक अवस्था के रूप में माना जाता है इस तरह से सम्मोहन विद्या को योग विद्या का ही एक अंश के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस स्थिति में मनुष्य का तंत्रिका तंत्र निद्रा की लाक्षणिक स्थिति में आ जाता है। स्वतंत्र स्वचालित तंत्रिका तंत्र तथा संग्राहक तंत्रिका तंत्र दोनों को ही इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवस्था में इच्छानुसार घटाया या बढ़ाया जाना या उतेजित किया जाना पूर्ण संभव स्थिति है।

संम्मोहन का कोई सफल सिद्ध हस्त प्रयोग कर्त्ता अपने माध्यम को अच्छी तरह से संम्मोहित कर के उसके हाथ में पेन या होल्डर पकड़ा दे और पात्र से कहे कि तुम्हारे हाथ में पायी हुई लोहे की गर्म छड़ है तो माध्यम को प्रयोग कर्त्ता के अदेशनुसार ही अनुभूति होगी। (माध्यम का मन अर्थात मस्तिष्क प्रयोग कर्त्ता के आदेशनुसार ही अनुभूति और प्रभाव ग्रहण करेगा जो चाहे भले ही स्वाभाविक अनुभूति के विपरीत हो या विरोधी हो।

संम्मोहित माध्यम के मस्तिष्क को कल्पना शक्ति प्रयोग कर्त्ता द्वारा असाधारण रूप से प्रभावित होने के कारण पेंसिल की जगह गर्म सलाखों अनुभूतिक और प्रभाव की स्थिति को ग्रहण करेगा देखने वालों को आश्चर्यजनक अविश्वसनीय परिणाम का सामना करना पड़ेगा वे देखेंगे कि पेंसिल पकड़े हुए हाथ की त्वचा जल कर काली पड़ गई है और उस पर जलने के असर जैसे छाले भी पड़ गये हैं। इसका विरोधी उदाहरण भी प्रस्तुत किया जा सकता है मान लिजिये कि किसी के शरीर में भयानक फोड़ा है तो उस फोड़े की पीड़ा को भी सम्मोहन द्वारा अनुभूति मुक्त किया जा सकता है ऐसा संभव है कि फोड़े में चाहे जितना तेज दर्द क्यों न हो रहा हो पर र्दद की अनुभूति ही न हो। शरीर में सुई चुभी दी जाय या शरीर में एक साथ कई सुईयाँ चुभो दी जाँय फिर भी र्दद की बिलकुल अनुभूति न हो। इतना ही नहीं माध्यम संम्मोहन कर्त्ता केप्रभावशाली असरदार निर्देशन के प्रभाव से अपनी इच्छाशक्ति द्वारा माँस पेशियों की स्फूर्ति एवं कसाव को इस चरमावस्था तक बढ़ाले जा सकते है कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसका सारा शरीर अकड़ कर काठ हो जाता है वह लकड़ी के मानिंद सख्त हो जाता जाता है।

इस दशा में उसे किसी मेज पर रखकर दिया जाये तो उठाते ओर रखते वक्त स्पर्श अनुभव यही होगा कि हम कोई लकड़ी का तख्ता रख रहे हैं न कि मानव शरीर। शरीर अकड़ कर काठ हुई अवस्था में घंटों यथावत निस्पंद पड़ा रह सकता है।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६ | निर्विकार मन

"मानव-मन क्या हैं।"

ऊपर दिये गये अनेकों उदाहरणों के माध्यम से हम इस निर्विवाद सिद्धाँन्त पर पहुँचे कि मनुष्य का मस्तिष्क ही उसके शरीर का सर्वोच्च नियंत्रक है। शरीर पूर्ण तथा मस्तिष्क के आधीन होकर कार्य करता है। लेकिन मस्तिष्क भी स्वतंत्र नहीं है यह भी किसी के आधीन है। मनुष्य का मस्तिष्क मन के (Mind) अधीन है। वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है कि मस्तिष्क के किस भाग पर देखने की जिम्मेदरी है किस भाग परसुनने की जुम्मेदारी है ओर किस भाग पर अनुभूति ग्रहण करने का दायित्व है किस भाग पर सुनने का दायित्व है ओर कौन सा भाग हमारे अंग संचालन को प्रेरणा देता है ओर नियंत्रण करता है।

मानव मस्तिष्क पर नियंत्रण रखने वाली उसे संचालित करने वाली तथा प्रेरणा प्रदान करने वाली शक्ति मन एक अद्रश्य शक्ति है। इसका स्थूल रूप नहीं है मस्तिष्क (Brain) की तरह मन के रूप रंग आकार प्रकार इत्यादि का पता लगाने में वैज्ञानिक असफल हो रहे हैं अत एवं उन्होंने भी मानव मन को एक अद्रश्य सत्ता के रूप में स्वीकार किया है। मन की मस्तिष्क को दी जाने वाली प्रेरणा शक्ति असाधारण ओर अवाध है। यह चाहे तो आदमी को अत्यन्त कायर बनादे ओर चाहे तो आसाधारण वीर बना दे। यह चाहे तो प्रेरणा देकर हमे गोलियों के आगे सीनातान कर खड़ा करवा सकता है। जलती आग में छलाँग लगवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकता है मौत से भी टकराने का साहस हमारे अंदर पैदा कर सकता है ओर यही मन हमें चूहे की तरह डरपोक और कायर बना सकता है।

मस्तिष्क (Brain) की प्रेरक शक्ति मन (Mind) ही है। मस्तिष्क के ऊपर न मन का नियंत्रण सर्वसम्मत सम्मति है यह विज्ञान नें भी स्वीकार कर लिया है लेकिन चक्षुदर्शी रूप का पता लगाने में अभी विज्ञान को सफलता नहीं मिली है। यही हमारे हृदय और मस्तिष्क को सुख दुख के प्रभाव भी सम्प्रेषित कहता है। कभो कभी मन द्वारा सम्प्रेषित अनुभूति का स्तर इतना चरम और सर्वोच्च होता है। कि कभी तो घोर प्रसन्नता में और कभी धोर दुख की अनुभूति में व्यक्ति के प्राण तक चले जाते हैं। किसी व्यक्ति के नाम लाटरी का पहला इनाम लाखों रूपये का निकल वह खुशी में इतना बौखला गया कि प्रसन्नता का दवाब उसका हृदय सहन नहीं कर सका उसकी गति रूक गयी और वह मर गया। इसी व्यक्ति को अपने प्रिय स्वजन या मित्र के निधन से इतना दुख हुआ कि उसकी मौत हो गयी।

यहाँ मन द्वारा संप्रेषित अनुभूति का दवाव दोनों ही उदाहरणों में हृदय ओर मस्तिष्क की सहन शक्ति से परे था अतएव ये काम्लेप्स कर गये या अपनी स्थिति को सँभाल नहीं पाये परिणाम स्वरूप शरीर की मृत्यु हो गई।

दो व्यक्तियों के सामने एक सी संकट पूर्ण स्थिति थी एक तो सहन कर गया दूसरा सहन नहीं कर सका यह एक ही स्थिति के दो विरोधी परिणाम हमारे आये अनुभव में हैं इन विरोधी परिणाम में भिन्न अभ्यास देने का श्रेय दोनों के मन को है दोनों के मन की अनुभूति स्तर भिन्नता को है। मन मस्तिष्क का नियंत्रक है उससे कई गुना शक्ति शाली है। लेकिन कभी कभी मन भी मस्तिष्क के निमंत्रण में आ जाता है। ऐसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी होता है कि अपवाद अवसरों पर मन के आदेशों को मस्तिष्क अस्वीकार कर देता है। मन मस्तिष्क को आदेश देता है कि यह काम करो मुझे यह पसंद है यह बड़ा अच्छा लगता है वहीं उस काम के करने में मस्तिष्क आना कानी करनी लगता है वह मन को समझाने लगता है कि ठीक है इस में बड़ा सुख है वड़ा अच्छा है यह काम पर मेरा कहना मानिये कि इस काम को करने में इस प्रकार के ऐसे ऐसे खतरे के बाद हम सव (मन, मस्तिष्क,शरीर) पर यह संकट टूट पड़ेगा। अब ऐसी दशा में मन (Mind) मस्तिष्क (Braind) के सुभावों पर विचार करेगा वास्तविकता का निर्णय करेगा अपने आदेश पर पुर्नविचार करेगा यदि उसे अनुभव होगा की मस्तिष्क की कही गई बातें सही है उसके आदेश पूर्ति में ये बाधाएँ है या ये खतरे हैं तो वह निश्चय ही अपने आदेश को वापस ले लेगा वह उनके पालन करने के लिए मस्तिष्क को वाध्य नहीं करेगा।

लेकिन यहीं यदि मस्तिष्क अपने सुझावों द्वारा मन को संतुष्ट नहीं कर पाया तो पुर्न विचार करने के बाद मन फिर उन आदेशों प्रर अमल करने के लिये मस्तिष्क को वाध्य कर देगा। मन एक स्वतंत्र ताना शाह है बुद्धि या कहें कि मस्तिष्क उसे प्रभावित अवश्य करते है पर प्रायः वे आधीन काम करते हैं। मन के पास प्रेरणा शक्ति और संकल्प शक्ति का अगाध भंडार है। मन हमेशा अपनी ही मौज में रत रहता है यह अपनी इच्छानुसार ही चलता है मस्तिष्क द्वारा दी गई चेतावनियों और सुझावों पर यह विचार तो करता है पर प्रायः अपनी इच्छानुसार ही आचरण करता है। एक शरीर में एक ही मन रहता है कहा भी गया है कि मन की स्वतंत्र सत्ता है।

"मन अपार शक्ति का स्वामी है।"

मन की आर्कषित और विर्कषित होने की क्षमता असाधारण है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह अपार असाधारण शक्तियों का स्वामी है इसकी गति शीलता ओर वेग आश्चर्यजनक हैं इन्हें यंत्रों द्वारा मापना असभंव स्थिति है। मन सेकिंडों में हजारों मील दूर या स्थान पर पहुंजा जाता है और चला आता है। मन असाधारण महान् भी है और अत्यन्त नीच भी है महा दुर्बल भी है और असाधारण शक्ति शाली भी है। अत्यन्त कृपण भी है और असाधारण उदार भी है। शरीर और मस्तिष्क वो इसके आधीन कठपुतलियों जेसे हैं यह जब चाहे तब वैसा नाचनचाये। जैसा आश्चर्यजनक अनदेखा इसका रूप है वैसे ही आश्नर्यजनक अनदेखे इसके कार्य भी हैं। यही मन मनुष्य को दुर्दान्तयु और भयानक हत्यारा अपराधी बना देता है कि दुनियाँ नाम से काँपने लगती है यही मन ममुष्य को ऐसा संत बना देता है कि लोग चरणों पर लोटतें लगते हैं।

यही मन पल में हँ ा देता है पल में रूला देता है। कहावत में भी कहा गया है मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत। मनुष्य की जय पराजय का निर्णय भी उसका मन ही करता है। मन ही वास्तव में शरीर रूपी राज्य का राजा है। इस प्रकार यह सिद्ध स्थिति है मन की सत्ता शरीर और मस्तिष्क के ऊपर है। शरीर स्वस्थ भी हो तो रोगी मन के कारण वह भी अस्वस्थ ही रहता है। मनुष्य का शरीर और मस्तिष्क मन का आज्ञाकारी सेवक है। मनुष्य द्वारा किये जाने वाले कार्यों की कल्पना मन करता है फिर उसे मस्तिष्क को प्रेषित कर देता है मस्तिष्क उन्हें व्यवस्ति कर शरीर के द्वारा करवाता है। व्यक्ति का प्रत्येक कार्य मन की प्रेरणा अथवा उसके विचार की परिणति होती है। कहावत में यह भी कहा गया है कि व्यक्ति का चिंतन ही उसके व्यक्तिंत्व का निर्माण कर्त्ता है'।

आदमी जैसा सोचता है वैसा ही वह बनता हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में मन की भूमिका महान् है। मन की इसी महान् मनोवैज्ञानिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षमता को ध्यान में रखकर बच्चों के व्यक्तितत्व निर्माण के लिए इस बात का ध्यान रक्खा जाता है उन्हें महान् पुरुषों की जीवनियाँ सुनाई या पढ़ाई जाँय। बालकों का मन भी कोमल, सरल और भावुक होता है वह संसार के अनुभवों की छाप से पापयुक्त के झमेले से अछूता होता है। इसलिये सदैव ही अभिभावक और शिक्षगण बच्चों को चरित्रनिर्माण की कहानियाँ सुनाते पढ़ाते हैं उन्हें सदाचार एवं शिष्टाचार पालन की आदतें सिखते हैं अनुशासन और अहिंसा का उपदेश देते हें बालको के बाल मन पर डाले गये प्रभाव ही उन्हें आगे चल कर महान् व्यक्ति बनाते हैं। नेहरू और गाँधी के व्यक्तितत्व निर्माण में उनके बचपन मे पड़ी उनके माँ बाप की आर्दशवादी छवि ही उन्हें आगे बढ़ाने में सहायक हुई। विश्वविजेता नेपोलियन और अलेग्जेंडर के व्यक्तितत्व निर्माण में उनकी माताओं की शिक्षा तथा प्रेरणा ही ध्येय ओर संम्बल बनी। स्वच्छ पवित्र मन आदर्श वादी महान् विचारों को जन्म दैता है और उसी के अनुरूप आचरण की प्रेरणा उनका मन देता है। चूंकि बालक का मन भी बालक होता है इसलिए बाल्या वस्था में मन पर बड़ी छाप अमिट होती है। उन में अच्छे विचार आयेंगे तो आचरण भी उनसे प्रेरित होकर अच्छा ही होगा ओंर अच्छा आचरण व्यक्ति को महानता के पथ पर ले जायगा ही।

मनुष्य शरीर की सीमा है यह एक निश्चित सीमा रेखा में रहकर ही सब कुछ करता है इस सींमा रेखा से बाहर निकल कर या ऊपर उठ कर यह कुछ भी नही कर सकता है शरीर अपनी आयु को इच्छानुसार घटा बढ़ा नहीं सकता हैं यह वर्त्तमान रहते हुए भविष्य में भी नहीं पहुँच सकता है। शरीर केवल वर्त्तमान को जी सकता है ओर वर्तमान में ही कार्य भी कर सकता है। मन के साथ कल्पना और चिंतन की महान् शक्ति है इसका कार्य क्षेत्र ओर चिंतन शरीर से बड़ा है। मन की असाधारण शक्ति का अनुभव मनुष्य स्वप्प में करता है जब वह निद्रा की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोद में होता है तो मन शरीर से स्वतंत्र होकर अपना कार्य करता है यह स्वन्न में हजारों मील दूरस्थ स्थानों पर हो आता है, हवा में उड़ता है, पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाता है, तैर कर समुद्र पार कर लेता है। स्वप्न मे शरीर में स्वतत्र होकर यह ऐसे काम कर डालता है जो शरीर के लिए असंभव हैं। इस ससार में मन से अधिक वेगवान, गति शील शक्ति शाली ओर कोई नहीं है। मन की सकल्प शक्ति असंभव को भी संभव बन देती है। मानव शरीर को मन का दान देकर ईश्वर ने अपनी असाधारणता ही ममुष्य को समझाई है। मन अगर प्रसन्न है तो चार तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ हैं पोधे पेड़ धरती सवके सब गाते नजर आते है मन यदि दुखी ओर उदास है तो साँसारिक सुख का अंबार भी फीका है सब व्यर्थ ओर फीका नजर आता है। ऐसा महान है हमारा मन।

'मन का अस्तित्व और मन की सत्ता शरीर से स्वतंत्र भी है।"

हमने पिछले अध्याय में मन को तानाशाह कहा है इसकी तुलना एक, स्वयं सर्वभौम सत्ता संपन्न सम्राट से की है जो कोई अति शयोक्ति न होकर एक वास्तविकता है। शरीर के साथ तो सीमा हैं बन्धन, पर मन के साथ कोई बन्धन नहीं है। यह पूर्ण स्वतंत्र स्वेच्छा चारी सर्वाचारी है। समय अपने बंधन में मन को बाँध सकने में असमर्थ है। मन के लिए कालबंधन निर्रथक है। शरीर के कार्य करने के लिए यह अनिवार्य है कि वह केवल वर्त्तमान काल में कार्य करे परन्तु मन पर यह बन्धन लागू नहीं होता है। मन के साथ ऐसी कोई बन्दिश नही है कि वह केवल वर्त्तमान काल में ही कार्य करे मन चाहे तो शताब्दियों पुराने अतीत में, भूतकाल में जा सकता है जो कि शरीर (जिसमे मन है) के निर्माण से भी हजारो साल पीछे का काल है।

मन चाहे तो शताब्दियों के आगे भविष्य में जा सकता है जब कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस शरीर (जिसमें मन है) का एक भी भौतिक परमाणु अपने अस्तित्व में न होगा। मन वर्त्तमान में वैठ कर साथ अतीत ओर भविष्य को जी सकता है। वह वर्त्तमान में बैठ कर राम और कृष्ण के युग दृश्यों को देख सकता है। मन चाहे तात्विक सारता ग्रहण कर वह भविष्य की अधिकाँशत: सत्य कल्पना कर सकता है।

शरीर द्वारा जिये हुए समय का एक मात्र गवाह मन ही होता है शरीर तो अपने जिये हुए समय को विस्मृति के गर्भ में धकेल देता है पर मन अपने जिये हुए अतीत को एन सवक की तरह याद कर लेता है। जो समय ब्यतीत हो चुका है जिसे शरीर जी चुका है उसकी मन पर तस्वीर सी खिची रहती है मन की स्मृति रूपी डायरी में वह वर्त्तमान की तरह बना है। बीती हुई बातों और घटनाओ का एक मात्र गवाह मन है जो अपनी स्मृति रूपी डायरी में अतीत को नोट किये रहता है। बचपन में जो याद करने लगता है और यांद करते करते उनमें ऐसा खो जाता है कि वह उसी काँल से पहुँच जाता है कुछ समय के लिये चिंतन की तल्लीनता में उसका वर्तमान से भी सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। इसी प्रकार अपने लिये सुनहरे भविष्य की कल्पना करते हुए वह मन के रजत पटल पर आने वाले भविष्य के दृश्यों को देखते इतना खो जाता है कि वह अपने आप को भूल सा जाता है यहाँ भी मन के साथ वह देखते जाता है उसे अपने आप का और उस वर्त्तमान का जिसमें वह बैठा हैं, कोई वोध नहीं रहता है।

विज्ञान में अपने प्रयोगो द्वारा सिद्ध कर इस बात को मान्यता देदी है कि मनुष्य के शरीर से स्वतंत्र होकर मन जो भी चिंतन करता है उसकी पृष्ट पोषक भूमिका एवं प्रेरक शक्ति हमारे आसपास घटने वाली घटनाएँ, वाता,वरण, परम्पराएँ एवं प्रतिनिधि स्थितियां होती है। इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृष्य जगत में हम जो कुछ देखते सुनते समझते और याद रखते हैं उस सबका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव हमारे मन और मस्तिष्क को प्रभावित करता है इसी प्रभाव से हमारे विचारों और चिंतन का निर्माण होता है। हमारे सामने यदि कोई अप्रिय घटना घटती है जैसे किसी छोटे बच्चे को कोई आदमी बेरहमी से मार रहा है बच्चा असहायक होकर अर्तनाद कर रहा है तो पीटने वाले व्यक्ति के प्रति हमारे हृदय में मन मस्तिष्क में घृणा ओर क्रोध उमड़ पड़ता है पिटने वाले के प्रति सहानभूति उमड़ पड़ती है। हम पीटने वाले व्यक्ति को और पिटने वाले बच्चे से एक दम अपरिचित होते हुए भी बीच-बचाव करने को कूद पड़ते हैं ऐसा हम अपने मन के आदेश पर करते हैं। हमारे मन को भी पीटने वाले व्यक्ति से और पिटने वाले बच्चे से कोई मतलब या स्वार्थ नहीं है फिर भी हमारा मन न्याय की जीत के लिए अन्याय की समाप्ति के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देता है। मन न्याय और नैतिकता का भक्त है वह भला अपने सामने अन्याय और अत्याचार को कैसे देख सकता है मनवाद शाह जो ठहरा।

मन पर इस घटना का प्रभाव स्थायी होगा और भविष्य में घटने वाली कोई घटना या कोई चिंतन अवश्य ही इससे प्रभावित होगा।

एक भविष्यदर्शी दूरदर्शी मन अनेकों—असंख्य 'मनों' (Somany minds) को अपने प्रभाव से प्रभावित करता है। एक मन ऐसे अमर विचारों को जन्म दे देता है जिनको समय भी नहीं नष्ट कर पाता है और आने वाले अनेक युगों तक असंख्यो मनों का इस एक मन से जन्में अमर विचारों द्वारा मार्ग दर्शन होता रहता है। गीता का उपदेश गाँधीवाद और मार्क्सवाद एक मन से जन्मे अमर विचार ही तो हैं।

एक व्यक्ति के मन में जन्मे विचारों और चिंतन का प्रभाव उससे हजारों मील दूर वैठे अन्य व्वक्ति के मन पर निश्चित रूप से पड़ सकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। यह बात अविश्वसनीय नहीं है और न कपोल कल्पना ही है। इस तत्थय को विज्ञान ने भी अपने प्रयोगों द्वारा अच्छी तरह जाँच परख कर मान्यता दी है। विचारों के परस्पर आदान प्रदान की इस प्रक्रिया या पद्धति को "टेली पैथी" कहा जाता है। 'टैली पैथी' अब स्वतंत्र विद्या के रूप में विज्ञान सम्मत मान्यता प्राप्त कर चुकी है।

एक व्यक्ति के विचारों द्वारा दूसरे व्यक्ति के प्रभावित होने की प्रक्रिया"

पाठकों और प्राय: सभी को जो इस जानकारी से अनभिज्ञ हैं, यह जानकर आश्चर्य और अविश्वास होगा कि एक व्यक्ति के विचारों का प्राभाव उससे बहुत दूर वैठें अन्य व्यक्ति पर कैसे होगा। यह असंभव स्थिति कैसे और क्यों कर संभव सो सकी या संभव है। लेकिन अव यह बात पूर्ण तथा विश्वसनीय प्रमाणित संत्य बन गई है कि ऐसा वास्तव में संभव है। यहाँ दिये इस आश्चर्य जनक सत्य पर विज्ञान ने भी प्रयोग सिद्ध प्रभाणिक की मुहर लगा दी है यहाँ इसी समाचार और सत्य का दूसरा प्रभाणित पहलू यह है कि यह कार्य प्रसन्नतापूर्वक और निर्दिष्टता निश्चित कर के किया जा सकता है एक व्यक्ति के विचारों से दूसरे व्यक्ति के विचारों के प्रभावित सिद्धाँन्त में हिपनों टिज्म में सफल प्रयोग सिद्ध सिद्धांन्त हैं।

कुछ लोग इसे असंभव या कोरा प्रचार कह कर अविश्वास भले ही प्रकट करे किन्तु सत्य नकारा नहीं जा सकता है। ऐसा होना एक दम सत्य है। इसी सिद्धाँत को आधार बना कर हिपनोटिज्म अथति सम्मोहन संमोहन विद्या ने विकास किया है मनो विज्ञान ने अपने अनेकों प्रयोगों में इस बात को सैद्धाँतिक और और व्यावहाररिक रूप से सत्य पाया कि कोई साधारण सा स्वस्थ समझदार औसत स्तर वुद्धि वाला व्यक्ति अपने विचारों से दूसरे व्यक्ति को प्रभावित कर सकता है। आप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी इस पर प्रयोग कीजिये सफल प्रयोग से आप स्वयं सत्य का अनुभव कर लेगें।

हिपनों टिज्म कहिये, संम्मोहन कहिये या मेस्मेरजम समझ लीजिये इन दोनों में ही प्रयोग कर्त्ता संम्मोहक हिपनोंटिस्ट जो भी आदेश या निर्देश देता है उन आदेशों निर्देषों में प्रयोकर्त्ता संम्मोहक के विचार ही शक्ति शाली प्रभावी स्थिति में काम करते हैं संमोहित माध्यम पर प्रयोग कर्त्ता के विचारों के पड़ते हुए प्रभावों के आश्चर्य जनक परिणामों को देखकर दर्शक आश्चर्यचचकित हो कर कौतूहल और जिज्ञासा में डूब जाते हैं। संम्मोहन के प्रयोग द्वारा अव-रोगनिवारण समस्या समाधान और मनोरजन सब कुछ होता है अब यह विद्या अविश्वास और मन से मुक्त होकर औसत व्तवित की आर्कषित करने लगी है। यह इस की लोक प्रियता वृद्धिका शुभारंम है।

हिपनोटिज्म या संम्मोहन विद्या का कुल मिला कर साराँश रूप से एक मात्र यह उद्देष्य नहीं है कि दूसरे व्यक्ति पर अपने विचार लाद दिये जाँय उसे अपने विचारों की गुलामी में जकड़ लिया जाय उससे अपना स्वार्थ साधन किया जाय उससे अनुचित कार्य कराया जाय या उसका शोषण किया जाय। इस प्रकार के तर्क वितर्कों की एक लम्बी सूची है पर सब व्यर्थ और निरर्थक है। बल्कि सचाई तो यह है कि दर्शक का संम्मोहन की विस्मय कारी महान् एवं आश्चर्यजनक शक्तियो से तब साक्षात्कार होता है जब महान् शक्ति शाली "अवचेतनमन" की शक्तियों के दर्शन होते हैं इनके करिश्मों को देख कर लोग आश्चार्य सागर में डूब जाते हैं। आगे हम इसी अवचेता मन के विषय में स्पष्ट और विस्तार पूर्वक चर्चा करने जा रहे हैं। इससे अवचेतन मन की स्थति ओर स्वरूप स्पष्ट तथा समझ में आ जायगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"अवचेतन मन"

मनो विज्ञान के प्रयोगों ने अब इस बात की जानकारी भी स्पष्ट रूप से प्रयोग सिद्ध रूप में प्रस्तुत कर दी है कि मनुष्य के मन के भी दो भाग चेतन मन (Concious mind) या साधारण मन कहलाता है दूसरा भाग अवचेतन मन या अचेतन मन (Unconcious mind) कहलाता है। हमारे रोजमर्रा के कामों व्यावहारिक क्रिया कलापों का लेखा जोखा हमारा चेतन मन रखता है चेतन मन द्वारा संम्पादित होने वाले कार्य मनुष्यकी जानकारी में रहते है क्यो कि हमारे समस्त दैनिक जीवन संम्बन्धी कार्योंको जोंकि जाग्रत अवस्था में करते हैं इसी चेतन मन के सहयोग से पूरा करतें है। चेतन मन हमारे तर्क वितर्क, विचार विमर्श, उचित, अनुचित और भले बुरे संम्बन्धी मामलों में सक्रिय भूमिका निभाता है मनुष्य का चेतन मन उसके दैनिक जीवन संम्बन्धी समस्त कार्यों में निर्णयात्मक और संरक्षणात्मक भूमिका निभाता है।

यह बात स्वयं सिद्ध है कि हमारा चेतन मन कितना शक्तिशाली सहयोगी है। इसके बिना हमारा जीना ही दूभर हो जाता है। इसके सहयोग के अभाव में न तो हम कोई बात सोच पाते हैं न निर्णय लेकर कोई कार्य कर सकते हैं। यह शरीर रूपी मशीनरी का जेनरेटर है। वास्तव में मनुष्य का चेतन मन असाधारण शक्तिशाली सहयोगी है। इसके अभाव में मनुष्य निष्क्रिय हो जाता है। लेकिन इससे बड़ी बात है कि मनुष्य का अवचेतन मन या अचेतन मन अथवा अंर्तमन और भी अधिक शक्तिशाली है। यद्यपि यह चेतन मन की तरह हमारे जीवन में सक्रिय भूमिका नहीं निभाता है फिर भी विस्मृति और स्मृति सुरक्षा की दृष्टि से यह असाधारण महत्वपूर्ण है। हमारा अचेतन मन चेतन मन से कई गुना शक्तिशाली है। वास्तव में चेतन मन की तरह अचेतन मन की भी यही स्थिति है कि इसके अभाव में हमारा जीवन सहज सम्भव नहीं रह सकता है। व्यक्ति के इसी अचेतन मन के मर जाने या निष्क्रिय हो जाने पर मनुष्य पागल हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। उसकी सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है वह सब कुछ भल जाता है उसे कुछ भी याद नहीं रहता है।

वह अपनी पहचान भी भूल जाता है वह अपने सभी सगे-सम्बन्धियों तक को पहचानने से इन्कार कर देता है और अपने द्वारा कही गई समस्त बातों को भूल जाता है। मनुष्य जीते जी मरे हुए के समान हो जाता है उसका सांसारिक जीवन पंगु हो जाता है। यह सब केवल अचेतन मन के मर जाने या निष्क्रिय हो जाने पर होता है जबकि चेतन मन जीवित रहता है। अचेतन मन का स्थानापन्न बनने में हमारा चेतन मन असमर्थ ही रहता है यह कभी भी उसका स्थान नहीं ले सकता है और न उसके कामों को खुद पूरा कर सकता है। हमारी कोई भी इच्छा कभी भी मरती नहीं है यह हमारे अचेतन मन में चली जाती है और विस्मृति के रूप में सुरक्षित हो जाती है। समय पड़ने पर यह इच्छा पुर्नजीवित हो सकती है या इसे जगाया जा सकता है। चेतन मन और अचेतन मन की तरह हमारा मस्तिष्क भी दो भागों में विभाजित है एक भाग चेतन मस्तिष्क कहलाता है दूसरा अचेतन मस्तिष्क कहलाता है। यदि मनुष्य के सर को खोला जाय तो हमारी खोपड़ी का ऊपरी हिस्सा ढक्कन की तरह खुल जायगा भीतर गुलाबी रंग के माँस की शकल में हमारा मस्तिष्क नजर आयेगा इस मस्तिष्क का पिछला हिस्सा भूरे रंग के माँस की शकल में होगा ठीक पके हुए कद्दू के गूदे की तरह यही पिछला हिस्सा अचेतन मस्तिष्क होगा ध्यान से देखने पर इसमें हमें ग्रामोफोन के रिकार्ड की चूड़ियाँ बनी नजर आयेंगीं। इन्हीं चूड़ियों में या बाल के शकल की तरह की लाइनों में हमारी स्मृति सुरक्षित रहती है। इसमें बगीचे की क्यारियों की तरह लाइन नुमा दरारें भी होती हैं। ये भी याददाश्त और स्मृति विस्मृति का लेखा-जोखा रखती हैं।

हमारी यही दबी हुई इच्छाएँ अनेकों रूप धरकर सुषुप्तावस्था में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्न में **प्रकट** होती हैं अचेतन मन की प्रेरणा और निर्देशों पर भूली हुई बातें दबाई हुई इच्छाएँ हमारे व्यक्तित्व एवं स्वभाव को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित भी करती रहती हैं। अचेतन मन स्मृतियों का एक सुरक्षित कोश है। बाल्यकाल अथवा बीते हुए समय यानी कि जिस समय को हम जी चुके हैं उसे जब याद करना चाहते हैं तो हमारा अतेतन मन उन स्मृतियों को अपने सुरक्षित कोष से निकालकर चेतनमन को सौंप देता है जिसके परिणामस्वरूप हमें बरसों पहले घटी घटनाएँ यकायक याद आ जाती हैं। जिसे हम याददाश्त पर जोर डालना कहते हैं या याद करने की क्रिया कहते हैं वह वास्तव में अचेतन मन द्वारा किसी भूली या विस्मृत बात को चेतन मन को लौटाने की क्रिया होती है। हमारा अचेतन मन चेतन मन द्वारा संग्रहीत बातों, घटनाओं, यादों, अनुभूतियों, उपदेशों, शिक्षाओं, अध्ययनों इत्यादि को संग्रह कर रखने वाला एक 'रेकार्ड रूम या स्टोर रूम' है।

उदाहरण के लिए—हम ऐसे समझें कि कोई व्यक्ति एक अखबार पढ़ रहा है अखबार पढ़ते समय उसका सारा ध्यान राजनैतिक समाचारों, सनसनी खोज समाचारों को पढ़ने पर केन्द्रित है। ऐसे समय में किसी के साथ घटी किसी (घटना) को वह पढ़ता है उस समय अपने साथ घटी वैसी ही घटना या उससे मिलती-जुलती घटना को 25 वर्ष या उससे भी पुरानी होते हुए भी वह तत्काल याद कर लेता है। मसलन ऐसी घटनाओं में डूबने या जल मरने जैसी घटनाएँ या वाहन दुर्घटनाएँ हो सकती हैं मौत से बच निकालने की घटनाएँ भयानक बीमारियों, दुघटनाओं को व्यक्ति कभी नहीं भूलता है अस्सी, सौ या उससे भी ऊपर आयु के व्यक्ति को अपने जीवन में साठ साल, सत्तर साल या अस्सी वर्ष की भूतकाल की पुरानी कोई घटना या अधिकांश बातें याद रह सकती हैं। किसी भी समय शांत चिन्तन में स्मृतियों को पुर्ननिरीक्षण करते अपने आप ऐसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

याद आ जाती जैसे अभी अभी की घटना है। प्रिय नजदीकी, सम्बन्धी यात्रियों की स्मृति उनके मरने के पचासों, साठ वर्ष का अपने जीवन के अन्तिम समय तक अनगिनत वर्षों तक ज्यों की त्यों तरोताजा बनी रहती है। बुढ़ापे में थोड़ा याद करने की कोशिश करते ही जवानी और बचपन के जिये हुए दिन उस समय के संगी-साथी सब कुछ चलचित्र की रील की तरह याद आने लगते हैं। यह सब हमारे अचेतन मन का ही करिश्मा है। हमारे व्यतीत जीवन, भूतकाल की स्मृतियों को यही अचेतन मन हमारे मानस पटल पर प्रस्तुत करता है यही भविष्य की कल्पनाओं के असीम सागर में डूबकियाँ लगवाता है। कुछ लोगों को तो नींद में रखे गये सपने भी कई-कई दशाब्दियों तक याद रहते हैं बीस, बीस या चालिस वर्ष पहले पहने गये कपड़े तक का रंग कलर और डिजाइन याद बना रहता है। यह सब हमारे अचेतन मन की शक्तिशाली संचय और संग्रह प्रवृत्ति का परिणाम है। मनुष्य का अचेतन मन उसके व्यक्तित्व के साथ एक दैवी शक्ति क तरह से जुड़ा हुआ है। इसने आदमी को असाधारण शक्तियों का स्वामी बनाया है।

अचेतन मन का कार्य केवल मनुष्य के व्यतीत अतीत (भूतकाल) को स्मृतियों के रूप में सुरक्षित रखना ही नहीं है बल्कि यह और भी अनेकों असाधारण महत्वपूर्ण कार्य भी करता है इनमें से एक यह भी है कि मनुष्य का अचेतन (मन) निर्णयों की भी शक्तिशाली क्षमता रखता है। यह न्यायप्रियता, विवेक प्रदर्शन के साथ ही किसी भी विषय पर सटीक सामयिक स्थिति, समस्यानुसार निर्णय भी लेता है। निर्णयों के मामलों में इसे 'वीटो' जैसी स्थिति प्राप्त है।

अचेतत मन द्वारा लिये गये निर्णय अपरिवर्त्तनीय तथा अंतिम होते हैं अचेतन मन के निर्णयों को हमारा चेतन मन भी बिना नुक्ता चीनी किये या आल चना किये प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लेता है। हमारे अचे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन मन की यह भी एक असाधारण शक्ति है कि यह हमारे शरीर से तथा मस्तिक से बहुत दूर रह कर अकेले ही अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता है। अतीत में झाँककर देखना या भविष्य दर्शी बन जाना, दूर-दूर तक देख सुन सकना इत्यादि तो हमारे अचेतन मन की सहज संभव क्रियाएँ हैं ही।

"सम्मोहन द्वारा अचेतन मन की शक्तियों का विकास संभव"

सम्मोहन विद्या का हमारे अचेतन मन से गहरा संम्बन्ध है यह हमारे अचेतन मन की रहस्य मय असाधरण शक्तियों को उजागर कर प्रयोग कर्त्ता को उसको इच्छानुसार लाभान्वित करता है। इस प्रकार के कार्यों तथा प्रयोगों में सम्पूर्ण दर्शनीय स्थिति का निर्वाह सम्मोहित माध्यम का अवचेतन या चेतन मन करता है। प्रायः सम्मोहित माध्यम को अपने द्वारा सम्पादित इन कार्यों का स्वयं अनुभव नही होता। जब माध्यम सम्मोहन की मोह निद्रा में, प्रखर सुपुप्तावस्था में, किसी दूरस्थ स्थान पर घटित होने वाली धटनाओं को चलचित्र के दृष्यों की तरह देखता है और उनका लेखाजोखा और आँखों देखा हाल अपने प्रयोग कर्त्ता को बिस्तार से बता रहा है तो चेतन मन इस प्रकार के संम्पूर्ण विवरण क्रिया कलापओ र जान कारियों से मुक्त अनभिज्ञ वना रहता है उसे कुछ भी आभास या अनुभव नही होता। इस बात का प्रमाण यह है कि हिपनोटाइज (सम्मोहित) किया हुआ मीडियम (माध्यम) जब सम्मोहन की मोहनिद्रा से जागता है तो उसे कोई ध्यान या होश नही रहता है सम्मोहित अवस्था में उसने क्या-क्या देखा या क्या-क्या बताया। सारांश यह कि होश मे आने पर सम्मोहन की अवस्था में किये, कहे, देखे या अनुभव किये की स्मृति बिलकुल नहीं रहती है।

"सम्मोहनावस्था में अचेतन मन या अचेतन मन की स्थिति"

मन में यह स्वाभाविक प्रश्न उठेगा कि इसका क्या कारण है और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसा क्यों होता है। इस संम्बन्ध में शंका समाधान यह है कि सम्मोहन अथस्था में माध्यम के चेतन और अचेतन मन के बीच कोई सम्पर्क, तार ताम्य जैसी या समन्वय जैसी स्थिति विलकुल नहीं रहती है। वास्तविकता तो यह है कि उस समय सम्मोहित माध्यम का मन सम्मोहक का मन का ही एक अंग या अंश बन जाता है। सम्मोहन माध्यम का अचेतन मन प्रयोग कर्त्ता के तन के आधीन हो जाता है।

उसकी चिंतन शक्ति, प्रणाली, कार्य क्षमता इत्यादि प्रयोग कर्त्ता के मन के आधीन हो जाता है वह जो कहता है वही पात्र कहता है वह जो देखना चाहता है पात्र वही देखता है। दृष्यानुभूति एवं इच्छा शक्ति तथा श्रव्यानुभूति सब कुछ प्रयोग कर्त्ता के आधीन होकर कार्य करने लगती है।

इस प्रकार प्रयोग कर्त्ता अपने मन के आधीन का अचेतन मन करके पात्र के अचे तन मन के रूप में असाधारण शक्ति शाली ज्ञानेंद्रियां ओर अनुभव करके अर्जित करता हैं। प्रयोग कर्त्ता और माध्यम दोनों ही सम्मो-हित के प्रयोग में एकाकार होकर चमत्कारिक आश्चर्यजनक जानकारियाँ और अनुभूतियाँ अर्जित करते हैं।

"सम्मोहन अथवा हिपनोटिज्म की शक्तियाँ-उपयोग तथा अवस्थाएँ"

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में पाठकों को इस बात को जानकारी दी जा चुकी है कि किसी व्यक्ति को सम्मोहन का मीडियम बनाकर अर्थात् सम्मोहित कर उससे क्या-क्या कार्य कराये जा सकते हैं। अब सम्मोहन की शक्तियों, उपयोगों तथा अवस्थाओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जायगी।

यह बात तो स्पष्ट की जा चुकी है कि सम्मोहन या मेस्मेरजम के द्वारा माध्यम को जो निद्रा लाई जाती है वह हमारी स्वाभाविक निद्रा से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अलग प्रकार की होती है यह प्रयोग कर्त्ता की इच्छा और आवश्यक के अनुरूप हल्की या गहरी हो सकती है यह प्रयोग कर्त्ता की इच्छानुसार गहरी हो सकती हैं। इस संमोहन निद्रा की ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसे स्वत: ही स्वाभाविक निद्रा से अलग स्थिति प्रदान करती हैं। सहज स्वाभाविक निद्रा से हमें जब सोये हुए व्यक्ति को जगाना पड़ता है तो उसे आवाजें लगाने से लेकर झकझोरने और उस पर पानी छिड़कने तक की नौबत आ जाती है। व्यक्ति जितनी थकावट में होगा उतनी ही गहरी नींद में होगा तथा उसे जगाने के लिए उतना ही अधिक प्रयास करना होगा।

इसके विपरीत संमोहन निद्रा में सोया माध्यम चाहे गहरी संमोहन निद्रा में हो या हल्की संमोहन निद्रा में हो वह केवल प्रयोग कर्त्ता के संकेत मात्र पर जाग उठता है उसे जगाने के लिए वैसा परिश्रम नहीं करना पड़ता है जैसा स्वाभाविक नींद में सोये व्यक्ति को जगाने के लिये करना पड़ता है। इससे बढ़कर बड़ी बात तो यह है कि संमोहन निद्रा में माध्यम को स्वाभाविक सहज निद्रा से अधिक आराम, शाँति, तनाव मुक्ति तथा तंत्रिका को श्रम मुक्त तरोताजगी मिलती हैं।

"सम्मोहन की उपयोगिता"

यदि कोई व्यक्ति बहुत बुरी तरह थका हुआ हो मानसिक और शारीरिक थकावट में चकनाचूर हो तो ऐसे समय में कुछ मिनटों की संमोहन निद्रा ले लेने के बाद जब वह जागेगा तो अपने आपको एकदम तरोताजा, हल्का और तनाव मुक्त अनुभव करेगा। उसे अपने शरीर और मन में एक नयी स्फूर्ति और उर्जा का अनुभव होगा। सँमोहन की मोहनिद्रा के कुछ ही मिनटों से प्राप्त ताजगी हल्का पन और स्फूर्ति की स्थिति, स्वाभाविक निद्रा द्वारा अर्जित करने में कई घंटे लग जाते हैं। यह तो हम सबके लिये अनुभव सिद्ध स्थिति है कि किसी प्रकार शरीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की स्थिति में थोड़ा सा किया गया परिवर्तन शरीर को काफी आराम पहुँचाता है। काफी देर से खड़े हुए व्यक्ति को थोड़ी देर बैठने का अवसर मिलते ही उसकी थकावट कम हो जाती है। एक करवट लेटे व्यक्ति को दूसरें करवट लेटतें ही आराम मिल जाता है। रात भर जागे हुए या कई रातों के जागे व्यक्ति को साने के लिये मिले कुछ ही घंटे उसे काफी आराम पहुँचते हैं। नयी स्फूर्ति, कार्य क्षमता और चैतन्यता जाग्रत करते हैं। शरीर की अवस्था, उनके रखरखाव में किये महत्वपूर्ण परिवर्तन द्वारा ही शरीर की स्थिति में यह क्षमतावर्धक सुखदायी महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है।

संमोहन द्वारा बुलाई गई नीद अर्थात् मोहनिद्रा में और स्वाभाविक निद्रा से देर से आने और जल्दी आने का भी एक बुनियादी अंतर होता है। स्वाभाविक निद्रा सदैव ही कुछ मिनटों या जल्दी नहीं आ जातीहै। व्यक्ति काफी थका होते हुए भी कभी कभी बहुत प्रयास करके ही सो पाता है। लेकिन संमोहन निद्रा के साथ समय की मौसम में और सोने की जरूरत संम्बन्धी कोई बात नहीं जुड़ी होती। इसकी तो जरूरत प्रयोग कर्त्ता के आदेश निर्देश और इच्छा है सम्मोहन द्वारा लाई जाने वाली निद्रा जब चाहें तब लाई जा सकती है। इसके आने से ज्यादा समय नहीं लगता है और मुक्त होने में भी अधिक समय नही लगता है यह प्रयोग कर्त्ता के आधीन रहती है और मन चाहे समय पर मन चाहे समय के लिए बुलाई जा सकती है। लेकिन स्वाभाविक नींद को लांने में और उससें छुटकारा पाने में व्यक्ति की स्थिति इतनी स्वतंत्र नहीं है।

"सम्मोहन द्वारा शारीरिक मानसिक रोगों से मुक्ति"

सम्मोहन के सर्वाधिक महात्वपूर्ण शक्ति शाली रुप से हमारा साक्षात्कार उस समय होता है जब हम इसे मसीहा बनाकर लोगों की भया-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नक शरीरिक पीड़ओं से उन्हें राहत देते हुए या छुटकारा देते हुंए देखते हैं। मानसिक चिन्ताओं और तनावों में घिर कर कभी-कभी आदमी पागल सा हो जाता है ऐसे समय में सम्मोहन अचूक दवा की तरह कार गर सिद्ध होता है।

शारीरिक पीड़ाओं और दर्दों को दूर करने में सम्मोहन के समान स्तर की अन्य कोई वस्तु नहीं है। कोई व्यक्ति चाहे जिस कारण से, कितना भी भयंकर पीड़ा में छटपटा रहा हो उस पर कोई भी दर्दनाशक दवा (अपना) असर न दिखा रही हो तो ऐसे समय में सम्मोहन उसे पीड़ा मुक्त या पीड़ा अनुभूति मुक्त कर सकता है ऐसे व्यक्ति को सम्मोहित करके उससे सम्मोहक कहे कि तुम्हारे शरीर में बिल्कुल दर्द नहीं है तो वास्तव में उसे लगेगा कि थोड़ी देर पहले का जान लेवा दर्द अब खत्म हो चुका है। उसे अनुभव होगा कि वह पूर्ण स्वस्थ है उसके शरीर में अब दर्द या पीड़ा या उसकी टीस नहीं है।

इस उदाहरण के विपरीत यदि किसी स्वस्थ सामान्य व्यक्ति को सम्मोहित कर उससे कहा जाय कि तुम्हारे एक दाढ़ में दर्द है या तुम्हारे माथे में असहन पीड़ा हो रही है और तुम्हारी यह पीड़ा पूरे चौबीस घंटे रहेगी इसके बाद तुम्हें दर्द बिलकुल नहीं होगा। सम्मोंहन द्वारा माध्यम से इतना कहने के बाद माध्यम सम्मोहन की निद्रा से मुक्त भी हो जाय तो भी वह पूरे चौबीस घंटों तक दर्द की अनुभूति में कराहता रोता रहेगा। उसका चाहे जितना अच्छे से अच्छा उपचार किया जाय उसे चाहे जो दवा दी जाय पर वह पूरे चौबीस घंटो तक दर्द की अनुभूति में कराहता रोता रहेगा। होने के बाद वह खुद बखुद स्वस्थ हो जायगा। इस उदाहरण से सम्सोसन की तीव्र शक्ति के प्रभाव का हम अंदाजा लगा सभते हैं। हिस्टीरिया जैसे रोगों से सम्मोहन बड़ी आसानी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से छुटकारा दिला देता है। यह किसी ऐब, बुरी आदत या किसी भी प्रकार केमानसिक तनव से मनुष्य को जल्द आराम दिलाता है। अनेकों मानसिक रोगों,झक्कों सनक से भी मनुष्य को मुक्त करने में सहायक होता है। वास्तव में इस मामलों में यह चमत्कारिक रूप से उपयोगी है। **"मनुष्य के दुख दर्द अनुभूमि प्रधान और मानसिक होते हैं।"**

किसी से कहने में यह बात अटपटी लग सकती है पर है पूर्णत: सत्य कि सभी प्रकार के दुख दर्द मानसिक होते हैं ये मात्रअनुभूति प्रधान होते हैं। अनुभूति विस्मरण की अदम्य मानसिकता द्वारा इनका प्रभाव अनुभव ज्यादा या कम किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला है कि सब प्रकार के दुख का कारण मूलत: मानसिक होता है जिसमें अनुभूति की प्रधानता असाधारण रूप से गतिशील रहती है। एक ओर एक व्यक्ति छोटा सा काँटा चुमने या किसी छुरी की नोंक भुक जाने से दर्द के मारे छटपटाने लगता है। दूसरी ओर बुरी तरह घायल व्यक्ति को पीड़ा का अनुभव अपने ध्येय या कार्य के प्रति गहरो दर्दचित्तता के कारण बिलकुल नहीं होता है। इसका कारण है कि संम्पूर्ण रूप से एकांग्र होकर दर्द के किसी दूसरी तरह लीन रहने के कारण घावों और चोंटों की अनुभूति जाग ही नहीं पाती अतएव दर्द का अनुभव भी नही होता है।

"कुछ विचित्र आश्चर्य जनक सत्य विवरण"

मानव शरीर पर उसके मन का असाधारण नियंत्रण है। "मन के हारे हार है मन के जीते जीत' हारजीत के शक्ति परीक्षण में भी मन ही हारता जीतता है इसमें 'चूक' चुकी शक्ति या संचित शक्ति से अधिक महत्त्व दो व्यक्तियों के मनोबलों की हारजीत का महत्त्व है मनोबल मौत से बड़ा है जो कि मौत का डर भी आदमी के दिल से निकाल दे अपनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस बात के समर्थन के पक्ष में हम कुछ सत्य प्रभाणित घटनाओं का उल्लेख कर रहे हैं भारत पाक युद्ध में एक भारतीय वम वर्षक शत्रु के ठिकानों पर सफलता पूर्वक वमबारी कर लौट रहा था।

यह घटना 1965 के भारत पाक युद्ध की है। उसी समय भारतीय वम वर्षकों की तलाश में भटकते तीन-चार सेवर जेटों ने इस भारतीय बम वर्षक को देख लिया और चारों तरफ से घेर कर इस पर मशीन गनों से गोलियाँ दागनी शुरु कर दी भारतीय बम वर्षक ने आक्रामक और सुरक्षात्मक दोनों ही तारीके युद्ध में प्रयोग किये दो शत्रु विमान तो उसके कुछ ही मिनटों के वायु युद्ध में धारा शायी हो गये शेष दो अपना मनोबल हारकर भाग गये। भारतीय बम वर्षक के चालक की बाँहों तथा कधों में कई गोलियाँ लगने के कारण वह भी बुरी तरह घायल हो गया था। विमान का पिछला हिस्सा भी हवा में ही शत्रु की गोलियों से नष्ट हो गया था। गोलियों के धावों से चालक अधिक खून वह जाने के कारण बेहोश सा होने लगा फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी वह अपने कड़े मनोबल के सहारे अपना साहस बनाये रहा तथा सकुशल लौट कर भारतीय हवाई अड्डे पर उतर भी गया। अपनी विमान हवाई पट्टी उतारते उतारते चालक बेहोश हो गया उसे स्ट्रेचर पर लिटा कर विमान से निकालना पड़ा।

इस उदाहाण से स्पष्ट है कि मनुष्य अपने अदम्य मनोबल की शक्ति पर मौत से दो-दो हाथ करके भी बच सकता है यदि वह बम वर्षक मनो-बल हार बैठता न तो वह शकुशल लौट सकता था और न हीं शत्रु विमानों को नष्ट कर पाता। यह उसकी मानसिक शक्ति का ही सहयोग था कि वह गोलियों से घायल खून के फव्वारे छोड़ते शरीर की घायल स्थिति में विमान भी चलाता रहा, युद्ध भी करता रहा और सकुशल लौट भी आया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसी प्रकार के एक अन्य सत्य उदाहरण की चर्चा हम प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डा० राजकुमार करोली के एक संस्मरण द्वारा कर रहे हैं—डा० करोली के एक घनिष्ट मित्र गंम्भीर रुप से हृदय रोग से पीड़ित थे वे किसी दूरस्थ स्थान की कार द्वारा यात्रा कर अच्छी भली स्वस्थ हालत में लौट रहे थे, वे अकेले थे, और खुद ही कार ड्राइव कर रहे थे। कि इसी समय कार चलाते हुए सुनसान जगह पर उनके उपर भयानक हृदयरोग का दौरा पड़ा सारा शरीर पसीने में नहा उठा बेहोशी छाने लगी पर उन्होंने अदम्य मनोबल और साहस से काम लेते हुए मौत से लड़ते हुए कार चलाना जारी रक्खा और सीधे अस्पताल के अहाते में पहुंच कर कार रोकने तक वह सज्जन बेहोश हो गये। ड० करोली आये उन्होंने अपने मित्र को स्ट्रेचर पर लिटा कर उतारा उनका उपचार किया।

डा० करोली आश्चर्य और अविश्वास से भौंच्च के रह गये कि क्या कोई व्यक्ति हृदय रोग के इतने भयानक आक्रमण में भी अपना मानसिक संतुलन कायम रखते हुए बिना किसी दुर्घटना के कार चला कर सकुशल पहुँच सकता है लेकिन प्रत्यक्ष दर्शी घटना पर अविश्वास का कोई कारण ही न था। पूर्व वर्णित दोनों घटनाओं में दोनों व्यक्ति ने अदम्य मनोबल के बल पर भयानक पीड़ा और यंत्रणा की अनुभूति को दबाये रख कर संतुलन कायम रक्खा जिससे उनको खतरे से बचाव मिला।

जब व्यक्ति के मन को शरीर के किसी भारी कष्ट या पीड़ा की सूचना मिलती है या कोई दिलदहलाने वाली दुखदायी समाचार मिलता है तो उसमें अनुभूति जाग्रत होती है उसे मानसिक आघात पहुँचता है फलस्वरुप वह रोने चिल्लाने कराहने लगता है उसकी आंखों मे आँसू बहने लगते हैं। किसी-किसी पर मानसिक आघात तो इतना गहरा होता है कि वह उसकी अनुभूति सहन नहीं कर पाता है और दुख तथा पीड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के आवेग को सहने में असमर्थ होकर बेहोश हो जाता है हार्टफेल हो जाता है। यह उसकी सहन करने की क्षमता से अधिक दुख के दबाव के कारण होता है।

दुःख के अधिक मानसिक दवाब के कारण लोग पागल तक हो जाते हैं। दुःखद मृत्यु के समाचार से पालग, बेहोश हार्टफेल होने की घटना में यह जरूरी है कि समाचार गलत है या सही है गलत सूचना पर भी पूर्व वर्णित स्थिति आ सकती हैं। जरूरत है सुनने वाले की दृष्टि में कहने वाला पूर्ण विश्वसनीय होना चाहिये। यदि सही सूचना भी हो और कहने वाले पर सुनने वाले को विश्वास न हो अथवा संदेह हो तो ऐसी दशा में दुःख का दवाव द्विबिधा के कारण बहुत कम हो जाता है। वह समाचार की सत्यता परखने के क्रम में दुःख के उतने गहरे दवाव का शिकार नहीं बनता है जितना कि बन सकता था। आस्था, विश्वास की स्थिति पूर्ण विश्वसनीय और प्रमाणित होने पर ही आवेग और अनुभूति सम्पूर्ण रूप से प्रभावी चलते हैं।

'सम्मोहन के प्रयोग में प्रयोगकर्त्ता और माध्यम का सम्बन्ध'—

पूर्ण वर्णित यही सिद्धांत सम्मोहन के प्रयोग में प्रयोगकर्त्ता और सम्मोहक के बीच काम करता है—यदि सम्मोहन के प्रयोग कर्त्ता पर उसके माध्यम का विश्वास नहीं होगा, उसे अपने सम्मोहक के प्रति घृणा, अविश्वास या किसी प्रकार की अरुचि होगी तो फिर उस पर अपने प्रयोग कर्त्ता का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। लेकिन हमेशा ऐसा भी नहीं होता है बहुधा ऐसा केवल सम्मोहन की प्रारंभिक अवस्था में होता है। सम्मोहन के विषय में यहाँ एक उल्लेखनीय आश्चर्य यह भी है कि यदि सम्मोहक एक बार किसी व्यक्ति को अपना माध्यम बनाकर सम्मोहित कर मोह निद्रा में सुलाने में सफल हो जाये तो फिर वह माध्यम प्रयोगकर्त्ता की इच्छा के आधीन हो जाता है। इसके बाद कभी भी एक बार सफलता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वक सम्मोहित किये जा चुके व्यक्ति को पुनः सम्मोहित करने में कोई कठिनाई या असुविधा नहीं होती है।

यह बात पहले ही स्पष्ट की जा चुकी है कि—सम्मोहित माध्यम को शारीरिक रूप से सम्मोहित अवस्था में कोई कष्ट, दर्द या पीड़ा अपनी अनुभूति नहीं देती है। सम्मोहन द्वारा स्वयं ही अपने आप कोई अनुभूति चाहे भली हो या बुरी स्वतः जागृत नहीं होतीं। इसके विपरीत रूप में प्रयोग कर्त्ता ही सर्वेसर्वा बन जाता है वह चाहे तो बिना किसी दर्द या पीड़ा के अपने माध्यम में भयंकर पीड़ा की अनुभूति जगा सकता हैं उसे दर्द का अनुभव करा सकता है और चाहे तो शरीर के किसी स्थान से घाव, फोड़े या चोट के दर्द को दबाकर उसकी अनुभूति से पूर्णतया मुक्त रख सकता हैं। अपने माध्यम के चिंतन, अनुभव, अनुभूति तथा इच्छाओं को भी प्रयोग कर्त्ता अपने आधीन कर लेता है।

यह स्थिति प्रयोग सिद्ध अनुभूत तथ्य है। यह सिद्धांत के आधार पर सम्मोहन विद्या का सहयोग विज्ञान ने अपनाया है। अब हिपनोटिज्म द्वारा जो तरह-तरह के रोगों का उपचार हो रहा है वह सब इसी सिद्धांत की करामात है। आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले से सम्मोहन द्वारा छोटे आपरेशनों में पीड़ा निवारण के प्रयोग शुरू हो गये थे। दाँत के दर्द जैसी छोटी पर पीड़ादायक, कष्टदायक बीमारियों में सम्मोहन अपनाने का तरीका अब काफी पुराना होकर सफल प्रयोग सिद्ध हो चुका है। अब तो सम्मोहन द्वारा पीड़ा मुक्त सफल प्रसव कराये जाने लगे हैं बिना दर्द का एहसास कराये दाँत उखाड़े जाने लगे हैं।

इतना ही नहीं इटली, अमरीका इत्यादि देशों में सम्मोहन द्वारा बड़े आपरेशनों में भी असाधारण महत्वपूर्ण योगदान लिया गया। सम्मोहन द्वारा शरीर को सफलतापूर्वक संज्ञा शून्य किया जाने लगा है। चिकित्सा के क्षेत्र में प्रयोग सिद्ध होते ही सम्मोहन विद्या के प्रति रुचि और विश्वास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बल-मिलना शुरू हो गया था। अब बड़े आपरेशनों में ईथर और क्लोरोफार्म की जगह सम्मोहन द्वारा संज्ञा शून्यता और बेहोश किये जाने का तरीका प्रयुक्त हो रहा है।

अच्छे चिकित्सक प्रत्यक्षत: और अप्रत्यक्ष रूप से सम्मोहन का अपने चिकित्सा कार्यों में प्रयोग करने हैं। पश्चिम में तो यह प्रयोग काफी बढ़-चढ़ चुका है तथा सम्मोहन विद्या चिकित्सा की अनेक पद्धतियों की अविभाज्य सहयोगी बन चुकी है। अब हम इसे स्पष्ट कर रहे हैं। समान रूप से योग्य डाक्टरों के एक ही जैसे ईलाज का एक जैसे मरीजों पर अलग-अलग प्रभाव देखने में आया है। इसका कारण इस प्रकार है कि कौन डाक्टर अपने मरीज को कितना आशाबादी बना लेता है अपनी बातों से प्रभावित कर लेता है। डाक्टर द्वारा कही गई बातों का जितना गहरा प्रभाव किसी रोटी पर पड़ता है उतना गहरा प्रभाव किसी दूसरे का नहीं। क्योंकि पहले से जाग्रत आस्था स्वत: ही इसमें असाधारण वृद्धि कर देती है। एक सफल डाक्टर गहरा आशावादी, गम्भीर साहसी और भारी धैर्यवान होता है।

असाध्य से असाध्य रोगी को जब वह मुस्कुराकर हँसकर वजनदार शब्दों में विश्बास दिलाता है कि वह ठीक हो जायेगा तो वास्तव में डाक्टर के आश्वासन का रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर गहरा अनुकूल असर होता है। यह जो कहा गया है कि "दवा से ज्यादा असर दुआ में होता है" वह इसी कारण से कहा गया है।

जब कोई चिकित्सक जोरदार प्रभावशाली ढंग से अपने मरीज से कहता है कि अब उसे दवा से अच्छा फायदा हो रहा है उसका स्वास्थ्य सुधर रहा है तो वास्तव में डाक्टर की बातों से रोगी पर गहरा अनुकूल मानसिक असर होता है उसे शक्ति स्फूर्ति प्राप्त होती है। कभी-कभी तो अनेकों असाध्य रोगी इसी प्रकार डाक्टर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा आश्वासनों के बल पर मौत के द्वार से लौटते देखे गये हैं। डाक्टर द्वारा रोगी पर डाला गया गहरा मानसिक प्रभाव एक प्रकार के ओज, उर्जा और शक्ति का संचार करता है। इसका बड़ा ही प्रभावशाली असर होता हैं।

"सम्मोहन और मेस्मरेजम में स्थिति भिन्नता"

मेस्मरेजम के प्रयोगकर्त्ता अपने पात्र कों कृत्रिम निन्द्रा में सुलाने के लिए अपने हाथों द्वारा पास करते हैं। मेस्मरेजम विद्या के स्थापक- अबि-ष्कारक डा. मेस्मोंर हैं इनका जन्म आज से दो ढाई सौ वर्ष पूर्व वियना में हुआ था। डा. मेस्मोर ने अपने प्रयोंगों द्वारा सिद्ध कर इस सिद्धांत को मान्यता दी थी कि एक प्रयोगकर्त्ता अपने शरीर का तेज दूसरे व्यक्ति के शरीर में पहुँचाकर उसे प्रभावित कर सकता है। डा. मेस्मोर के इसी सिद्धान्त कों आधार बनाकर मेस्मेरिजम काम करता है। इसमें प्रयोंगकर्त्ता पात्र कों कृत्रिम निन्द्रा मैं लाने के लिए अपने हाथों से 'पास' करता है। इसके पीछे उनकी मान्यता है कि 'पास' देने वाले प्रयोंगकर्त्ता का तेज माध्यम के तेज को प्रभावित कर उसे मोह निंद्रा में ले आता है।

मेस्मरेजम में मन अपना प्रभाव शरीर पर डालता है अर्थात् मन शरीर कों प्रभावित करता है इसके विपरीत सम्मोहन में सम्मोहन निंद्रा लाने के लिए शरीर मन कों प्रभावित करता है मेस्मरेजम तथा सम्मोहन में इस सैद्धांतिक अन्तर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से अन्तर हैं। विज्ञान ने अभी तक मेस्मरेजम के ओज या तेज प्रत्यावर्त्तन के सिद्धांत कों मान्यता नही दी है। बहुत से वैज्ञानिकों ने इस ओज हस्तांतरण की प्रक्रिया को अस्वीकार करने के साथ ही मेस्मरेजम को भी एक विद्या के रूप में मान्यता नहीं दी है।

लेकिन वैज्ञानिकों का वह वर्ग जिसने मेस्मेरिजम कों मान्यता नहीं दी है। सम्मोहन विद्या को फिर भी स्वीकारता और मानता है। मेस्मे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिजम को न मानने वाले वैज्ञानिक विद्या की शक्ति और वैज्ञानिक मान्यता को स्वीकारते हैं। वे सम्मोहन के प्रयोगकर्त्ता के सम्मोहन संबंधी सिद्धांत की प्रयोग सिद्ध स्थिति को स्वीकार करते हैं।

वैज्ञानिकों की इस प्रकार – सम्मोहन विद्या को सर्व सम्मत मान्यता का कारण – इसकी गणितीय व्याख्या समीक्षा, वैज्ञानिक विवेचना और सबसे बढ़कर अनुभूत व्ययाकता है।

सम्मोहन शास्त्र के विषय में उसके सभी स्वरूपों की—एक स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के बाद हम जब इसके—संम्पूर्ण सैद्धांन्तिक कलवेर को समझ चुके हैं तो अब यह आवश्यक स्थिति है कि—इसके प्रयोगगात्मक स्वरूप का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय।

इस प्रकार सम्मोंहन शात्र की इस प्रयोगात्मक शिक्षा को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि—इस विषय का पहले से सैद्धाँन्ति अध्ययन कर लिया जाय। सम्मोहन शास्त्र का पूर्ण रूप से सैद्धांन्तिक ज्ञान प्राप्त करना इसके प्रयोगात्मक अध्ययन की एक आवश्यक शर्त है।

अधूरा या अरस्ट सभी क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी दुखदायी है। विषय का विषद ज्ञान प्राप्त करने के लिये समर्थ पुस्तकों का सहारा लेना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७ | प्रयोगात्मक सम्मोहन शास्त्र

सम्मोहन विद्या को सैद्धाँत रूप से समझ लेने से बाद जब आप इसके प्रयोग जानकारियों से अवगत होता जरूरी है।

"प्रयोगपूर्व की सावधानियाँ"

सम्मोहन के प्रयोग अत्यन्त धैर्य पूर्वक और सावधानी से शांत और एकाग्र होकर करें।

प्रयोग करने की स्थिति में—सम्मोहन कर्त्ता और सम्मोहित होने वाले पात्र का मन एकाग्र हो, दोनों का एक-दूसरे पर ध्यान केन्द्रित रहना चाहिए।

सम्मोहन के प्रयोग क्रमबद्ध रूप में किये जाने चाहिये—प्रथम प्रयोगात्मक परीक्षण करना चाहिए। पहले प्रयोग की सफलता के बाद दूसरा प्रयोग करें फिर तीसरा···इसी प्रकार प्रयोगों को क्रमबद्ध रूप से करें तभी क्रमशः प्रयोगों में सफलता और दक्षता प्राप्त होगी। ऐसा नहीं करें कि—पहले के बाद तीसरा प्रयोग करने लगें।

बच्चों, स्त्रियों अथवा अल्पवयस्कों को माध्यम बनाकर प्रयोग करते समय उनके माता-पिता या अभिभाहक संरक्षक को भी वहाँ मौजूद रक्खें।

हिपनाटिक नींद में दिये गये आदेश निर्देश नींद से जागने के पहले खत्मकर दिये जाएँ। उन आदेशों को बना रहने दें या समाप्त न करें जिन्हें कि आप माध्यम के स्थायी भाव बनाना चाहते हैं तथा जो उसके लिए लाभदायक हैं।

जब आप अपने माध्यम को सम्मोहन निंद्रा से जाग्रत कर लें तभी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसकी जाग्रत अवस्था से पूर्ण आश्वस्त और संतुष्ट होकर उसे विदा करें।

ध्यान देने की बात है कि पात्र की प्रथम मोहनिंद्रा ही समस्या है। कभी-कभी प्रथम प्रयोग में सही सम्मोहन निंद्रा नहीं आ पाती है केवल थोड़ी तंत्रा आती है। लेकिन दूसरे तीसरे प्रयोग में सफलता आ जाती है। वह आदेश निर्देश ग्रहण कर पालन करने लगता है। एतएव इस बाधा की स्थिति को समझ लें।

सम्मोहन निंद्रा में आप अपने माध्यम को कभी भी उसकी भावनाओं इच्छाओं, विश्वासों तथा आस्थाओं के विपरीत आदेश न दें। यह आवश्यक है।

कोई व्यक्ति किसी अभीष्ट को लेकर आपका माध्यम बने तो आप स्वयं उचित अनुचित का निर्णय कर लें। आशा तो बँधायें लेकिन एकदम दावा कदापि न करें। यह स्थिति रोग, मुक्ति, व्यापार सफलता, घरेलू मामलों इत्यादि में खड़ी हो सकती है।

सम्मोहन द्वारा माध्यम को किसी अस्थायी लाभ या सुविधा से जोड़ते समय ऐसा मत होने दें कि विवश निर्भरता की स्थिति आये। बल्कि पात्र में निर्देश को स्थायी भाव बनाकर आत्म-निर्भरता उत्पन्न की जाय।

सम्मोहन के प्रयोग के लिए उपयुक्त पात्र का चुनाव करना चाहिए। शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ या कमजोर व्यक्ति को माध्यम नहीं बनाना चाहिए।

सम्मोहन निंद्रा का रचनात्मक और नैतिक प्रयोग उपयोग करें इसे अपराध या स्वार्थ का माध्यम न बनने दें। सभी व्यक्ति सम्मोहन के लिए अच्छे माध्यम नहीं है। इसके लिए सरल हृदय, भावुक, एकाग्रचित्त, स्वस्थ अनुशासित माध्यम ही उपयोगी है। सम्मोहन कर्त्ता को भी दृढ़

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आत्म-विश्वासी, प्रयोग दक्ष और समर्थ दृढ़ इच्छा शक्ति वाला होना जरूरी है। माध्यम और प्रयोग कर्त्ता की एकात्मता ही प्रयोग सफलता की जरूरीं शर्त है।

ध्यान देने की बात हैं कि- सम्मोहन निंद्रा के प्रयोगो में सफलता और दक्षता प्राप्त करने के लिए एकाग्र मन से धैर्य पूर्वक साधना और अभ्यास करने की जरुरत है। यह सोचना भारी भूल है—कि आप झैसे ही प्रयोंग क़रेंगे सफल हो जायेंगे। इसके लिए निरंतर साधना कीं जरूरत है अभ्यास करते रहना होगा।

अपना आत्म-बिश्वास अडिग और अभेद्य बनाना होगा।

प्रयोगों द्वारा अपने आपको संतुष्ट करना होगा कि आप सफल सम्मोहन कर्त्ता बन सकते हैं या नहीं। किसी भी माध्यम को हिपनाटिक निंद्रा में ला सकते हैं या नहीं।

केवल प्रथम बार सम्मोहित करना ही समस्या है एक बार पात्र को सफल रूप से सम्मोंहित करने के बाद अभ्यास द्वारा यह कुशलता बढ़ाई जाती है।

सम्मोहन की मान्य सफल विधि—पात्र को सम्मोंहित करने की पद्धतियों पर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है। यहाँ हम पात्र को सम्मोहित करने की फेस्सीनेशन पद्धति की ही चर्चा करेंगे क्योंकि यही चिकित्सकों, वैज्ञानिकों तथा मनोवैज्ञानिकों द्वारा मान्य पद्धति है। इसकी मान्यता है कि सम्मोहनकर्त्ता जब अपने माध्यम को हाथ से पास देता है तो उसके हाथ से गतिशील अदृश्य किरणों के रूप में प्रवाहित होने वाली विद्युतीय या चुम्बकीव शक्ति का प्रभाव माध्यम पर परावर्तित होकर अपना प्रभाव उत्पन्न करता है। जिसके फलस्वरुप माध्यम को सम्मोहन निद्रा आने लगती है। इसके साथ ही सम्मोहन कर्त्ता के निर्देश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्हें नींद आने लगी है । माध्यम के तंत्रिका तंत्र और माँसपेशियों को प्रभावित करने लगते हैं इस सबके सम्मिलित प्रभाववश माध्यम को सम्मोहन निद्रा आने लगती है । इसे ही (Fascination) की पद्धति माना जाता है। लेकिन अनेकों वैज्ञानिकों ने इसे भी मान्यता नहीं दी है । फिर भी सम्मोहन विज्ञान की मान्य स्थिति के साथ ,फेस्सीनेशन पद्धति से सम्मोहन ही मान्य विधि है ।

माध्यम को हिपनोटाइज्ज (सम्मोहन) करने की पद्धति

कोई भी हिपोटिस्ट यानी सम्मोहन कर्त्ता अपने मीडियम (माध्यम) को हिपनोटाइज करने के पहले यह देख परखकर जाँच ले कि माध्यम बनने वाले व्यक्ति को सम्मोहन पर आस्था है या नहीं। यदि उसे इस विद्या पर विश्वास होगा तो उसकी अपने हिपनोटिस्ट पर आस्था होगी दोनों में तालमेल और एकात्मता स्थापित करने में सहजता होगी हिपतो-टिस्ट ऐसे मीडियम को सफलता पूर्वक हिपनोटाइज कर सकेगा ।

यदि मीडियम को अपने सम्मोहन कर्त्ता के प्रति कोई अबिश्वास होगा या शंका होगी तो वह सफल रूप से सम्मोहित नहीं हो पायगा। इसलिए माध्यम में हिपनोटिस्ट और हिपनोटिज्म के प्रति सभी शंका अवि श्वासों को समाप्त कर देना चाहिये ।

सम्मोहन कर्त्ता के लिये ऐसी दशा को सफल रूप में निपटाना जरुरी है । एतएव वह अपने माध्यम को सम्मोहित करने के पहले उससे बात-चीत करके अपने प्रति आर्कषित कर के आश्वस्त कर ले । उसकी सारी शंकाएँ, झिझक और अविश्वास समाप्त कर दे ।

पात्र को सम्मोहित करने के पूर्व की यह तैयारी और तत्वरता मीडियम और हिपनोटिस्ट दोनों के लिये उपयोगी और आवश्यक है। इससे प्रयोगों की सफलता पूर्ण सफल और उपयोगी बन जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मोहित करने की विधि—हिपनोटिस्ट जिस माध्यम को हिपनोटाइज (सम्मोहित) करने जा रहा हो पहले उसकी पात्रता से संतुष्ट हो जाय फिर एक आराम देह गद्देदार ऐसी कुर्सी पर बिठादे जो पूर्ण आरामदायक हो जिस पर बैठने में कोई असुविधा न हो कष्ट न हो। यदि कमरे में प्रकाश व्यवस्था हो या रोशनी का इन्तजाम करना हो तो इसकी स्थिति हमेशा ऐसी हो कि उसकी रोशनी पात्र की तरफ से पीछे आये। मीडियम (पात्र) को डायरेक्टर हीट या लाइट में नहीं रहने दें। आँखों के सामने कोई बाधक स्थिति न हो।

इसके बाद पेन टार्च, क्रिस्टलबाल या और कोइ चमकीली चीज अपने हाथ में लेकर सम्मोहित किये जाने वाले माध्यम की आँखों से दस या बारह इंच की दूरी पर सीधी रेखा में सर की ऊँचाई से कुछ ऊँची हालत में रक्खे। इसके बाद माध्यम को आदेश दें कि वह उसे एकटक होकर देखता रहे अपनी दृष्टि को उसी पर केंद्रित रक्खे और हटने न दे।

इसके बाद उसे सम्मोहन के शाब्दिक निर्देश देकर उसे सम्मोहन निद्रा में लाने का प्रयास करे।

अपको इस कार्य में एक ही बार सफलता नहीं मिल जायगी बल्कि बार-बार प्रयास करना होगा।

सम्मोहन के निर्देश हल्के मीठे स्वर में दृढ़ और आश्वस्त ढंग से दिये जाने चाहिये।

हिपनोटिस्ट अपने आदेश धीरे-धीरे ठहर-ठहर कर स्पष्ट शब्दों में स्पष्ट करे।

पात्र को एक निर्देश देने के बाद कुछ देर ठहर जाय फिर उस निर्देश को दो बार पुनः निर्देश को फिर दोहरायें। इसका कारण यह है कि बार-बार दोहराये जाने पर निर्देश माध्यम के मन में (अवचेतन) अपना स्थायी स्थान बना लेते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पात्र को निर्देश देने के लिये, नीचे के उदाहरण में कुछ वाक्यों के द्वारा इस कार्य की परिणति दर्शायी गई है।

आप अपने माध्यम को इन्हीं शब्दों में या इनसे मिलते जुलते शब्दों से निर्देश दे सकते हैं। आप सुविधानुसार शब्द विन्यास अपना सकते हैं।

प्रयोग—हिपनोटिस्ट अपने माध्यम से कहे मेरे हाथ में जो वस्तु है उसे ध्यान से एकटक देखते रहो। हाथ में क्रिस्टलबाल, पेन लाइट या कोई चमकीली वस्तु हो सकती है। माध्यम को इसे एक टक देखने के बाद कुछ देर में अनुभव होने लगेगा कि विचित्र प्रकार का, आनन्द वर्धक भारी पन उसके शरीर और मस्तिष्क को जकड़ रहा है अपनी गिरफ्त में ले रहा है···इस भारीपन के साथ ही गहरी चैन की मीठी नींद आने लगेगी···अब आप अपने शरीर के प्रत्येक अवयव को, प्रत्येक माँस पेशी को 'Relax' रिलेक्स करना शुरु कर दें···ज्यादा से ज्यादा ढीला छोड़े···सांस·····धीरे-धीरें·····ठहर-ठहर कर ले और गहन श्वांस लें···मेरे आदेश और स्वर पर पूर्ण ध्यान दें···मेरे मुंह से निकलने वाला प्रत्येक शब्द आपको·· गहरी, मीठी, आनंददायक निद्रा में में ले जायगा···आप पर नींद का दवाव बढ़ता जायगा···अपना शरीर एकदम ढीला पूर्णरुप से ढीला छोड़ दें···आपकी जांघें, पिंडलियां और टांगें भारी होती जा रही हैं···आपकी दोनों बाहें भी भारी से भारी हो रही है···आपकी आंखो में पानी आने लगा है··· आंखें भीं भारी होने लगी हैं···अपकी पलकें शीघ्र खुलने लगी है अब तुम्हें अपनी·····अपनी आंखों को खुला रखने में कष्ट हो रहा है। मेरे हाथ में जो चमकदार वस्तु है उस पर दृष्टि एकाग्र रखना आपके लिये कठिन हो रहा है·····।मेरे स्वर और आदेश पर ध्यान केंद्रित रखिये·····'·आपकी आंखें और मस्तिष्क थकान का एहसास·····करने लगे हैं···अब·····

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपनी आखें मूंद कर गहन निद्र में लीन होना चाहते हैं आपके आँखें बंद करते ही आपको गहन सम्मोहन निद्रा आने लगेगी लेकिन आप मेरे आदेश सुनते रहेंगे।

जैसे ही मै एक से तीन तक की गिनती पूरी करुँगा वैसे ही आपकी पलकें झपक जायेंगी। आँखें खोले रखना……इस हालत में असंभव होगा।

…जैसे ही मैं गिनकर तीन तक की गिनती पूरी करुंगा वैसे ही आप गहरी सम्मोहन निद्रा में निमग्न हो जायेंगे

उदाहरण—'एक' (कुछ रुककर)…अपका संम्पूर्ण शरीर बहुत भारी होने लगा है…और निद्रावस्था में आता चला जा रहा है

'दो' (हिपनोटिस्ट एकदम धीरे-धीरे बोले)…तुम्हारा सरभारी होकर थकता जा रहा है तुम्हारा सर…वहुत भारी हो चुका है…पलकें झपकने लगी हैं—आप अपनी आँखें मूंदकर गहन निद्रा में लीन हो जाना चाहते हैं…।

.'तीन' (हिपनोटिस्ट आदेशात्मक स्वर में बोले)…अपनी आँखें वंद कर लो …और गहरी मीठी नींद में सो जाओ। …एकदम गहरी… सघन निद्रा तुम्हे खूब गहरी-गहरीं नींद जकड़ने लगेगी…।

हिपनोटिस्ट अपने मीडियम से कहे अब तुम सो गये हो गहन सम्मोहन निद्रा में लीन हो गये हो याद रक्खो, तुम उस समय तक नहीं जाग सकते हो जब तक कि मैं तुम्हें जागने के लिये आदेश नहीं दूंगा।

इस प्रकार माध्यम को आदेश देने में सम्मोहन कर्त्ता देखेगा कि पात्र कुछ पलों तक तो पलकें झपका कर नीद हटाने की कोशिश करेगा फिर फौरन सम्मोहन निद्रा में आकर कुर्सी पर पसर जायगा आँखें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
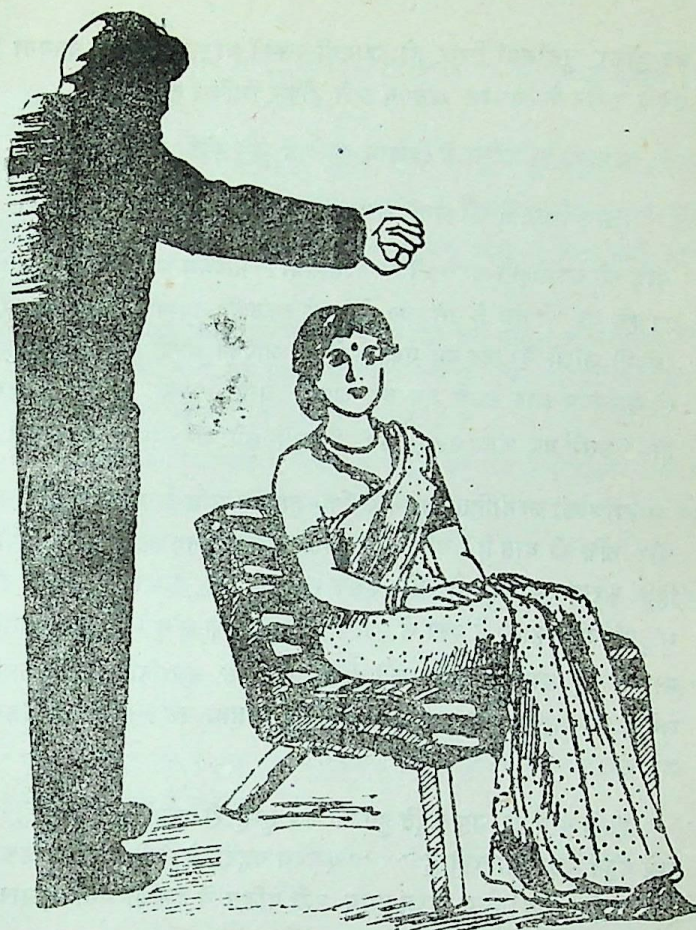
चित्र नं. 1 हिप्नोटिस्ट क्रिस्टल बाल द्वारा माध्यम को आदेश देते हुए ।

चित्र शीर्षक—पात्र को क्रिस्टल बाल दिखाकर सम्मोहित किया जा रहा है। चित्र में पात्र के बैठने का आरामदायक स्थिति दर्शायी गयी है। सम्मोहक (हिपनाटिस्ट) अपने हाथ में क्रिस्टल बाल लेकर माध्यम को आदेश दे रहा है। कि वह उसके हाथ की बाल पर दृष्टि एकाग्र करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंद होकर पुतलियाँ स्थिर हो जायगीं पलकों का झपकना रुक जायगा। उसके शरीर के समस्त अवयव ढीले होकर शिथिल हो जायेंगे।

पात्र को इसी दशा में विश्राम करने दें उसे कोई आदेश न दें।

(आप क्रिस्टल की जगह अन्य वस्तु का भी प्रयोग कर सकते हैं।)

पात्र को सम्मोहित करने की अन्य विधियाँ — माध्यम को सम्मोहित करने का एक यह भी ढंग है उसे कुछ देर तक टकटकी लगाकर देखने को कहें (अपनी आँखों में) जब वह एकाग्र होकर आपकी आँखों में झाँक रहा हो तो उससमय आप उसके मन को अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से एकाग्र होकर उसमें यह भाव उत्पन्न करें कि उसे शनैः शनैः निद्रा आ रही है।

पात्र को सम्मोहित करने के लिए हाथ से पास देना आपकी सुविधा और रुचि की बात है। यदि आप मीडियम को बिना पास दिये सम्मोहित करना चाहते हो तो उसके नजदीक बैठ कर उसके हाथ कीं मुट्ठियाँ अपने हाथों में दबा लें उसके और आपके अँगूठें परस्पर आमने सामने रहें थोड़ी देर में उसकी आँखें नींद से प्रभावित होकर फैलने लगेंगी तब आपके कुछ पलों के बाद अपने हाथ उसके हाथों से अलग कर लें।

इसके साथ ही यह कहते हुए कि अब तुम्हारी पलकें मूँद रही हैं··· तुम्हें गहन निद्रा आ रही है·········एकदम गहरी बेहोशी की नींद जकड़ है·····। (इत्यादि) जिस तरह प्रथम रही पद्धित में दर्शाया गया है बाकी आदेश वैसे ही दिये जाँय।

अन्य प्रयोग पद्धतियाँ—इसके बाद कई तरह से जाँच कर अच्छी तरह परखाना चाहिये कि पात्र को सम्मोहन निद्रा आ गयी है या नहीं कभी-कभी कुछ लोग केवल नींद का दिखावा करते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कभी-कभी पात्र सम्मोहन निद्रा की बनिस्पत गहरी स्वाभाविक नींद में आ जाता है।

हिपनोटिस्ट को सम्मोहन निद्रा और वास्तविक निद्रा के भेद को जानना जरुरी है। सम्मोहन निदा में पात्र का ध्यान और लगाव अपने सम्मोहक से लगा रहता है लेकिन स्वाभाविक निद्रा में ऐसा नहीं होता है।

यदि माध्यम सम्मोहन कर्त्ता के आदेशों का पालन न-कर रहा हो, प्रश्नों के उत्तर न दे रहा हो तो समझना चाहिये कि माध्यम सम्मोहन निद्रा से हटकर स्वाभनविक नींद में आ गया है।

माध्यम के सम्मोहन में निद्रा आ जाने पर जब हिपनोटिस्ट उसका परीक्षण करना है तो उससे पात्र के सम्मोहन निद्रा के स्तर की स्थिति का भी पता चल जाता हैं।

ध्यान देने की बात है कि पात्र के सम्मोहन निंद्रा स्तर को समझने के जो भी प्रयोग किये जॉय।

उन सभी प्रयोंग परीक्षणों में प्रत्येक जाँच पड़ताल के बाद पात्र की सम्मोहन निद्रा को और सघन करने के लिये पात्र को उसी प्रकार के निर्देश निरंतर देते रहना चाहिये जिस तरह के निर्देश प्रथम परीक्षण की समाप्ति पर बताये गये है।

अपने सम्मोहित माध्यम को आप जो भी निर्देश दें उनका एक खास लहंजा होना चाहिये।

आप अपने निर्देश इस प्रकार स्पष्ट शब्दो में ऐसे ढंग से दें जैसे कि आप किसी जाग्रत चैतन्य व्यक्ति को निर्देश दे रहे हैं।

अब हम पात्र को प्रत्येक प्रयोग परीक्षण में दिये जाने वाले आदेशात्मक बाक्यों और निर्देश को प्रस्तुत कर रहे हैं। इन्हें ध्यान से समझें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम प्रयोगात्मक प्रशिक्षण

सम्मोहन कर्त्ता माध्यम से आपने अपने पूरे शरीर को ढीली हालत में छोड़ रक्खा है। (कुछ ठहर कर) एकदम ढीला शरीर···आपका शरीर पूर्ण शिथिल है पूर्ण रूप से ढीला है।

····आप गहन निद्रा में सोये हुए हैं आपकी ·पलकें गहरी नींद से भारी हैं। आपकी पलकें नींद से इतनी ····बोझिल और भारी हैं कि आप अपनी आंखें तब तक नहीं खोल सकते हैं ····जब तक कि मैं आपसे अपनी आँखें खोलने के लिये न कहूं···· अपकी पलकें नींद के बोझ से दबी हुई हैं जब तक मैं न कहूँ····आप आंखें खोल ही नहीं सकते हैं··आप अपनी आंखें खोंलने कीं जितनी ज्यादा से ज्यादा कोशिश करेंगे··उतना ही अधिक कठिन और मुश्किल यह काम हों जायगा।

···मेरी बात एकदम सच है····आप अपनी आंखें खोलते की कोशिश कीजिये खूब कोंशिश कीजिये··लेकिन आपके लिये अपनी आंखों की पलकें एक दूसरे के साथ···पूरी तरह से···भारी नींद के कारण··मिलकर ····जुड़ी हुई हैं आपके लिये अपनी आँखों की पलकें पूरी मजबूती से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं···'(इस अवस्था में सम्मोहित पात्र पूरे प्रयास से अपनी आँखें खोलने कीं चेष्टा करता है। आंखें खोंलने के प्रयास में में असफल होने पर वह अनुभव करता है कि आँखें खोलना उसके लिये संभव नहीं है तव वह आंखें खोलने का प्रयास करना बन्द कर देगा। इस दशा से हिपनोटिस्ट यानी सम्मोहन कर्त्ता कों आगे बतायें गये निर्देशों द्वारा सम्मोंहित पात्र की सम्मोहन निद्रा कों और गहन और सघन करना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिपनोटिस्ट यानी सम्मोंहन कर्त्ता को साफ आदेशात्मक स्वर में अपना आदेश दुहराना चाहिये।....अब आप खूब गहरी नींद में सोयेगे
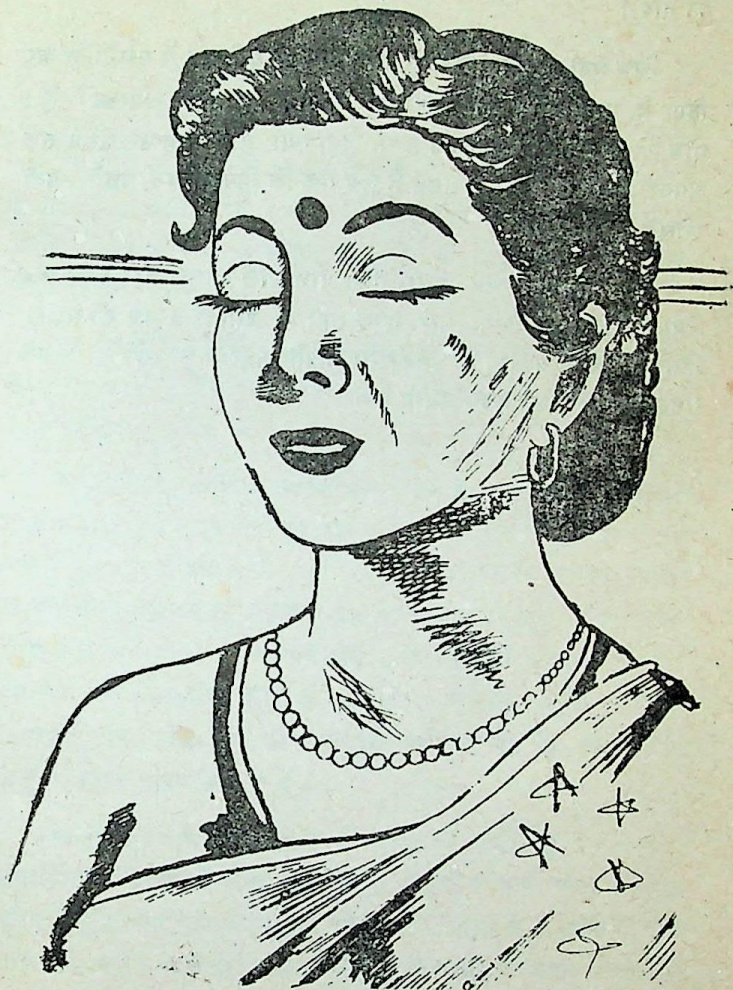
चित्र शीर्षक—गहन निद्रा का—नेत्रों पर प्रयोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

....एकदम गहरी नीद ....प्रगाढ़ नींद....गहरी नींद ....बेफिक्री और अन की नींद ।

चित्र मुद्रा—हिपनोटिस्ट ने जपने पात्र को पूर्ण रूप से सम्मोहित कर दिया है, पात्र सम्मोहन कर दिया है, पात्र सम्मोहित अवस्था में है। पात्र को निर्देश देकर अनुभव करा दिया गया है कि वह उस समय तक अपनी आँखें खोलने में असमर्थ है जब तक कि हिपनोटिस्ट उससे अपनी खोलने को न कहे ।

उपर दिये गये चित्र में सम्मोहित पात्र आँखें खोलने का प्रसास कर रहा है लेकिन वह अपनी आँखें खोल नहीं पा रसा है । पात्र को सम्मो. हित करने के लिये अर्थात् उसकी सम्मोहित अवस्था के स्तर को जानने समझने के लिये यह प्रथम प्रयोग है.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा परीक्षण प्रयोग

हिपनोंटिस्ट जब पहले बताया गय। गहन निद्रा का निर्देंश अपने सफल निर्देशन द्वारा पात्र के मन मस्तिक को आत्मसात करा देगा तो उर्पयुक्त निर्देशन दिये जाने पर सम्मोंहित पात्र और भी निद्रा में गहन सम्मोहन निद्रा में डूब जायगा।

पात्र के गहन सम्मोहन निद्रा वशीभूत होंने पर उसे परीक्षण प्रयोग के द्वितीय चरण में नीचे दिये शब्दों द्वारा सम्मोंहन निर्देंशन देना शुरू कर देना चाहिए।

हिपनोंटिस्ट, स्पष्ट, आदेशात्मक स्वर में, गहन गम्भीर प्रभाव उत्पन्न करते हुए अपने पात्र को आदेश दें····अब तुम अपना ध्यान पूर्ण रूप से मुझ पर केंद्रित करों··-हां अपने मन कों एकदम एकाग्र कर मेरे आदेश के आधीन कर लो। मेरे आदेश का अक्षरशः पालन करों····साव-धान तैयार हों जाओ··और अपने दोनों हाथों को अपने हृदय के सामने ले आओं।··अब अपने दोनों हाथों की उंगलियों कों एक दूसरे में परस्पर फँसालो''·यह निदेंश पात्र को वार-बार तब तक देंते रहे जब तक कि वह इसे सफल परिणति न दे दें।

सम्मोहित पात्र जब अपने दोनों हाथों की उंगलियों को परस्पर फँसाले यानी कि, उसके दोंनों हाथों की उंगलियाँ पर स्वर फँसकर अच्छी तरह से गुंथ जाये तो अपने पात्र को अग्रिम स्थिति में ले जाने के लिये नीचे दिये तरीके से निर्देश दिया जाय·· हिपनोटिस्ट अपने सम्मोहित पात्र को कहे····अब तुम्हारे दोनों हाथ पूरी तरह से मजबूती से एक दूसरे से चिपक कर आपस में गुंथ गये हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

…तुम इन्हें अलग करने का प्रयास करो पर यह अलग नही हो सकते हैं…दोनों हाथ आपस में गुँथ कर पुरी…तरह से चिपक गये हैं… फँसकर एक हो गये हैं…आप चाहे जितनी कोशिश करें, ये अलग नहीं हो सकते हैं…आपके…दोनों हाथ…तभी अलग हो सकते हैं जबकि मैं इन्हें अलग होने का आदेश दूँ ।…तुम्हारें हाथ एक दूसरे से फँसकर पूरी तरह जुड़े हैं… तुम इन्हें अलग करने की कोशिश करो यह अलग नहीं हो रहे हैं केवल मेरा आदेस इन्हें अलग कर सकता है।

अब पात्र अपने दोनों फँसे हाथों को पूर्ण प्रयास से अलग करने की कोशिश कररेगा। लेकिन उसके दोनों जुड़े हाथ अलग हो ही नहीं पायेंगे पात्र जब अपने दोनों फँसे हाथों को अलग करने में असफल हो जाय तो उसे आगे निर्देश दें।

हिपनोटिस्ट पात्र से कहे मैं जोर से मेज पर दस्तक दूँगा …- मेरी इस दस्तक का प्रभाव तुम्हारे दोनों जुड़े हाथों को अलग कर देगा। तुम अपना ध्यान मेरी दस्तक पर केन्द्रित करो…जैसे ही मेरी दस्तक सुनो वैसे ही फौरन अपने दोनों हाथों को एक दूसरे से अलग कर लो…और गहन निद्रा में लीन हो जाओ… गहरी मीठी नींद में सो जाओ। इस आदेश के साथ हिपनोटिस्ट जोर से मेज पर दस्तक दे।

चित्र मुद्रा—सम्मोहन का यह द्वितीय परीक्षण प्रयोग पात्र के सम्मोहित स्तर को जाँचने के लिए उसके हाथों पर किया गया परीक्षण प्रयोग है। इसमें हिपनोटिस्ट अपने हिपनोटाइज्ड मीडियम (सम्मोहित माध्यम) को पहले उसके दोनों हाथों को आपस मेंउँगलियाँ गुथाँ कर फँसा लेने का निर्देश देता है। पात्र से कहा जाता है कि वह अपने दोनों हाथों की उँगलियों को परस्पर गुँथा कर फँसाले इसी के साथ यह भी निर्देश किया जाता है कि दोनों हाथों को गुँथा कर फँसा लेने के बाद माध्यम इन्हें तब तक अलगकर ने में असमर्थ है जब तक कि हिपनोटिस्ट आदेश न दे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्रं नं. 3 माध्यम के हाथ पर किया गया प्रयोग ।

(ऊपर का चित्र इसी भंगिमा और स्थिति को स्पष्ट कर रहा है। माध्यम की बंद आँखें अपने फँसे हाथों पर हैं वह उन्हें अलग करने की पूरी चेष्टा कर रहा है।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीय परीक्षण प्रयोग

सम्मोहन के द्वितीय परीक्षण प्रयोग की सफलता के बाद द्वितीय परीक्षण प्रयोग अपनाया जाय। इसमें हिपनोटिस्ट अपने माध्यम से कहे.....सावधान...अपना ध्यान मुझ पर केंद्रित करो...तैयार हो जाओ...ध्यान दो...मैं तुम्हारे दोनों हाथों को तुम्हारे हृदय प्रदेश के चारों तरफ घुमाना शुरु कर दूंगा... इसका तुम पर यह प्रभाव होगा कि पुर्ण गहन निद्रा में लीन हो जाओगे...(हिपनोटिस्ट यह कहने के साथ ही अपने माध्यम के हाथों को लेकर घुमाना जारी कर दे धीरे-धीरे हाथों को घुमाने की गति तीव्र करके फिर अपने सम्मोहित पात्र को निर्देश दे)...अब तुम ही अपने हाथों को इसी तरह घुमाते रहो (जब माध्यम ऐसा करने लगे तो उसके कुछ देर तक घुमाते रहने के बाद हिपनोटिस्ट उससे फिर कहे) ....अब तुम अपने दोनों हाथों को इसी तरह से घुमाते रहोगे...घुमाते रहोगे...और तुम तब तक अपने हाथ इसी तरह से घुमाते रहोगे जब तक कि मैं तुम्हें रुकने का आदेस नहीं दूंगा...तुम्हारे हाथ इसी तरह घूमते रहेंगे....घूमते रहेंगे....तुम्हरे हाथों का घूमना केवल मेरा आदेश रोंक सकता है तुम कोशिश करो अपने घूमते हाथों को रोकने की पूरी कोशिश करो... तुम अपने हाथों को रोक ही नहीं पा रहें हो...तुम पूरी चेष्टा कर रहे हैं ...वे तुम्हारे रोके नहीं रुक रहे हैं...अपने घूमते हाथों को रोक पाना तुम्हें असंभव लग रहा है। अब तुम्हें विश्वास हो गया है कि अपने घूमते हाथों को रोक पाना तुम्हारे वश में नहीं है। (सम्मोहित पात्र की इस अवस्था की सफल स्थिति से संतुष्ट होकर अब यदि हिपनोटिस्ट उससे माध्यम का हाथ घुमाना रोकना चाहे तो उससे वह कहे)...सावधान, ध्यान दो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

…मैं जोर से मेज पर दस्तक दूँगा…मेरा दस्तक सुनते ही तुम अपने हाथों का घूमाना वंद कर दोगे।…मेरी दस्तक पर…तुम्हारे हाथों का घूमना फौरन बंद हों जायगा…(यह कहने के साथ ही मेज पर जोर से दस्तक देकर हिपनोटिस्ट पात्र से कहे… अब तुम अपने हाथों का घूमना रोक सकते हो… फौरन रोक सकते हो…(यस, रेडी; स्टाप)…हाँ तैयार हों जाओ…रोक दो…हाथों का घुमाना फौरन रोंक दों…एकदम बंद…गहन निद्रा में लीन हो जाओ…गहरी मीठी चैन की नींद में डूब जाओ…।

विशेष—सम्मोहन की तृतीय अवस्था तक की स्थिति प्राप्त कर लेने के बाद पात्र को प्रतीक स्तर पर (on the Signal standard) उसे सम्मोहनोत्तर निर्देश अर्थात् सम्मोहन की प्रतीकात्मक स्थिति को अनुभव कर अपना लेने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। वह सम्मोहनोत्तर निर्देशों को पालन करने और ग्रहण करने लगता है। यदि उसे पूर्व समाहित किसी प्रतीकात्मक आदेश से जोड़ा जाता है या सम्मोहित कर बुलाया जाता है तो इसी प्रतीक आदेश से प्रेरित होकर उसमें हाथों को घुमाते रहने की प्रबल कामना उत्पन्न हो जायगी वह तक अपने हाथों को घुमाता रहेगा जब तक कि हिपनोटिस्ट उसे रुकने का आदेश नहीं देगा। इस स्थिति का सफल निर्वाह ही तृतीय प्रयोग तक की सफल स्थिति का द्योतक है।

चित्र मुद्रा—नीचे दिये गये चित्र में माध्यम इसी के सम्मोहनोत्तर निर्देश का जाग्रत अवस्था में पालन कर रहा है।

माध्यम द्वारा सम्मोहनोत्तर निर्देश सफलता पूर्वक ग्रहण कर पालन करने की क्षमता प्राप्त करने के लिये, इस प्रयोग का तब तक परीक्षण प्रयोग करते रहना जरूरी है जब तक कि माध्यम सम्मोहनोत्तर निर्देश ग्रहण कर पालन करने की पूर्ण क्षमता अर्जित न कर ले। नीचे चित्र में माध्यम को सम्मोहनोत्तर निर्देश दिया गया था कि सम्मोहन से जाग्रत होने पर जैसे उससे 'स्टार्ट' कहा जायगा वैसे ही उसमें अपने हाथों को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्र नं.' 4 तीसरा प्रयोग

घुमाने की वेचैनी पैदा हो जायगी वह तब तक नहीं रुकेगा जब तक कि हिपटिस्ट उससे रुकने को नहीं कहेगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ परीक्षण प्रयोग

हिपनोटिस्ट अपने हिपनोटाइन्ड (सम्मोहन) मीडियम से कहे हाँ तैयार हो जाओ···सावधान। अब हिपनोटिस्ट अपने सम्मोहन माध्यम को कुर्सी पर बिठाकर उसके दाहिने या बाँयें को जमीन से उपर उठाकर कमर की सीध में ले आये बाँया पैर यथावत् जमीन पर रहे फिर दाहिने पैर को फैलाकर कमर की सीध में ले आये और उसका पैर पकड़ कर (कमर के लेविल में) सामने सीधा फैला दे। इसके बाद वह माध्यम को निर्देश दे··· आपका पैर आपके घुटने के मोड़ पर से कड़ा होता जा रहा····इसमें सख्ती और अकड़न आती जा रही है····इस वजह से आप अपने पैर को घुटने पर से मोड़ नहीं सकते हैं···अब आपका यह पैर अकड़कर काठ के तख्ते की तरह कठोर होता जा रहा है····जिस समय मैं एक दो, तींन बोल कर ····की गिनती पूरी करुँगा उस समय तुम्हारे लिये अपने इस पैर को इधर-उधर हिलाना या उपर नीचे उठा-ना-गिराना पूर्णरूप से असंभव हो जायगा। (इसके बाद हिपनोटिस्ट फिर गंम्भीर होकर एक'··दो···तीन बोले) ··एक ··दो···तीन अब तुम्हारा पैर तुम्हारे वश में नहीं है···इसे मोड़ना घुमाना, उठाना या गिराना तुम्हारै लिए एकदम असंभव हो गया है··· तुम अपने पैर को उस समय तक नहीं मोड़ सकते जब तक किया मोड़ने का आदेश न दूँ मैं जैसा आदेश दूँगा वैसे ही यह पालन करेगा,···यह मेरे आदेश का पालन करने को विवश हैं···· यह जो भर नहीं हिलडूल सकता है (इस अवस्था तक की सफल स्थित को प्राप्त करने के बाद यदि सम्मोहक चाहे तो आदेश देकर माध्यम के पैर को मूड़ने या जमीन पर रखने को कहे। वह अपने माध्यम से कहें····) जैसे ही मैं एक-दो-तीन कहूँगा वैसे ही तुम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने पैर को मोड़ लेने और मोड़कर जमीन पर रखने लायक हो जाओगे।

तुम्हारा पैर फिर अपनी सामान्य दशा में आ जायगा।

...यस रेडी (हां तैयार)...एक...दो...तीन...अब आपका पैर सामान्य अवस्था में आ गया है इसे मोड़ कर आप आराम से जमीन पर रख सकते हैं...आप अपने पैर मोड़कर जमीन पर रख लीजिये...गहन निद्रा में निमग्द हो जाइये...एकदम चैन की गहरी मीठी नींद...।

चित्र मुद्रा—दिये गये चित्र में सम्मोहन कर्त्ता अपने सम्मोहन पात्र को उसके एक पैर को कमर की सीध तक फैलने का आदेश देता है। माध्यम को यह भी निदश दिया गया हैं कि जव तक हिपोटिस्ट इसे आदेश देकर मुक्त नहीं करेगा तब तक वह अपने इस पैर कोमोड़कर जमीन पर नही रख सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पांचवां परीक्षण

हिपनोटिस्ट (माध्यम से) सावधान जब तक मैं एक··दो···तीन तक की गिनती पूरी करुँगा···तब तक तुम्हारा दाहिना पैर (अथवा बायाँ) स्पर्श शून्य हो जायगा···तब उस दशा में तुम्हारे हाथ में सुई चुभाने या चाकू भोकने पर भी कोई दर्द नही होगा।

···अब तुम्हारा पूरा पैर स्पर्श शून्य हो गया है पंजे से लेकर घुटने तक और घुटने से लेकर कमर के जोड़ तक अपनी संवेदन शीलता खो चुका है। तुम्हारे पैर की स्पर्श संज्ञा समाप्त है इसमें पीड़ा अनुभव करने की संवेदनशीलता नहीं है।

एक··दो··तीन··तुम्हारा पैर पूर्ण रूप से अब संज्ञा शून्य हो गया है इसकी स्पर्श चेतना और संवेदनशीलता समाप्त हो गयी है···अब तुम्हारे इस पैर में कोई स्पर्श अनुभुति ग्रहण करने की शक्ति नहीं है।

हिपनोटिस्ट अब माध्यम के पैर या हाथ में चिकोटी काटे आलपीन चुवाये उसे हिलाये डुलाये यह न तो टस से मस होगा और न इसमें दर्द का एहसास ही होगा।

ऊपर की दशा से संतुष्ट होने के बाद अब यदि हिपनोटिस्ट चाहे तो माध्यम का पैर सामान्य दशा में आ जाए उसकी स्पर्श चेतना लौट आये इसके लिये वह माध्यम से बोले सावधान···जब तक मैं एक···दो तीन तक की गिनती पूरी करुँगा··तब तक तुम्हारे पैर में विद्यमान स्पर्श शून्यता दूर हो जायगी···तब उस दशा में···तुम्हारा पैर फिर से पहले जैसा हो जायगा···इसमें चेतना लौट आयगी।···एक··दो··तीन अब तुम्हारे पैर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में पंजे से लेकर घुटने तक और घुटने से लेकर कमर तक इसकी संवेदन शालता लौट आयी है यह फ़िर से संवेदन शील और स्वाभाविक हो गया है।
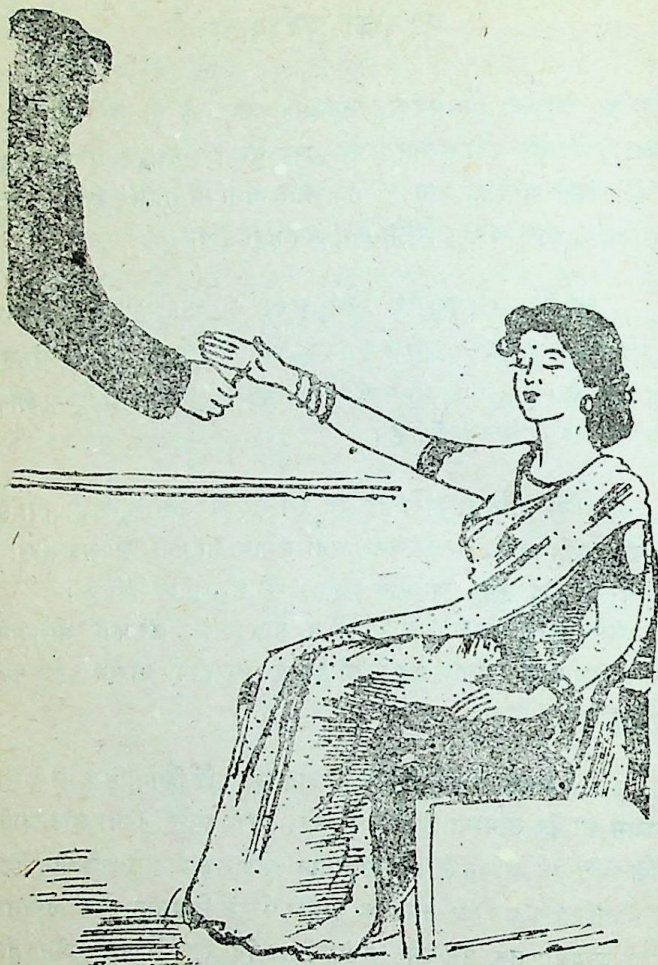
चित्र शीर्षक—पांचवां प्रयोग परीक्षण स्पर्श शून्यता का परीक्षण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग विवरण—आपने यह जो स्पर्श शून्यता का पाँचवाँ प्रयोग किया है। इसका बहुत पहले से व्यावसायिक प्रयोग भी प्रचलित है। बहुत से शल्य चिकित्सक और दूत चिकित्सक दाँत उखाड़ने तथा चीर फाड़ में इस पाँचवें प्रयोग की टेकनीक का इस्तेमाल करते हैं। इसके द्वारा वे अपने रोगों की अनुभूति समाप्त कर देते हैं। उसके अस्पष्ट और अकारण भय का निवारण कर देते हैं।

जब भी कोई हिप्नोटिस्ट अपने माध्यम पर यह पांचवां प्रयोग कर उस दशा में वह प्रयोग की प्रमाणिकता मापने के लिए माध्यम के पैरे में अबाध जिस अंग को वह स्पर्श शून्य करे उसे सुई भोंक कर अवश्य परख ले। इससे वह प्रयोग की सफलता के प्रश्न पर आश्वस्त और संतुष्ट हो जायगा। क्योंकि कि यदि वास्तव में माध्यम सम्मोहित नहीं हुआ होगा तो इस जाँच में असलियत का फौरन पता चल-जायगा।

चित्र मुद्रा—हिपोटिस्ट ने माध्यम के पैर अथवा हाथ को स्पर्श शून्यता का परी क्षण करने के लिये, उसके हाथ में चिकोटी काट कर आलपीन चुभा कर परीक्षण की सफलता जाँच रहा है। माध्यम को स्पर्श और पीड़ा की कोई अनुभूमि नहीं हो रही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छठवां परीक्षण

आपने **पाँचवाँ प्रयोग**—सम्मोहन द्वारा कर्मेन्द्रिय शून्यता (पैर या हाथ) का किया था। अब यह छठवाँ परीक्षण सम्मोहन द्वारा पात्र की ज्ञानेंद्रिय शून्यता का है।

हमारे हाथ- पैर हमारी कर्मेन्द्रियाँ हैं। इसी तरह हमारे आँख, नाक कान इत्यदि हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। हमारी कर्मेन्द्रियाँ की संवेदन शीलता से ज्ञानेन्द्रियों की संवेदन शीलता कहीं अधिक है अतएव ज्ञानेद्रिय सम्मोहन निश्चय ही कर्मेंद्रिन्य सम्मोहन से कुछ अधिक ऊँचे स्तर का है। इसके साथ ही विशेष बात यह भी है कि ज्ञानेन्द्रिय सम्मोहन से संम्भावनाओं की नयी-नयी उपलाब्धिया भी जोड़ी जा सकती है सलन यह कि आप पात्र की ज्ञानेद्रिया को सम्मोहन कर उससे उसके और भविष्य की संभवनाओं की जानकारी, अतीत का लेखा जोखा, इत्यादि भी जाना जा सकता है। इस छठवें प्रयोग परीक्षण में हम पात्र की ज्ञानेंद्रिय (नाक) जो कि श्राणेन्द्रिय भी है, उसे सम्मोहन द्वारा परावर्त्तित करने ओर जड़ करने का प्रयोग स्पिरिट की बोतल के माध्यम से कर रहे हैं।

हिपनोटिस्ट अपने माध्यम पर इस स्पिरिट की बोतल के द्वारा छठवाँ परीक्षण कर रहा है। स्पिरिट की गंध लगातार सूँघते रहना संभव नहीं है कि क्योंकि इससे नाक में झनझनाहट होने लगती है किसी-किसी का सर दर्द करने लगता है। स्पिरिट की गंध-तेज,तड़क और बेचैनी पैदा करने वाली होती है।

हिपनोटिस्ट अपने हाथ में स्पिरिट की बोतल लेकर पात्र से इस प्रकार कहेगा जब तक मैं एक···दो···तीन तक की गिनती पूरी करूँगा··· तक तक तुम्हें इस बोतल में से···जिसे कि मैं आपकी नाक के आगे खुला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रखूँगा ·आपको इसमें केवड़े के इत्र की मन भावक मोहक सुगंन्ध सूँघने को मिलेगी।

आप इस मादक सुगंन्ध से मस्त और प्रसन्न हो जायेंगे···और इस मादक सुगंध का अनुभव आप मुझे बतायेंगे कि यह कितनी मादक और मनभावन है।

सावधान···एक··· दो···तीन··· अब तुम्हारी नाक के सामने····मेरी बोतल है···इसमें केवड़े के इत्र की मादक सुगंन्ध आ····रही है···क्या तुम्हे भी केवड़े के इत्र की खुशबू आ····

अब हिपनॉटिस्ट मीडियम की नाक के आगे स्पिरिट की बोतल खोल कर रखे उसके चेहरे की भंगिमाओं को गौर से देखे अगर माध्यम स्पिरिट की बोतल नाक के आगे रखने पर मुंह बिचकाये या चेहरा हटा ले तो समझना चाहिये कि मीडियम अभीष्ट रूप से सम्मोहित नहीं हुआ है। जबकि वह ऐसा नहीं करे तो समझना चाहिये कि सम्मोहित हो चुका है।

हिपनोटिस्ट अपने मीडियम को सम्मोहित करने के इस स्तर तक पहुंचा कर अन्य अनेकों परीक्षणों द्वारा यह जान सकता है कि वास्तव में पात्र सम्मोहित हुआ है या नहीं।

इस प्रकार के अनेकों प्रयोगात्मक परीक्षण हैं यथा विस्मृत घटनाओं का पुर्न स्मरण कराना, पात्र में विभ्रम (मतिभ्रम) उत्पन्न कर देना, पात्र को निर्देश देकर उसकी वर्त्तमान आयु से एक या दो दशक पूर्व की आयु में उसे लेजाना तथा तद्नुरुप किया कलाप हाव भाव की उत्पत्ति इत्यादि इस प्रकार के इन परीक्षणों द्वारा मनोरंजन होनें के साथ ही रोचक जानकारियां भी प्राप्त होती हैं साथ ही साथ यह भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पता चल जाता है कि सम्मोहित पात्र सम्मोहन के किस स्तर तक पहुंच गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्र शीर्षक—छठवाँ परीक्षण ज्ञाणेन्द्रिय सम्मोहन प्रयोग चित्र मुद्रा हिपनोटिस्ट में अपनें मीडियम को आदेश दे रक्खे थे कि हिपनोटिक नींद से जागने पर मेज पर रक्खी स्पिरिट की बोतल को सूंघेगा तब सूंघने पर उसे स्पिरिट की गंध नहीं आयगी बल्कि उसे इसमें केवड़े के इत्र की सुगंध आयगी।

जबकि इसके विपरीत इसमें तेज, चरपरी, बेचैन करने वाली स्पिरिट भरी है लेकिन माध्यम को इससें केवड़े के इत्र की खुखबू आ रही है।

प्रयोगों की वैज्ञानिक समीक्षा।

अब हम अपने इन प्रयोग परीक्षणों की प्रमाणिकता को वैज्ञानिक दृष्टि कोण से समीक्षा करें। पात्र पर जों सम्मोंहन निद्रा आरोपित की जाती है वह पात्र को किस तरह प्रभावित करती है।

जिस कमरे में प्रयोग किये जाये प्रकाश व्यवस्था पात्र के पीछे हो यह पहले ही बताया जा चुका है।

अब इस स्थिति में जब हिपनोटिस्ट अपने हाथ में क्रिस्टल बॉल या पेन लाइट लेकर पात्र की आंखों के सामनें करता है और उससे अपलक देखने को कहता है तो उस समय कमरे का बल्व भी इस पर अपना प्रकाश डाल कर इसे और चमकीला कर देता है यदि लाइट या क्रिस्टल बॉल न मिले तो यह प्रयोग जलती मोमबत्ती से भी किया जा सकता है।

केवल किसी वस्तु को अपलक देखमे से ही मनुष्य की पलकें भारी हो जाती हैं। यहां तो वस्तु को अपलक देखना है जाहिर है आखों के थकने पर पलकें भारी हो ही जायगी, मस्तिक पर जोर पड़ेगा थकावट आ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जायगी फिर हिपनोटिस्ट प्रभावशाली गंभीर स्वर में कहेगा 'तुम्हारी पलकें भारी हो रही हैं नींद से बोझिल हो रहीं है हिपनोटिस्ट के येवाक्य पात्र पर पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। हिपनोटिस्ट के इन वाक्यों में विशेष शक्ति आ जाती है।

पात्र स्वतः अनुभव करने लगता है—कि हिपनोटिस्ट के निर्देशों में विशेष प्रभावशक्ति है जिसके कारण उसकी पलकें बोझिल हो रही हैं। उस समय पात्र यह समझ नहीं पाता है कि यह भारीपन शरीर विज्ञान की अपनी गति है जोकि थकावट का ही परिणाम है।

इस सारी स्थिति से माध्यम ऐसा प्रभावित होता है कि हिपनोटिस्ट के प्रति उसमें एक नया विश्वास और आदर उत्पन्न हो जाता है। इस स्थिति का लाभ भी हिपनोटिस्ट को प्राप्त होता है—उसके लिये आगे की स्थिति और अनुकूल हो जाती है—तब मीडियम उसके आदेशों को और भी गहरे विश्वास से ग्रहण कर पालन करने लगता है। अब हिपनोटिस्ट अपने मीडियम को आदेशात्मक ढंग से कहता है तुम्हारी आँखों की पलकें बहुत भारी हो चुकी हैं, आँखें पूरी तरह थक चुकी हैं—अब तुम इन्हें बंद कर गहरी नींद मे सोना चाहते हो।

इस दशा में यह विचारणीय स्थिति है कि माध्यम भारी हुई पलकों को अवश्य ही बंद करेगा, इस दशा में जब ऐसा ही निर्देश हिपनोटिस्ट भी देगा तो दोहरे प्रभाववश पात्र को स्वभावतः ही निद्रा तंद्रा आ जाती है।

सम्मोहन प्रयोग असफल होने पर

हिपनोटिस्ट को जब यह अनुभव हो कि--उसका प्रथम प्रयोग असफल हो गया है तो उसे फिर अगला परीक्षण नहीं करना चाहिये। हम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहले ही लिख चुके हैं कि परीक्षण स्टेज-वाइज यानी क्रमशः किये जाने चाहिये। पहले के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा। किसी प्रयोग के असफल होने पर उससे अगला प्रयोग रोक दिया जाना चाहिये तथा सम्मोहक अपने निर्देशों द्वारा पात्र की सम्मोहन निद्रा को और गहरा करे।

अगर प्रथम प्रयास में पात्र सम्मोहित न हो तो उसकी बाधक स्थितियों को समझकर दूर करना चाहिये। माध्यम से भी पूछना चाहिये कि किस वजह से उसे सम्मोहन निद्रा नहीं आयी। इस सारी छानबीन में बाधक स्थिति का अवश्य पता चल जायेगा तब उसे दूर कर देना चाहिये। सम्मोहन विद्या और सम्मोहक के प्रति अविश्वास या शंका होने के कारण भी पात्र सम्मोहित नहीं हो पाता है यह रुकावट भी दूर की जा सकती है।

सम्मोहन के प्रयोग में यदि पात्र जल्दी-जल्दी अपनी पलकें झपकाने लगे तो जानना चाहिसे कि उस पर सम्मोहन का असर होने लगा है इस स्थिति में हिपनोटिस्ट को चाहिये कि वह दृढ़ और प्रभावशाली ढंग से अपने माध्यम को --निद्रा आने का निर्देश दे। वास्तव में यह स्थिति सम्मोहन निद्रा को गहन करती है।

कुल मिलाकर हिपनोटिस्ट का अपना प्रभाव, प्रयोग के लिये उपयुक्त स्थिति का श्रजन और प्रभावशाली शब्द निर्देश ही सम्मोहन निद्रा के मुख्य आधार भूत तत्व हैं। स्थिति की पूर्ण अनुकूलता और सटीक प्रयास ही सफलता देते हैं।

"अन्य प्रभावशाली साधन" हिपनीडिस्क, स्पायरल या शक्तिचक्र

माध्यम को सम्मोहित करने का एक अन्य प्रभावशाली साधन-स्पायरल है। इसके आविष्कारक प्रसिद्ध अमरीकी मनोवैज्ञानिक मेलविन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पावर्स है उन्होंने इसे अपने नाम से ही इसे पावर्स-हिपनोडिक्स या स्पायरल का नाम दिया है। इसे 'शक्तिचक्र' या सम्मोहन चक्र के नाम से हिन्दी में जाना जाता हैं।
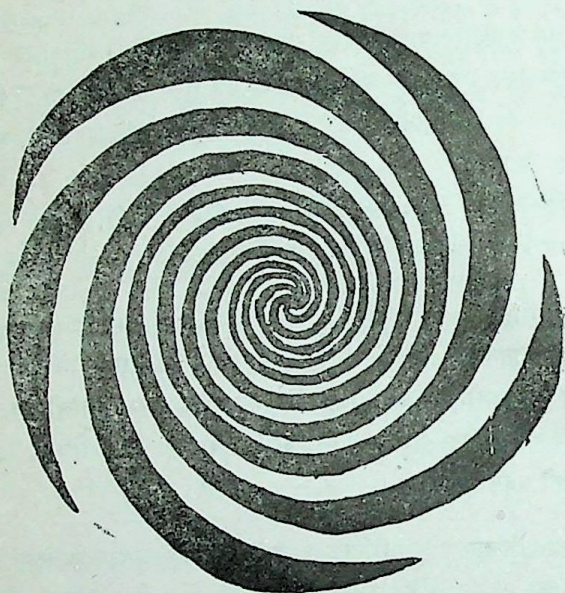
चित्र नं. 7 शक्ति चक्र

यह शक्ति चक्र या स्पायरल—बारह इंच व्यास का होता है तथा सफेद गत्तें पर बना होता है। इसे कैंची से ग्रामोफोन के रेकार्ड की गोलाई के आकार का काटकर, इसके केन्द्र में एक छोटा-सा छिद्र इस आकार का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया जाता है कि इसे ग्रामोफोन के चक्कर काटते रिकार्ड के पिन से रिकार्ड प्लेट के ऊपर ठीक रिकार्ड की तरह फिट कर दिया जाये। फिर इस शक्ति-चक्र को रिकार्ड की जगह फिट करके ग्रामोफोन खड़ा करके रख दिया जाता है। जिससे कि यह माध्यम के सामने निरंतर गतिशील यानी घूमती हुई हालत में रहता है।

माध्यम जब इस पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करता है तो इसे इसमें विचित्र प्रतीकों एवं आकृतियों का आभास होता है।

घूमते शक्तिचक्र पर दृष्टि केन्द्रित करने के कारण आँखें थक जाना स्वाभाविक है—उसे घूमता शक्ति-चक्र अपनी तरफ खीचता-सा महसूस होता है। अब तक उसकी आँखें थककर भारी हो चुकी होती हैं।

इसी क्रम में उसे हिपनोटिस्ट के निर्देश भी मिलते हैं इनका सम्मिलित परिणाम यह होता है कि--पात्र को नींद आने लगती है वह सम्मोहन की गहन निद्रा अथवा निद्राचारिता की स्थिति में पहुंच जाता हैं। माध्यम को सम्मोहित करने का यह एक प्रभावशाली माध्यम है। इसके द्वारा कुछ पात्र तो अत्यन्त शीघ्र सम्मोहित हो जाते हैं।

इस शक्तिचक्र का प्रयोग इसी प्रकार मंच पर रखकर अनेकों दर्शकों को सम्मोहित करने के लिये भी किया जाता है। इस प्रकार यह सामूहिक सम्मोहन का भी प्रभावशाली माध्यम है।

इसके साथ एक मनोवैज्ञानिक तथ्य यह भी जुड़ा है कि — इसे देखने वाले के मन में यह भाव आ जाता है कि यह शक्ति-चक्र उसे ही सम्मोहित करने के लिए यहाँ रखा गया है। इस विचार की प्रेरणा सहित जब वे शक्ति-चक्र को देखते हैं—तो शीघ्र ही सम्मोहन निद्रा के वशीभूत होकर गहन-निद्रा में लीन हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हम पहले ही विस्तार से स्पष्ट लिख चुके है कि केवल प्रथम सम्मोहन में मुश्किल आ जाती है। किसी भी नये पात्र को बार-2 सम्मोहित करने में मुश्किल होती है। लेकिन एक बार सम्मोहित होने के बाद वह फिर सरलता से सम्मोहित होने लगता है।

इसका कारण सम्मोहनोत्तर निर्देश हैं।

सम्मोहनोत्तर निर्देश—हिपनोटिस्ट 'पात्र' को सम्मोहनोत्तर निर्देश गहरी या हल्की सभी प्रकार की सम्मोहन निद्रा में दे सकता हैं। सम्मोहनोत्तर निर्देश इस प्रकार की भाषा में दिये जा सकते हैं शब्दावली यही या इससे मिलती-जुलती प्रयोग की जा सकती हैं।

"जब भी मैं तुम्हारे सामने एक से लेकर तीन तक की गिनती पूरी करूंगा तुम फौरन आँखें बंद करके शाँत-गहन सम्मोहन निद्रा में लीन हो जाओगे।

कभी-कभी सम्मोहनोत्तर निर्देशों का प्रभाव पात्र पर कई माह तक बना रहता है इसका कारण उसके मन का सम्मोहक से जुड़ जाना है। सम्मोहनोत्तर निर्देश गहन संवेदनशील प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

जब भी हिपनोटिस्ट अपने पूर्व सम्मोहित पात्र के सामने एक से लेकर तीन तक की गिनती गिनेगा वह फौरन ही सम्मोहित हो जायेगा। इससे शीघ्र सम्मोहित करने की सुविधा मिल जाती है पात्र को सरलता और शीघ्रता से सम्मोहित कर लिया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि एक बार सम्मोहित हो चुकने के बाद पात्र की शंकाएं और भय हट जाते हैं उसका सीधा लगाव अपने सम्मोहक से हो जाता है।

वास्तव में सम्मोहनोत्तर निर्देश वही है कि—पात्र सम्मोहन निद्रा से जागने पर उनका पालन करने लगता है। समर्थ हिपनोटिस्ट अपने शक्तिशाली सम्मोहनोत्तर निर्देशों द्वारा माध्यम की बुरी आदतें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और लतें छुड़ा देते हैं। इससे माध्यम का स्वभाव और आदतें ही नही बल्कि उसके व्यक्तित्व तक को इच्छानुसार बदला या संशोधित किया जा सकता है।

पात्र को सम्मोहन निद्रा से जगाना—वास्तव में देखा जाय तो सचाई यह हैं कि पात्र को सम्मोहन निद्रा से जगाना कोई बड़ी समस्या नहीं है। कुछ लोग यह सोचते हैं कि कहीं इसमें कोई खतरा या संकट तो नही है। वास्तव में ऐसी कोई बात नहीं है।

सम्मोहन निद्रा में पात्र का अपने मन, शरीर, चेतना और बुद्धि पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है। यह तो पहले ही कहा जा चुका हैं कि सम्मोहन निद्रा असली नींद नहीं है।

सम्मोहन कर्त्ता जगाने के निर्देश अपने पात्र को न दे पाये तो भी पात्र किसी तेज आवाज से, सम्पर्क टूटने के कारण भी जग जाता है। फिर भी किसी पात्र तो संमोहन निद्रा से जगाने के लिये हाथ से पास दिया जा सकता है। उसके मुंह पर ठन्डी सांसें छोड़ी जा सकती हैं अथवा तीव्र प्रकाश चेहरे के सामने करने से वह जग जाग्रत हो सकता है।

पात्र को जगाने के लिये—उससे इतना कहना भी काफी है—'अपनी आँखें खोलो और जाग जाओ' इसकी वजह यह है कि हिपनोटिक नींद लाने से पहले पात्र से यह कहा गया था कि—तुम तब तक आँखें नहीं खोल सकते हो जब तक कि मैं इसका आदेश न दूं।

यदि पूर्व वर्णित संमोहित पात्र न जागे तो संमोहन कर्त्ता अपने अंगूठे की पोरों से पात्र की पलकों को रब करके (मलकर) उसे जगादें और फौरन जागने की आदेशात्मक भाषा में आदेश दें।

कभी-कभी सम्मोहित पात्र से पूछ कर उसके जागने का तरीका अपनाया जाता है। जब किसी को किसी निश्चित अवधि के लिये सम्मो-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हित किया जाता है तों वह निश्चित समय पूरा होने पर पात्र स्वयं जाग्रत हो जाता है। सम्मोहन कर्त्ता से माध्यम का सम्बन्ध भंग होने पर वह जाग्रत हो जाता है स्वाभाविक स्थिति सदैव प्रभावी होती है लेकिन अपवादों की स्थिति में पूर्ण वर्णित तरीकों से सम्मोहित पात्र को जगा दिया जाता है। सम्मोहन निद्रा से जगाना कोई बड़ी समस्या नहीं है और न इसका कोई दुष्प्रभाव ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८ | आत्म सम्मोहन

पहले ही लिखा जा चुका है कि सम्मोहन विद्या कोई जादू या चमत्कार न होकर एक पूर्ण वैज्ञानिक विद्या है

यह योग की ही एक प्रारंभिक अवस्था है। सम्मोहन विद्या में आत्म सम्मोहन को महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त है। बल्कि यह कहा जाय कि आत्म सम्मोहन वास्तव में सम्मोहन की आत्मा है तो अतियोक्ति न होगी।

वैसे आत्म सम्मोहन स्वतंत्र स्थिति और विषय है इसे योग विद्या और सम्मोहन विद्या दोनों से ही जोड़ा जा सकता है सर्वेक्षित रूप में आत्म सम्मोहत का जो व्यक्तित्व बनता है वह काफी हद तक हठयोग वैसा है।

भारत में इस आत्मसम्मोहन की एक अनादिकालीन परंपरा रही है। हठयोग का आत्मतत्व आत्म संमोहन है और आत्म संमोहन का आत्म तत्व हठयोग है।

योगियों, संतो, महात्माओ और सूफियों के चमत्कारों का ऊर्जा केन्द्र यहीं आत्म संमोहन रहा है।

शारीरिक मानसिक क्षमताओं के अमाननीय, आसाधरण प्रस्तुतीकरण का प्रस्तोता यही आत्म संमोहन है।

आत्म संमोहन की साधना परंपरा लगभग सभी धर्मों में सनातन काल से विद्यमान है। इस आत्म संमोहन की शक्ति से मनुष्य महान् शक्तियों का स्वामी हो जाता है। आत्म संमोहन की यह असाधारण विशे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(चित्र मुद्रा पलंग पर आँखें बंदकर शाँत मुद्रा में सीधे चित्त लेटा हुआ व्यक्ति)

इसके बाद स्वयं को सम्बोधित कर मन ही मन कहे—मैं अपने शरीर को ढीला कर रहा हूँ···शिथिल कर रहा हूं···एकदम ढीला एकदम शिथिल। मैं अपने शरीर को इतना अधिक शिथिल कर रहा हूं जितना मैंनें पहले कभी नहीं किया था।

शिथिल शरीर···ढीला··एकदम ढीला···। इस प्रकार शरीर कों शिथिल करते हुए—अपने ध्यान को सर्वप्रथम पैरों की अंगुलियों और पैरों पर केन्द्रित करें और अनुभव करें कि ये अंग ढीले शिथिल होते जा रहे हैं। अब आगे बढ़ें—इसी तरह अपना ध्यान अपने पैरों पर केन्द्रित करें और स्वयं को सम्बोधित करते हुए कहें—मेरे पैर पूर्णतया शिथिल हो गये हैं। इसी तरह जांघों, कटि प्रदेश, आमाशय को शिथिल करते जाइये—और स्वयं से कहिये मेरा अंग···शिथिल से शिथिल होता जा रहा हैं···इनका तनाव समाप्त हो रहा···ये स्पर्श ज्ञान शून्य हो रहे है। इससे आगे बढ़कर अब आप इसी तरह अपने स्कंध, चेहरे की माँसपेशियों तथा सर के ऊपरी भाग तक पहुंच जाएं तथा पूर्व वर्णित विधि से प्रत्येक अवयव को शिथिल करते जाएं इसके बाद इसी यथावत् स्थिति में आप अनुभव कीजिए—आपका समस्त शरीर शिथिल से शिथिल हो रहा है। इस समय आपको यदि आवश्यकता हों तो। पावर्स स्पायरल (जिसका हम पहले वर्णन कर चुके हैं) लेकर उसे किसी मजबूत डोर या धागे से अपनी आँखों से कुछ ऊंचाई पर एक फुट की दूरी पर लटका लें। अगर शरीर को शिथिल करने के करने के क्रम में इस पर दृष्टि केन्द्रित रखी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाय हो शीघ्र निद्रा आ जाती है। ध्यान रहे कि इस सारे कार्य में आपका मन यथावत् एकाग्र बना रहे।

जब नींद आने लगेगी तो ऐसा अनुभव होगा कि आप गहन जल राशि में निमज्जित होते जा रहे हैं। इस अवस्था में अचेतन मन एकदम साफ और विचार शून्य हो जाता है। इसे स्पष्ट और सटीक निर्देश दिये जा सकते हैं। आप मन को आत्म निर्देश देकर अब पूर्ण विश्राम करें। आपकी यह विश्राम निद्रा कुछ मिनटों अथवा घंटों तक रहेगी—जाग्रत होने पर मन में नवीन चेतना और स्फूर्ति अनुभव होगी।

'प्रयोग की द्वितीय अवस्था' अन्तर्मन से संवाद—

प्रयोग के इस द्वितीय चरण में अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप स्वयं को निर्धारित तथा संतुलित निर्देश दीजिये। इस समय मन को स्पष्ट, ठोस एवं रचनात्मक आदेश दिये जाएं। इस समय प्रयोग कर्त्ता 'आत्म सम्मोही' को अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक ऐसी समस्या या गुत्थी पर केन्द्रित करना चाहिए जिसे कि निपटाने की तीव्र लालसा उसके मन में हो। अपने विचार किसी ऐसे कार्य क्षेत्र पर भी केन्द्रित किये जा सकते हैं जिसमें आपको सुधार या परिवर्नन लाना हो। इस समय समस्त अवांछित विचारों को अपने से निकाले रहें तथा अपना ध्यान अपने अभीष्ट उद्देश्य पर ही केन्द्रित रक्खें। लेकिन अपने मन को बलात् केन्द्रित भी न करें क्योंकि ऐसा करने से पुनः तनाव की स्थिति आ जाएगी। अपने मन को शांतिपूर्वक सहजता से समस्या पर केन्द्रित करें।

उदाहरण के लिए विचार कीजिए कि—आपमें क्रोध और चिड़-चिड़ापन बहुत है अकारण की उदासी है तथा आप इससे मुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तब इसके लिए नीचे लिखे विचारों को अपने अचेतन मन में स्थापित कीजिए।

मैं क्रोध कदापि नहीं करूंगा…क्रोध आने पर स्वयं को शांत बनाये रक्खूंगा। मेरा चिड़चिड़ापन समाप्त हो जाएगा।…मैं अकारण की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(चित्र मुद्रा पलंग पर आँखें बंदकर शाँत मुद्रा में सीधे चित्त लेटा हुआ व्यक्ति)

इसके बाद स्वयं को सम्बोधित कर मन ही मन कहे—मैं अपने शरीर को ढीला कर रहा हूँ···शिथिल कर रहा हूं···एकदम ढीला एकदम शिथिल। मैं अपने शरीर को इतना अधिक शिथिल कर रहा हूं जितना मैंनें पहले कभी नहीं किया था।

शिथिल शरीर···ढीला·· एकदम ढीला···। इस प्रकार शरीर कों शिथिल करते हुए—अपने ध्यान को सर्वप्रथम पैरों की अंगुलियों और पैरों पर केन्द्रित करें और अनुभव करें कि ये अंग ढीले शिथिल होते जा रहे हैं। अब आगे बढ़ें—इसी तरह अपना ध्यान अपने पैरों पर केन्द्रित करें और स्वयं को सम्बोधित करते हुए कहें—मेरे पैर पूर्णतया शिथिल हो गये हैं। इसी तरह जांघों, कटि प्रदेश, आमाशय को शिथिल करते जाइये—और स्वयं से कहिये मेरा अंग···शिथिल से शिथिल होता जा रहा हैं···इनका तनाव समाप्त हो रहा···ये स्पर्श ज्ञान शून्य हो रहे है। इससे आगे बढ़कर अब आप इसी तरह अपने स्कंध, चेहरे की माँसपेशियों तथा सर के ऊपरी भाग तक पहुंच जाएं तथा पूर्व वर्णित विधि से प्रत्येक अवयव को शिथिल करते जाएं इसके बाद इसी यथावत् स्थिति में आप अनुभव कीजिए—आपका समस्त शरीर शिथिल से शिथिल हो रहा है.। इस समय आपको यदि आवश्यकता हों तो। पावर्स स्पायरल (जिसका हम पहले वर्णन कर चुके हैं) लेकर उसे किसी मजबूत डोर या धागे से अपनी आँखों से कुछ ऊंचाई पर एक फुट की दूरी पर लटका लें। अगर शरीर को शिथिल करने के करने के क्रम में इस पर दृष्टि केन्द्रित रखी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाय हो शीघ्र निद्रा आ जाती है। ध्यान रहे कि इस सारे कार्य में आपका मन यथावत् एकाग्र बना रहे।

जब नींद आने लगेगी तो ऐसा अनुभव होगा कि आप गहन जल राशि में निमज्जित होते जा रहे हैं। इस अवस्था में अचेतन मन एकदम साफ और विचार शून्य हो जाता है। इसे स्पष्ट और सटीक निर्देश दिये जा सकते हैं। आप मन को आत्म निर्देश देकर अब पूर्ण विश्राम करें। आपकी यह विश्राम निंद्रा कुछ मिनटों अथवा घंटों तक रहेगी—जाग्रत होने पर मन में नवीन चेतना और स्फूर्ति अनुभव होगी।

'प्रयोग की द्वितीय अवस्था' अन्तर्मन से संवाद—

प्रयोग के इस द्वितीय चरण में अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप स्वयं को निर्धारित तथा संतुलित निर्देश दीजिये। इस समय मन को स्पष्ट, ठोस एवं रचनात्मक आदेश दिये जाएं। इस समय प्रयोग कर्ता 'आत्म सम्मोही' को अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक ऐसी समस्या या गुत्थी पर केन्द्रित करना चाहिए जिसे कि निपटाने की तीव्र लालसा उसके मन में हो। अपने विचार किसी ऐसे कार्य क्षेत्र पर भी केन्द्रित किये जा सकते हैं जिसमें आपको सुधार या परिवर्तन लाना हो। इस समय समस्त अवांछित विचारों को अपने से निकाले रहें तथा अपना ध्यान अपने अभीष्ट उद्देश्य पर ही केन्द्रित रक्खें। लेकिन अपने मन को बलात् केन्द्रित भी न करें क्योंकि ऐसा करने से पुनः तनाव की स्थिति आ जाएगी। अपने मन को शांतिपूर्वक सहजता से समस्या पर केन्द्रित करें।

उदाहरण के लिए विचार कीजिए कि—आपमें क्रोध और चिड़-चिड़ापन बहुत है अकारण की उदासी है तथा आप इससे मुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तब इसके लिए नीचे लिखे विचारों को अपने अचेतन मन में स्थापित कीजिए।

मैं क्रोध कदापि नहीं करूंगा…क्रोध आने पर स्वयं को शांत बनाये रक्खूंगा। मेरा चिड़चिड़ापन समाप्त हो जाएगा।…मैं अकारण की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदासी नहीं रहने दूंगा इसे दूर करूंगा । मैं प्रसन्न, उत्साही बनूंगा ... मुझमें कोई खराबी, कमी, कमजोरी या दोष नहीं है... प्रसन्न और शांत रहने में पूर्ण रूप से समर्थ हूं...मुझे कोई इस प्रसंग में विचारणीय बात यह है कि आप निर्देशन के मनोनुकूल शब्दावली का स्वयं चयन कर सकते हैं। लेकिन शब्द प्रभावशाली और रचनात्मक विचारों के हों।

प्रयोग की तृतीय अवस्था – आत्म सम्मोहन की स्थिति में स्वयं को आत्म निर्देशन देने के पश्चात् फिर से जाग्रत स्थिति में आने के लिए स्वयं को सम्बोधित कर कहें—मैं सात से शून्य तक की उल्टी गिनती गिनूंगा तथा जब यह गणना मैं पूरी कर लूंगा तो स्वयं को स्वस्थ, प्रसन्न, क्रोध रहित शांत अनुभव करते हुए जाग्रत हो जाऊंगा।

इसके बाद गणना प्रारंभ कीजिए तथा शून्य तक गणना पूरी करने के बाद अपनी आँखें खोल दें ।

आत्म सम्मोहन के अभ्यास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय रात्रि है विशेष कर सोने का समय । इस समय दिनभर के क्रियाकलाप के पश्चात् रात्रि में वैसे ही विश्राम की मनोवृत्ति रहती है अतएव आप शीघ्र शिथिल हो सकते हैं ।

नियमित रूप से 5-10 मिनट के अभ्यास द्वारा पहले अपने अचेतन मन को अपने अनुकूल बनाया जाये । इसके बाद शीघ्र शिथिलावस्था में पहुंचने की क्षमता प्राप्त हो जायेगी ।

रात्रि कालीन अभ्यास क्रम में जाग्रत होने की प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता नहीं है । पूर्ण विश्राम निद्रा ही उचित है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh